India's Leading Institute for becoming an IAS

आकार IAS

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

सामान्य अध्ययन

प्राचीन भारत का इतिहास

द्वारा

डॉ. अंशुल वाजपेयी

For more information Contact us:

: 0522-4044438 : 9519483938, 9935888651, 9129033494

Head Office: B-59, Sec-H, Opp. Axis Bank, Near Puraniya Chauraha, Aliganj, Lucknow

OUR CENTER: ALIGANJ, ALAMBAGH (LKO.) | NOIDA-62 www.aakarias.co.in t.me/AakarCSE aakar.ias.31 aakariaslucknow

सामान्य अध्ययन

प्राचीन भारत का इतिहास

अनुक्रमणिका

- अतीत के अध्ययन हेतु काल-विभाजन 3
- प्रागैतिहासिक काल 3
- हड़प्पा सभ्यता 6
- वैदिक काल 17
- प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन 24
- महाजनपद काल 33
- मगध का उत्कर्ष 34
- मौर्य साम्राज्य 35
- मौर्योत्तर काल 42
- गुप्त काल 49
- गुप्तोत्तर काल.....53
- राजपूत काल (पूर्व मध्यकाल) 54
- दक्षिण भारत 59

AKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

प्राचीन भारत का इतिहास

अतीत के अध्ययन हेतु काल विभाजन

1. **प्रागैतिहासिक काल** - जिस काल का मानव किसी प्रकार की लिपि अथवा लेखन कला से परिचित नहीं था। मानव उत्पत्ति से लेकर लगभग 3000ई.पू. के बीच का समय इसके अन्तर्गत आता है। पाषाण काल एवं ताम्र पाषाण काल का अध्ययन इसी के अन्तर्गत किया जाता है।
2. **आद्यैतिहासिक काल** - जिस काल का मानव किसी न किसी प्रकार की लिपि से परिचित था लेकिन वह लिपि अभी तक पढ़ी न गई हो। हड़प्पा सभ्यता एवं वैदिक सभ्यता का अध्ययन इसी के अन्तर्गत किया जाता है।
3. **ऐतिहासिक काल** - जिस काल का मानव किसी न किसी प्रकार की लिपि से परिचित था और वह लिपि पढ़ी जा चुकी हो अर्थात् मानव के जिन क्रिया-कलापों का हमें लिखित विवरण प्राप्त होता है और वह विवरण पढ़ा जा चुका हो उसे हम इतिहास कहते हैं। 5वीं शताब्दी ई. पू. से लेकर वर्तमान तक का अध्ययन इसी के अन्तर्गत किया जाता है।

प्रागैतिहासिक काल

पाषाण काल

- भारत में सर्वप्रथम 1863 ई. में पाषाण कालीन सभ्यता की खोज की गई।
- राबर्ट ब्रूस फुट (भू-वैज्ञानिक) ने पहला पुरा पाषाण कालीन उपकरण मद्रास के पास पल्लवरम् नामक स्थान से प्राप्त किया था।
- पाषाण काल को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से तीन कालों में विभाजित किया गया है।
  1. पुरा पाषाण काल (5 लाख ई.पू. से 10 हजार ई.पू.)
  2. मध्य पाषाण काल (10 हजार ई.पू. से 4 हजार ई.पू.)
  3. नवपाषाण काल (7 हजार ई.पू. से 1 हजार ई.पू)
- पुरा पाषाण काल को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से पुनः तीन कालों में विभाजित किया गया है

निम्न पुरा पाषाण काल

- इस काल में मानव जीवन अस्थिर था। शिकार करके वह अपना भोजन संग्रह करता था।
- इस काल के उपकरणों में हैंड ऐक्स, चापर-चापिंग एवं पेबुल उपकरण मुख्य थे।
- भारत की निम्न पुरापाषाण कालीन संस्कृति को दो वर्गों में विभाजित किया गया है।

चापर-चापिंग पेबुल संस्कृति

- यह संस्कृति पाकिस्तान के पंजाब में सोहन नदी घाटी में सर्वप्रथम प्रकाश में आयी। अतः इसे सोहन संस्कृति या सोहन उद्योग के नाम से जाना जाता है।

हैंड ऐक्स संस्कृति

- इस संस्कृति का मुख्य उपकरण हैंड ऐक्स है। इसे एश्यूलन संस्कृति के नाम से जाना जाता है।
- इस संस्कृति के उपकरण सर्वप्रथम मद्रास के निकट अत्तिरमपक्कम् से प्राप्त हुए हैं। इसीलिए इसे मद्रासी संस्कृति या मद्रासी उद्योग के नाम से जाना जाता है।

AKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

मध्य पुरापाषाण काल

- इस काल में पत्थर के फलक की सहायता से उपकरणों का निर्माण किया गया।
- अतः इस काल को फलक संस्कृति के नाम से जाना जाता है।
- इस काल में स्क्रेपर (खुरचनी) बेधक, बेधनियां आदि उपकरण बनाये गये।
- गंगाघाटी, असम, सिक्किम एवं केरल को छोड़कर सम्पूर्ण भारत से इस संस्कृति के उपकरण प्राप्त हुए हैं।

उच्च पुरापाषाण काल

- इसी काल में सर्वप्रथम होमोसेपियंस (ज्ञानी मानव) का उदय हुआ।
- इस काल के प्रमुख उपकरणों में तक्षनी, चाकू, स्क्रेपर, बेधक एवं बेधनियां हैं। तक्षनी इस काल का विशिष्ट उपकरण है।
- इलाहाबाद जिले में बेलनघाटी में स्थित लोंहदा से हड्डी की बनी नारी की मूर्ति मिली है।
- इसी काल का मानव पहली बार रहने के लिए गुफाओं का प्रयोग करना प्रारम्भ किया।
- भीमबेटका (म.प्र.) की पहाड़ियों से इस काल की गुफायें प्राप्त हुई हैं जिनका प्रयोग रहने के लिए किया जाता था।
- इसी काल का मानव सर्वप्रथम चित्रकारी करना प्रारम्भ किया। भीमबेटका की गुफाओं से इस काल के बने चित्र प्राप्त होते हैं।

मध्य पाषाण काल

- यह काल पुरापाषाण काल और नव पाषाण काल के मध्य एक संक्रमण काल था। वस्तुतः यह काल नव पाषाण काल का अग्रगामी था।
- इस समय जलवायु गर्म हो गई, अब बर्फ की जगह घास से भरे मैदान उगने प्रारम्भ हो गए।
- इस काल का मानव अब पशुपालन करना भी प्रारम्भ कर दिया।
- मध्य प्रदेश में आदमगढ़ और राजस्थान में बागौर पशुपालन का प्राचीनतम साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं जिसका समय 5000 ई.पू. था।
- मध्य पाषाण कालीन सबसे प्राचीन ज्ञात स्थल सराय नाहर राय, महदहा (प्रतापगढ़) है।
- इस समय पत्थर के उपकरणों में तीर का जो नोक बनाया गया वह इस युग का विशिष्ट उपकरण है जिन्हें सूक्ष्म पाषाण उपकरण (माइक्रोलिथ) कहा गया।
- इस काल के अन्य उपकरणों में इकधार फलक, बेधक बेधनी, चाकू, तक्ष्णी एवं अर्धचन्द्राकार प्रमुख है।
- इसी काल में सर्वप्रथम मानव कंकाल प्राप्त होते हैं।

नव पाषाण काल

- कालक्रम के अनुसार यह युग काफी छोटा है, फिर भी सारे क्रान्तिकारी परिवर्तन इसी युग में हुए हैं।
- विश्व स्तर पर इस संस्कृति का प्रारम्भ 9000 ई.पू. में पश्चिम एशिया में हुआ।
- पश्चिम एशिया के मानव को जौ, गेहूँ, दलहन, तिलहन, आदि के रूप में महत्वपूर्ण खाद्यान्न प्रदान किया।
- यहां की प्राचीनतम नव पाषाण युगीन बस्ती मेहरगढ़ (पाकिस्तान) है। कृषि का सबसे पहला और स्पष्ट प्रमाण यहीं से मिला तथा इस जगह के मानव ने 7000 ई. पू. में कृषि उत्पादन प्रारम्भ कर दिया था।
- इसी तरह भारत में कोलडिहवा नामक स्थान से चावल उगाने का प्राचीन साक्ष्य प्राप्त होता है, इसका समय भी 5000 ई.पू. के लगभग आता है।
- नव पाषाण काल में स्थिर वासी लोग खेती से परिचित हो गए थे तथा पालतू पशु भी रखने लगे थे।

AAKAR IAS
SHAPE YOUR DREAMS

- इसलिए खाने-पीने के बर्तनों की इन्हें जरूरत हुई अतः कुम्भकारी सबसे पहले इसी काल में दिखाई दी।
- कश्मीर में जिस नवपाषाण काल का विकास हुआ उसे कश्मीरी नवपाषाण संस्कृति के नाम से जाना जाता है।
- बुर्जाहोम संस्कृति के लोग गड्ढे वाले मकानों में रहते थे।
- बुर्जाहोम से मानव के साथ कुत्ते को भी दफनाने का प्रमाण मिलता है।

महत्वपूर्ण तथ्य

- राबर्ट ब्रूस फूट जिन्होंने पाषाणकालीन सभ्यता की खोज की, एक भू-वैज्ञानिक थे।
- मध्य प्रदेश में नर्मदा घाटी में स्थित हथनौरा से मानव खोपड़ी का जीवाश्म प्राप्त हुआ है। जो भारत में सबसे प्राचीन है।
- लोंहदा (बेलनघाटी) से हड्डी की बनी नारी की मूर्ति प्राप्त हुई है जो उच्च पुरा पाषाण काल से सम्बन्धित है।
- पशुपालन का प्राचीनतम प्रमाण आदमगढ़ एवं बागौर से प्राप्त होता है।
- विश्व के प्राचीनतम मृद्भांड बेलनघाटी में स्थित चोपानी मांडो से प्राप्त हुए हैं।
- बुर्जाहोम संस्कृति के लोग जमीन के अंदर गड्ढे बनाकर निवास करते थे। यहीं से मानव के साथ कुत्ते को दफनाये जाने का प्रमाण मिलता है।

ताम्र-पाषाण काल

- जिस काल का मानव पत्थर के उपकरणों के साथ-2 तांबे के उपकरणों का प्रयोग करना प्रारम्भ किया, उसी काल को ताम्र-पाषाण काल कहते हैं।

पूर्व सैंधव ताम्र-पाषाणिक संस्कृतियाँ

1. क्वेटा संस्कृति	बलूचिस्तान में	पांडुरंग के मृद्भांडों का प्रयोग।
2. कुल्ली संस्कति	बलूचिस्तान में	पांडुरंग के लेप पर काले रंग से चित्रण वाले मृद्भांड।
3. नाल-आर्मी संस्कृति	बलूचिस्तान एवं सिंध में	पांडुरंग के लेप पर बहुरंगी अलंकरण वाले मृद्भांड।
4. झोब संस्कृति	बलूचिस्तान में	लाल रंग के लेप पर काले रंग से चित्रण वाले मृद्भांड।
5. कोटिदीजी संस्कृति	सिंध में	लाल रंग के लेप पर दुधिया रंग की पट्टी जिस पर बहुरंगी अलंकरण वाले मृद्भांड।
6. पूर्व हड़प्पा संस्कृति	पंजाब	लाल या बैंगनी रंग के (पाकिस्तान) मेंलेप पर काले रंग की धारियों वाला मृद्भांड।

प्रमुख तथ्य

- सर्वाधिक पूर्व सैंधव ताम्र-पाषाणिक संस्कृतियां बलूचिस्तान से प्राप्त हुई हैं।
- अहाड़ का प्राचीन नाम ताम्रवती मिलता है।
- ताम्र-पाषाण काल को कैल्कोलिथिक युग भी कहा जाता है।
- गैरिक मृदभांड पात्र का नामकरण हस्तिनापुर से प्राप्त मृदभांडों के आधार पर किया गया है।

हड़प्पा सभ्यता

(Harappa Civilization)

- हड़प्पा सभ्यता एक सुविकसित काँस्ययुगीन नगरीय सभ्यता थी। ताँबे से अधिक मजबूत काँसे के औजारों का उपयोग, लेखन कला का ज्ञान, नगर-शहरों में रहने को सभ्यता का प्रतीक माना जाता है।
- **नामकरण**–भारतीय उपमहाद्वीप में विकसित इस प्राचीन महान सभ्यता को सिन्धुघाटी की सभ्यता, सैंधव सभ्यता, सिन्धु सभ्यता एवं हड़प्पा सभ्यता के नाम से जाना जाता है।
- इस सभ्यता का प्रथम खोजा गया स्थल हड़प्पा है जो रावी नदी के तट पर स्थित है।
- इसके बाद प्रारंम्भिक वर्षों में जिन स्थलों की खोज एवं उत्खनन कार्य किया गया जैसे–मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, आम्री, कोटिदीजि, अलीमुराद आदि सभी सिन्धु नदी के तट पर स्थित हैं, अतः पुराविदों ने प्रारम्भ में इस प्राचीन सभ्यता का नाम 'सिन्धुघाटी की सभ्यता' नाम दिया।
- कालान्तर में इस सभ्यता के प्रमाण सिन्धु घाटी से बाहर अन्य क्षेत्रों में पाये गये जैसे–सरस्वती घाटी, यमुना घाटी, गोदावरी घाटी आदि से।
- अतः यह नाम अनुपयुक्त हो गया क्योंकि यह भौगोलिक क्षेत्र को इंगित करता है। तब पुराविदों ने इस सभ्यता के प्रथम खोजे गये स्थल के नाम पर इस सभ्यता का नाम 'हड़प्पा सभ्यता' रखा, क्योंकि यह इतिहास की परंपरा का पालन करता है। यह नाम इस सभ्यता का उपयुक्त नाम है, क्योंकि यह किसी भौगोलिक क्षेत्र को इंगित नहीं करता है।
- **सीमा निर्धारण एवं क्षेत्र विस्तार**–हड़प्पा सभ्यता का विस्तार भारतीय उपमहाद्वीप में भारत, पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान तीन देशों में हुआ।
- इस सभ्यता के सर्वाधिक पुरास्थल भारत से प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता का विस्तार पश्चिम में सुत्कागेंडोर (पाकिस्तान के बलूचिस्तान) से लेकर पूरब में आलमगीरपुर (उ.प्र. के मेरठ जिले में) तक लगभग 1600 किमी.।
- उत्तर में माँडा (जम्मू-कश्मीर) से लेकर दक्षिण में दाईमाबाद (महाराष्ट्र) तक लगभग 1400 किमी0 लम्बे क्षेत्र में हुआ।
- इस सभ्यता का क्षेत्रफल लगभग 16 लाख वर्ग किमी. है। इस सभ्यता का विस्तार भारत में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, उ.प्र. एवं जम्मू-कश्मीर में हुआ। पाकिस्तान में प.पंजाब, सिन्ध एवं बलूचिस्तान प्रान्त में तथा अफगानिस्तान में हुआ।
- सर्वाधिक पुरास्थल सरस्वती नदी घाटी में पाये गये। किसी एक प्रान्त में सर्वाधिक पुरास्थल गुजरात से प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के पास 1300 किमी. लम्बा समुद्र तट है।

नोट–सिन्धु सभ्यता के प्रमुख स्थलों की भौगोलिक स्थिति चार्ट में देखें—

सिन्धु सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल, भौगोलिक स्थिति एवं वहाँ से प्राप्त वस्तुयें

स्थल का नाम	देश/प्रान्त/ जिला	नदी	खोज वर्ष	खोजकर्ता/ उत्खननकर्ता	मिली वस्तुयें
1- हड़प्पा	पाकिस्तान प. पंजाब माँटगोमरी (शाहीवाल)	रावी	1921	दयाराम साहनी एवं माघव स्वरूप वत्स	1- श्रमिक आवास 2. 18 वृत्ताकार चबूतरे 3. 16 भटिठयाँ 4. खंडों में अन्नागार 5. सोने का बना हार 6. प्रसाधन बाक्स 7. पाउडर 8. काजल की डिबिया 9. गधे का प्रमाण 10. ताँबे से बना पैमाना 11. हृदयाकार मनका आदि।

2- मोहन जोदड़ो (शाब्दिक अर्थ है मृतको का टीला)	पाकिस्तान सिन्ध लरकाना	सिन्धु	1922	राखाल दास बनर्जी उत्खनन कार्य- मार्शल द्वारा	1. विशाल स्नानागार 2. विशाल अन्नागार 3. सभा भवन 4. पुरोहित आवास 5. मृतकों की गली 6. गोमेद के मनके से बना हार 7. चाँदी की अंगूठी 8. चाँदी की डिब्बी में लाल कपड़े का साक्ष्य 9. काँसे की बनी नर्तकी की मूर्ति 10. पत्थर निर्मित योगी की मूर्ति 11. सीप का बना पैमाना 12. एक मुद्रा में तीन सिर वाले देवता का चित्र (आदि शिव)
3- चन्हूदड़ो	पाकिस्तान सिन्ध नवाबशाह	सिन्धु	1934	एन.जी. मजुमदार	1. गुरिया मनका बनाने का कारखाना 2. लिपिस्टक 3. वक्राकार ईंट 4. एक ईंट पर कुत्ते एवं बिल्ली के पैर के निशान
4- रोपड़ (आधुनिक नाम रूपनगर)	भारत पंजाब	सतलज	1950 उत्खनन-1953	बी.बी. लाल यज्ञदत्त शर्मा	मानव के साथ कुत्ते को दफनाये जाने का प्रमाण।
5- बनावली	भारत हरियाणा हिसार	सरस्वती	1973	आर.एस. विष्ट	1. एक मकान में वाश वेसिन का प्रमाण 2. खिलौने के रूप में मिट्टी का बना हल 3. उत्तम किस्म का जौ।
6- राखीगढ़ी	भारत हरियाणा जींद	—	1969	सूरजभान एवं भगवान दास	भारत का सर्वाधिक बड़ा पुरास्थल।
7- कालीबंगा	भारत राजस्थान गंगानगर	घग्घर	1953 उत्खनन-1961	अमलानंद घोष बी.बी. लाल एवं बी.के. थापर	1. हल से जुते हुए खेत के निशान। 2. एक ही खेत से दो फसल उगाने के साक्ष्य। 3. अलंकृत ईंट के प्रमाण। 4. मिट्टी का बना पैमाना। 5. अग्नि वेदिकायें।

8- लोथल भारत गुजरात अहमदाबाद		भोगवा	1954	एस.आर. राव	1. अन्नागार 2. गुरिया-मनका बनाने का कारखाना 3. रंगाई कुंड 4. गोंदीबाड़ा (डाकयार्ड) 5. हाँथी दाँत से निर्मित पैमाना 6. अग्निवेदिकायें 7. पत्थर निर्मित वृत्ताकार चक्की के दो पाट 8. गुरिल्ला की मृण्मूर्ति।
9- धौलावीरा	भारत गुजरात कच्छ	मानहर एवं मानसर	1967 उत्खनन-1990	जे.पी. जोशी आर.एस. बिष्ट	1. जलाशयों का प्रमाण 2. सोने की अंगूठी 3. सूचना पट्ट का प्रमाण 4. स्टेडियम।

नगर नियोजन

- **सामान्य विशेषतायें**—सिन्धु सभ्यता के नगर विश्व के प्राचीनतम सुनियोजित नगर हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सम्पूर्ण नगर किसी संस्था के निर्देशानुसार बनवाये गये हैं।
- सड़कें सीधी दिशा में एक दूसरे के समकोण पर काटती हुई नगर को अनेक वर्गाकार तथा चर्तुभुजाकार खण्डों में विभाजित करती थी।
- सिन्धु सभ्यता में सर्वाधिक चौड़ी सड़क मोहन जोदड़ो से प्राप्त हुई जिसकी चौड़ाई लगभग 10 मी0 थी। पुराविदों ने इसे राजपथ/प्रथम सड़क की संज्ञा दी है।
- सामान्यतः मकानों में 4 या 5 कमरे बनाये जाते थे। मकान में आंगन, रसोई घर, स्नानागार, कुँए तथा कुछ बड़े घरों में शौचालय बनाये जाते थे।
- सामान्यतः मकान के दरवाजे मुख्य सड़कों पर न खुलकर गलियों में खुलते थे।
- हड़प्पा और मोहनजोदड़ों में मकानों के निर्माण में सामान्यतः पकी ईंटों का प्रयोग मिलता है, जबकि अन्य स्थलों से ज्यादातर कच्ची ईंट का प्रयोग मिलता है।
- मात्र कालीबंगा से अलंकृत ईंट का प्रमाण मिलता है।
- सामान्यतः ईंटों का आकार 10' × 5' × 2½ इंच था जिनमें 4 : 2 : 1 का अनुपात था।

प्रमुख नगरों की विशेषता–

- **हड़प्पा**—हड़प्पा नगर दो खंडों में विभक्त था, पश्चिम में दुर्ग क्षेत्र एवं पूरब में निचला नगर था।
- दुर्ग क्षेत्र से बाहर उत्तर में एक टीले के उत्खनन से कुछ महत्वपूर्ण अवशेष प्राप्त हुए हैं जैसे–
  1. मजदूरों को रहने के लिए श्रमिक बस्ती–कुल 15 मकान प्राप्त हुए हैं।
  2. इसी के पास से 16 भट्ठियाँ प्राप्त हुई हैं जिसमें कोयले और कंडे की राख मिली हैं। पुराविदों ने इसे ताँबा गलाने का कारखाना माना है।
  3. यहीं से पकी ईंटों से निर्मित 18 वृत्ताकार चबूतरे मिले हैं जिनके मध्य में एक गड्ढा है। गड्ढे में गेहूँ जौ एवं राख के साक्ष्य मिले हैं।
- **मोहनजोदड़ो**—मोहनजोदड़ो का नगर दो खंडों में विभक्त था। पश्चिम में दुर्ग क्षेत्र एवं पूरब में निचला नगर।
  – दुर्ग क्षेत्र से अनेक सार्वजनिक इमारतें प्राप्त हुई हैं–
  1. **विशाल स्नानागार**–यह पकी ईंटों से निर्मित सिन्धु

SAHAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

सभ्यता की सबसे सुन्दर कृति है। यह पूरी इमारत 180 फीट लम्बी एवं 108 फीट चौड़ी है।

- इसके मध्य में एक तालाब है जिसका आकार 11.89 मी.लम्बा ´ 7.01 मी. चौड़ा ´ 2.43 मी. गहरा है।
- तालाब में तल तक पहुँचने के लिए उत्तर तथा दक्षिण दिशा में सीढ़ियाँ बनी थी।
- तालाब के दक्षिण पश्चिम में एक नाली थी जिसमें से तालाब का गन्दा पानी बाहर निकाला जाता था।

2. **विशाल अन्नागार**–यह अन्नागार 45.71 मीटर लम्बा ´ 22.86 मीटर चौड़ा है।

- अन्नागार के उत्तर में एक चबूतरा बनाया गया है। अन्नागार में कुल 27 प्रकोष्ठ बने हैं। सिन्धु सभ्यता का सबसे बड़ा अन्नागार है।

3. **पुरोहित आवास**–विशाल स्नानागार के पास से एक विशाल इमारत का प्रमाण मिला है जो 70.1 मीटर लम्बा एवं 23.77 मीटर चौड़ा है।

- **चन्हूदड़ो**–सामान्य नगर के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
  - वक्राकार ईंट का प्रमाण मिलता है।
  - गुरिया-मनका बनाने का कारखाना प्राप्त हुआ है।
- **लोथल**–इसे लघु हड़प्पा एवं लघु मोहनजोदड़ो कहा जाता है।
  - लोथल नगर के पश्चिम में दुर्ग क्षेत्र एवं पूरब में निचला नगर था। यहाँ का दुर्ग क्षेत्र एवं निचला नगर एक ही रक्षा प्राचीर से घिरा हुआ था।
  - लोथल से गुरिया मनका बनाने का कारखाना मिला है। यहीं से एक रंगाई कुंड का प्रमाण मिला है।

AAKAR IAS
SHAPE YOUR DREAMS

- लोथल में मकानों के दरवाजे मुख्य सड़कों पर खुलते थे।
- लोथल के निचले नगर के पूरब में एक डाकयार्ड (गोंदीवाड़ा) प्राप्त हुआ है। यह पकी ईंटों से निर्मित है। इसका आकार 218 मीटर लम्बा, 36 मीटर चौड़ा एवं 3.3 मीटर गहरा है।

- **'धौलावीरा**—यह भारत स्थित सिन्धु सभ्यता का सबसे बड़ा नगर है।
  - धौलावीरा नगर अन्य नगरों की योजना से भिन्न योजना में बसाया गया है।
  - यहाँ से 16 जलाशयों का प्रमाण मिलता है। यहीं से स्टेडियम एवं सूचना पट्ट का प्रमाण मिलता है।
- **कालीबंगा**—यह नगर दो खंडों में विभक्त है पश्चिम में दुर्ग क्षेत्र एवं पूरब में निचला नगर। यहाँ से सिन्धु सभ्यता के नीचे पूर्व सैंधव संस्कृति के प्रमाण मिलते हैं।
  - यहाँ का दुर्ग क्षेत्र एवं निचला नगर दोनों अलग-अलग रक्षा प्राचीर से घिरा था। यहाँ के एक फर्श से अलंकृत ईंट का साक्ष्य मिला है।
  - यहाँ से आयताकार अग्निवेदिकायें प्राप्त हुई हैं।
- **बनावली**—यहाँ का दुर्ग क्षेत्र एवं निचला नगर अलग-अलग नहीं है।
  - मिट्टी का बना खिलौने के रूप में हल प्राप्त हुआ है।
  - अग्निवेदिकायें प्राप्त हुई हैं।

सामाजिक जीवन

- सिन्धु सभ्यता के समाज का स्वरूप मातृसत्तात्मक था। सैन्धव समाज में कई वर्गों के अस्तित्व के प्रमाण मिले हैं। सैंधव समाज को विभिन्न वर्गों में बाँटा जा सकता है।

  1. विद्वान वर्ग – पुरोहित, वैद्य, शिक्षक, ज्योतिषी आदि
  2. योद्धा वर्ग–
  3. व्यापारी एवं शिल्पी वर्ग
  4. श्रमिक वर्ग

- सैंधव समाज में व्यापारियों का महत्वपूर्ण स्थान रहा होगा।
- **भोजन**—सैंधववासी शाकाहारी तथा माँसाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे। माँस, मछली, दूध का प्रयोग करते थे। औषधियों के रूप में शिलाजीत, समुद्र का फेन एवं नीबू का प्रयोग करते रहे होंगे।
- **वस्त्र**—सिन्धु सभ्यता के किसी भी स्थल से किसी भी निर्मित वस्त्र का साक्ष्य नहीं मिला। सैंधववासी सूती एवं ऊनी दोनों प्रकार के वस्त्र पहनते थे। मोहनजोदड़ो से चाँदी की डिबिया के अन्दर से लाल रंग के कपड़े का साक्ष्य प्राप्त हुआ। स्त्रियाँ स्कर्टनुमा वस्त्र धारण करती थीं। शाल जैसा वस्त्र भी ऊपर से धारण किया जाता था।
- **आभूषण**—सैंधववासी विभिन्न प्रकार के आभूषणों का भी प्रयोग करते थे। आभूषण सोना, चाँदी, ताँबा एवं काँसे से निर्मित होते थे। इसके अतिरिक्त कीमती पत्थरों, साधारण पत्थरों, मिट्टी एवं हाँथी दाँत से भी आभूषण बनाये जाते थे। मुख्य आभूषणों में हार, बाजूबंद, बालपिन, अँगूठी, चूड़ियाँ आदि का प्रयोग करते थे। हड़प्पा से सोने का बना हुआ छह लड़ियों वाला हार प्राप्त हुआ है।
- **सौन्दर्य प्रसाधन**—सैन्धववासी सौन्दर्य प्रेमी थे। हड़प्पा के उत्खनन से प्रसाधन बाक्स प्राप्त हुआ है। हड़प्पा से ही काजल की डिबिया, सफेद पाउडर के प्रमाण मिले हैं। चन्हूदड़ों से लिपिस्टक के प्रमाण मिले हैं। स्त्रियाँ विभिन्न प्रकार से केश विन्यास करती थीं।
- **शवाधान प्रणाली**—सैंधववासी अपने मृतकों का तीन प्रकार से अंतिम संस्कार करते थे–

  1. पूर्ण शवाधान – मृतकों को कब्र में दफनाने की परंपरा।
  2. आंशिक शवाधान – मृतक के शरीर को जंगल में रख देना जब पशु-पक्षी उसके माँस को खा लेते थे तो हड्डियों को दफना देना।

AKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

3. दाह संस्कार – मृतक को जलाने की परंपरा।

- सिन्धु सभ्यता के स्थलों से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि सैंधववासियों की लोकप्रिय शवाधान प्रणाली पूर्णशवाधान थी। सैंधववासी सामान्यतः अपने मृतकों का सिर उत्तर पैर दक्षिण में रखकर दफनाते थे। मृतक के साथ अन्त्येष्ठि सामग्री जैसे मृदभांड, आभूषण आदि रखते थे। कब्रें पैर की अपेक्षा सिर की ओर अधिक चौड़ी होती थीं।
- हड़प्पा का कब्रिस्तान दुर्ग क्षेत्र के दक्षिण से प्राप्त हुआ है।
- हड़प्पा के कब्रिस्तान का नाम पुराविदों ने– R-37 रखा है। यहाँ से कुल 37 कब्रें प्राप्त हुई हैं। यहाँ से प्राप्त एक कब्र में मृतक को लकड़ी के ताबूत में रखकर दफनाया गया है। ऐसी परम्परा सुमेरियन सभ्यता में प्रचलित थी।
- लोथल का कब्रिस्तान दुर्ग क्षेत्र उत्तर-पश्चिम से प्राप्त हुआ है। यहाँ से कुल 20 कब्रे प्राप्त हुई हैं। यहाँ से युगल शवाधान के प्रमाण मिले हैं।
- मोहनजोदड़ो से अभी तक कब्रिस्तान का प्रमाण नहीं मिला है।

धार्मिक जीवन

- सैंधववासी अपने देवी-देवताओं की अनेक रुपों में पूजा करते थे—
- **पुरुष देवता**—सैंधवस्थलों से हमें पुरुष देवता के अनेक रुपों के अंकन का साक्ष्य मिलते हैं। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा में सींग युक्त त्रिमुखी पुरुष देवता का चित्र अंकित है। यह योग मुद्रा में एक चौकी पर निर्वस्त्र बैठा है। देवता के दाहिने ओर एक हाँथी और एक बाघ का चित्र अंकित है तथा बाँये ओर एक गैंडा तथा एक महिष एवं चौकी के नीचे दो हिरण के चित्र अंकित हैं। मार्शल महोदय ने इस चित्र को शिव का आदि रुप माना है। पौराणिक काल में शिव को महायोगी, पशुपतिनाथ, त्रिनेत्रधारी, त्रिशूलधारी आदि अनेक नामों से जाना जाता था। जिनका प्रतीकात्मक चित्रण इस मुद्रा में मिलता है।
- हड़प्पा से प्राप्त एक मुद्रा में एक तरफ पेड़ पर बने मचान पर एक पुरुष आकृति बैठी है और पेड़ के नीचे एक बाघ खड़ा है। इस मुद्रा के दूसरी ओर एक बैल का चित्र है और उसके सामने एक त्रिशूल गड़ा है। इसे भी शिव का प्रतीक रूप माना गया है।
- **मातृदेवी**—हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ों आदि से बड़ी संख्या में नारी मृण्मूर्तियाँ, मुहरों पर अंकित नारी आकृतियाँ और अन्य दृश्य मिले हैं जिससे स्पष्ट होता है कि वे मातृदेवी की उपासना करते थे। नारी मृण्मूर्तियों के सिर के दोनों ओर दीपक जैसी आकृति बनी है इनमें कालिख के निशान भी हैं। मैके की मान्यता है कि इसमें तेल बाती डालकर इनकी पूजा की जाती थी। सभी विद्वान इन मूर्तियों को मातृदेवी की मूर्ति मानते हैं। मूर्तिपूजा का सर्वप्रथम उल्लेख सैंधव सभ्यता से मिलता है। यद्यपि किसी भी स्थल से मंदिर के साक्ष्य नहीं मिले हैं। हड़प्पा से प्राप्त एक मुद्रा में एक ओर एक स्त्री को सिर के बल खड़ा किया गया है और उसके योनि से वनस्पति निकलते हुए दिखाया गया है। इस चित्रण को मातृदेवी के प्रजनन शक्ति का स्वरूप माना है अर्थात् पृथ्वी देवी का अंकन है। मार्शल एवं ह्वीलर का मत है कि सैन्धव देवकुल में मातृदेवी का स्थान सर्वोपरि है।
- **पशुपूजा**—सैंधववासी अपने देवी-देवताओं की कल्पना पशु रुप में भी की है। ये देवताओं की काल्पनिक एवं वास्तविक पशु देवताओं के रूप में पूजा करते थे।
- **काल्पनिक पशु**—मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा में तीन सिर वाले पशु का चित्र अंकन है। नीचे का सिर एवं सींग भैंसे का और बीच एवं ऊपर का सिर एवं सींग बकरे का है। मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक अन्य मुद्रा में तीन बाघों के शरीर को एक में जुड़ा हुआ दिखाया गया है। ये काल्पनिक पशु हो सकते हैं।
- **यज्ञ, अग्नि पूजा एवं पशु बलि**—सैंधववासी यज्ञ एवं अग्नि की पूजा करते थे। यज्ञों में पशु बलि दी जाती थी।

लोथल, कालीबंगा एवं बनावली से अग्निवेदिकायें मिली हैं, जिससे यज्ञ एवं अग्निपूजा की पुष्टि होती है। कालीबंगा एवं लोथल की अग्निवेदिकाओं से पालतू पशुओं की हड्डियाँ एवं अन्य सामग्री प्राप्त हुई हैं जिससे स्पष्ट होता है कि ये पशु बलि से परिचित थे।

- सैंधववासी पुनर्जन्म में विश्वास करते थे। उनमें अन्धविश्वास का प्रचलन था। जादू टोना आदि खूब प्रचलित थे, जिनसे बचने के लिए झाँड़-फूँक एवं ताबीज बाँधते थे।

आर्थिक जीवन

- सैंधव अर्थव्यवस्था पशुपालन, सिंचित कृषि, अधिशेष उत्पादन, विभिन्न दस्तकारियों में दक्षता और समृद्ध आंतरिक और विदेशी व्यापार पर आधारित थी।
- **पशुपालन**—कृषि पर निर्भर होते हुए भी हड़प्पाई लोग बहुत सारे पशु पालते थे। इनमें प्रमुख रूप से भेड़, बकरी, गाय, बैल, भैंस, भैंसा प्रमुख है। सुअर पालतू एवं जंगली दोनों थे। कुत्ता पालतू पशु था, इसके कई नस्ल मिले हैं। सैंधववासी ऊँट का भी पालन करते थे। हड़प्पा से गधे का साक्ष्य मिला है। घोड़े के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। सुरकोटडा से अंतिम चरण से घोड़े की हड्डियाँ मिली हैं। कहा जा सकता है कि सैंधववासी घोड़े से परिचित थे। सैन्धववासी जिन अन्य पशुओं से परिचित थे उनमें हाँथी, बाघ, हिरण, बारहसिंहा, रीछ, खरगोश, बन्दर, बिल्ली, गैंडा, मेढ़ा आदि से परिचित थे। सैंधववासी सिंह से परिचित नहीं थे।
- **कृषि**—सिन्धु सभ्यता के आर्थिक संगठन में कृषि का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान था। सिन्धु और उसकी सहायक नदियों का क्षेत्र अत्यधिक उपजाऊ था। सैंधववासी अपनी रबी की फसल की बुवाई अक्टूबर-नवम्बर महीने में और कटाई मार्च-अप्रैल में करते थे। सैंधववासी कृषि उपकरण के रूप में हल, कुदाल, कुल्हाड़ी, हंसिया आदि का प्रयोग करते थे। बनावली से खिलौने के रूप में मिट्टी का बना हल प्राप्त हुआ है। कालीबंगा से प्राक् सैंधव स्तर से जुते हुए खेत के निशान एवं एक ही खेत में दो फसल उगाने के प्रमाण मिलते हैं। सैंधववासी प्रमुख रूप से गेहूँ, जौ, चावल, बाजरा, राई, सरसों, तिल, मटर एवं कपास आदि नौ फसलों का उत्पादन करते थे। बनावली से उत्तम किस्म के जौ के साक्ष्य मिले हैं। लोथल एवं रंगपुर से चावल के साक्ष्य मिले हैं। गेहूँ की दो किस्में मिलती हैं (i) ट्रिटिकम कम्पैक्टम (बड़ा गेहूँ) (ii) ट्रिटिकम स्फीरोकोकम (छोटे दाने का गेहूँ)। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से छह धारियों वाला जौ के साक्ष्य मिले हैं। सैंधववासी विश्व में कपास के प्रथम उत्पादक थे। इसीलिए यूनानियों ने कपास का नाम सिन्डोन (सैंधववासियों की उपज) रखा है।
- **उद्योग**—सैंधववासी विभिन्न उद्योगों से परिचित थे। सैंधववासियों का प्रमुख उद्योग वस्त्र उद्योग था। ये सूती एवं ऊनी दोनों प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग करते थे। सैंधव स्थलों के प्रत्येक मकान से कताई-बुनाई में प्रयुक्त मिट्टी एवं शंख के बने दो एवं तीन छेद वाले तकुए मिले हैं। मोहनजोदड़ो वस्त्र उद्योग का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा होगा। इसके अतिरिक्त सैंधव सभ्यता में धातु उद्योग, गुरिया-मनका उद्योग, मूर्ति उद्योग, मृदभांड उद्योग, हाथी दाँत से निर्मित वस्तुओं का उद्योग, ईंट उद्योग आदि का प्रचलन था।
- **व्यापार**—सैंधववासियों का आन्तरिक एवं वाह्य दोनों व्यापार उन्नत अवस्था में था। सैंधव सभ्यता की विशेषता वहाँ असंख्य छोटे-बड़े नगरों की उपस्थिति थी। सम्पन्न सैंधवजन अधिक से अधिक विलासिता की वस्तुयें प्राप्त करना चाहते थे इस खोज में उन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप में दूर-दूर तक बस्तियाँ बसाई एवं अफगानिस्तान मध्य एशिया तथा प. एशिया के साथ प्रगाढ़ सम्बन्ध बनाया।
- हड़प्पा सभ्यता में उद्योग विकसित अवस्था में थे लेकिन हड़प्पाई क्षेत्रों में हमें उन उद्योगों के लिए कच्चा माल उपलब्ध नहीं था। अतः सैंधववासी कच्चे माल की प्राप्ति हेतु दूर-दराज की यात्रायें की। कच्चे माल की प्राप्ति व्यापार-वाणिज्य कर्म का प्रथम सोपान है। दूसरे सोपान

में निर्मित वस्तुओं को घरेलू, क्षेत्रीय और विदेशी बाजारों तक पहुँचाना पड़ता था।

- सैंधववासी निम्न वस्तुयें इन क्षेत्रों से प्राप्त करते थे—

चाँदी—अफगानिस्तान एवं ईरान (मुख्यतः अफगानिस्तान से)

सोना—कर्नाटक स्थित कोलार की खान से

ताँबा—राजस्थान स्थित खेत्री ताम्र खान से कुछ ताँबा ओमान से

टिन—अफगानिस्तान से

सेलखड़ी—बलूचिस्तान एवं राजस्थान से

लाजवर्द—बदख्शाँ (उ. अफगानिस्तान से)

फिरोजा—खुराशान

चर्ट पत्थर—बलूचिस्तान

लाल रंग—फारस की खाड़ी स्थित होर्मुज से

देवदारु एवं शिलाजीत—हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों से

- **विदेशी व्यापार**—सैंधववासी का व्यापारिक सम्बन्ध अनेक वाह्य सांस्कृतियों के साथ थे जैसे मेसोपोटामिया, मिश्र, क्रीट और फारस की खाड़ी स्थित देशों के साथ।
- मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक सम्बन्धों के अनेक पुरातात्विक प्रमाण मिलते हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि मेसोपोटामिया से एक हड़प्पाई व्यापारियों की बस्ती मिली है। मेसोपोटामिया से प्राप्त अभिलेखों में दिल्मुन, मगन एवं मेलुहह नामक क्षेत्रों का उल्लेख है, इन क्षेत्रों से मेसोपोटामियाई लोगों के व्यापारिक सम्बन्ध थे दिल्मुन का समीकरण बहरीन से, मगन का समीकरण मकरान तट से एवं मेलुहह का समीकरण सैंधव क्षेत्र से किया गया है अतः मेसोपोटामियाई लोग सैंधव क्षेत्र से सूती वस्त्र, हाथी दाँत से निर्मित वस्तुयें एवं कार्नेलियन पत्थर के बने मनके आयात करते थे। हड़प्पाई मुद्रायें भी मेसोपोटामियाई क्षेत्रों से मिलती है। सैंधववासियों का मिश्र, फारस की खाड़ी एवं क्रीट से भी व्यापारिक सम्बन्ध थे।
- **यातायात**—सैंधवकाल में स्थल एवं जल दोनों मार्गो से व्यापार होता था। स्थल मार्ग के यातायात का मुख्य साधन ठोस पहिये वाली बैलगाड़ी थी। इसके अतिरिक्त भारवाहक पशुओं का भी यातायात के लिए प्रयोग किया जाता था। जल मार्ग से यातायात का मुख्य साधन नाव एवं जलपोत थे। सैंधव स्थलों से वास्तविक नाव का कोई साक्ष्य नहीं मिला है। लेकिन मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मृदभांड से नाव का चित्र मिलता है, लोथल से मिट्टी के बने नाव के पाँच मॉडल मिले हैं–इसी तरह लोथल से डाकयार्ड का साक्ष्य मिला है।
- **माप तौल**—सैंधववासी माप-तौल की इकाइयों से परिचित थे। नाप के लिए पैमाने का प्रयोग करते थे–मोहनजोदड़ो से सीप का बना हुआ पैमाना, हड़प्पा से ताँबे का पैमाना, लोथल से हाथी दाँत का पैमाना एवं कालीबंगा से मिट्टी का बना हुआ पैमाना प्राप्त हुआ है। सिन्धु सभ्यता के पुरास्थलों से बड़ी संख्या में बाट प्राप्त होते हैं। सिन्धु सभ्यता में माप-तौल का मानक रूप मिलता है। बाट पत्थर निर्मित होते थे। बाट कई आकार-प्रकार के मिलते हैं। लेकिन घनाकार बाट सर्वाधिक लोकप्रिय थे। बड़े बाट 16 के गुणक में मिलते हैं जबकि छोटे बाट दून प्रणाली (दुगुना) पर आधारित थे।

सैंधव कला

- सिन्धु सभ्यता में कला का अत्यधिक विकास हुआ।
- **मुद्रायें**—सैंधव पुरास्थलों के उत्खनन से अभी तक 2500 से अधिक मुद्रायें प्राप्त हुई हैं। ये मुद्रायें विभिन्न प्रकार के पत्थरों, काँचली मिट्टी, मिट्टी एवं ताँबे की बनी हुई हैं। इनमें सर्वाधिक मुद्रायें सेल खड़ी पत्थर की बनी हैं। ताँबे की मुद्रायें अल्पमात्रा में लोथल एवं देसलपुर से मिली हैं। मुद्रायें वर्गाकार, आयताकार, गोल एवं बेलनाकार बनायी जाती थीं। इनमें सबसे लोकप्रिय वर्गाकार मुद्रायें थीं जो सेलखड़ी पत्थर से बनी थीं। लोकप्रिय वर्गाकार मुद्रायें 2.8 से.मी. के वर्ग में बनी थीं। लोथल से बटन जैसी गोल

मुद्रा मिली है जो फारस की खाड़ी में लोकप्रिय थी। सैंधववासियों की कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन उनकी मुद्राओं के चित्रांकन में मिलता है। सैंधव मुद्राओं पर पशुओं का चित्रांकन अत्यंत सुन्दर है। चित्रांकनों में कूबड़वाला बैल, बाघ, गैंडा, भैंसा के चित्र बहुत ही सुन्दर एवं यथार्थ दिखाई पड़ते हैं। सैंधव मुद्राओं में सर्वाधिक चित्रांकन एकश्रृंगी पशु का है। मुद्राओं में सबसे सुन्दर उदाहरण मोहनजोदड़ो से प्राप्त त्रिमुखी देवता की मुद्रा है।

- **गुरिया-मनका**—सैन्धव सभ्यता में विभिन्न स्थलों से हजारों की संख्या में मनके मिले हैं। मनकों का निर्माण विभिन्न प्रकार के पत्थरों, धातुओं, मिट्टी, काँचली मिट्टी, सीप एवं हाथी दाँत से किया जाता था। चन्हूदड़ो एवं लोथल से गुरिया-मनका बनाने का कारखाना मिला है। सेलखड़ी पत्थर के बने मनके सर्वाधिक प्राप्त हुए हैं। मनके कई आकार के बनते थे। लेकिन बेलनाकार मनके सर्वाधिक प्रचलित थे। रेखांकित मनके सिन्धु सभ्यता के साथ-साथ मेसोपोटामिया एवं मिश्र से मिले हैं। हड़प्पा से एक हृदयाकार मनका मिला है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मनके में तीन बन्दरों का चित्र अंकित है।
- **मृद्भांड**—सैंधव स्थलों से प्राप्त अधिकांश मृदभांड चाक निर्मित हैं चाक का कोई साक्ष्य नहीं मिलता। मृदभांड का निर्माण नदियों की मिट्टी से किया गया था। मृदभांडो पर सर्वप्रथम लाल रंग का लेप लगाया जाता था तब उसके ऊपर काले रंग से चित्रण किया जाता था। मृदभांडों पर वनस्पतियों, जीव जन्तुओं कुछ मानव आकृतियों को रेखाचित्र का अंकन किया जाता था। मोहनजोदड़ो एवं चन्हूदड़ो के मृदभांडों पर मानव आकृति का अभाव है। हड़प्पा से प्राप्त एक मृदभांड पर मछुआरे का चित्र अंकित है। लोथल से प्राप्त एक मृदभांड पर एक चिड़िया अपने मुख में मछली दबाये हुए पेड़ पर बैठी है और पेड़ के नीचे एक लोमड़ी खड़ी है। इस चित्रांकन से हमें पंचतंत्र की कहानी ''चालाक लोमड़ी'' का आभास मिलता है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मृदभांड पर नाव का चित्रण मिलता है। प्रमुख मृदभांडों में, मटके नांद, हत्थेदार ढक्कन, कटोरे, साधारण तश्तरियाँ, कई खाने वाले बर्तन बड़ी थालियाँ, जामदानी, छिद्रित पात्र आदि हैं।
- **मूर्तिकला**—सैंधव मूर्तिकला को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. **धातु मूर्तियाँ**—सैंधव स्थलों से ताँबे एवं काँसे की बनी मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। धातु निर्मित मूर्तियों में सबसे सुन्दर मोहनजोदड़ो से प्राप्त कांस्य निर्मित 14 से.मी. ऊंची नर्तकी की मूर्ति है। यह द्रवीमोम विधि से साँचे में ढालकर बनाई गई है। मोहनजोदड़ो से ताँबे एवं काँसे के बने बैल एवं भैसे की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। लोथल से ताँबे की बनी बतख, कबूतर, खरगोश आदि की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।
2. **प्रस्तर मूर्तियाँ**—सैंधववासी मूर्तियों के निर्माण में विभिन्न प्रकार के पत्थरों जैसे—अलाबास्टर, सेलखड़ी, स्लेटी चूना पत्थर एवं लाल बलुआ पत्थरों का प्रयोग करते थे। मोहनजोदड़ो से कुल 12 प्रस्तर मूर्तियाँ मिली हैं जिनमें सबसे सुन्दर सेलखड़ी पत्थर की बनी एक पुरुष मूर्ति है जो तिपतिया अलंकरण से युक्त शाल ओढ़े हुए है यह केवल वक्षस्थल तक है। मोहनजोदड़ो से पत्थर निर्मित एक योगी की मूर्ति प्राप्त हुई है। हड़प्पा से प्रस्तर निर्मित दो मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।
3. **मृण्मूर्तियाँ**—सैंधव स्थलों से सर्वाधिक संख्या में मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। ज्यादातर मृण्मूर्तियाँ हस्त निर्मित हैं, कुछ मुखौटे हैं जो साँचे में ढालकर बनाये गये हैं। मानव मृण्मूर्तियों में पुरुष की तुलना में नारी मृण्मूर्तियाँ अधिक मिली हैं। ज्यादातर नारी मृण्मूर्तियाँ स्कर्टनुमा वस्त्र पहने हुए हैं। हड़प्पा से प्राप्त एक नारी मृण्मूर्ति को तीन पाँवे वाली कुर्सी में बैठे हुए दिखाया गया है। अधिकांश पुरुष मृण्मूर्तियाँ निर्वस्त्र हैं, कुछ मूर्तियों को तंग टोपी पहने हुए दिखाया गया है। मोहनजोदड़ो से घुटने के बल चलते हुए

बच्चों की दो मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से साँचे में ढालकर सींगयुक्त मुखौटे प्राप्त हुए हैं।

- मानव मृण्मूर्तियों की तुलना में पशु मृण्मूर्तियाँ अधिक मिलती है। पशु मृण्मूर्तियों में सर्वाधिक संख्या में बिना कूबड़वाले बैल की मृण्मूर्ति मिलती है। दूसरे स्थान पर कूबड़वाला बैल है। अन्य पशुओं में गैंडा, महिष, बाघ, हाथी, सुअर, रीछ, बन्दर, खरगोश, कुत्ता, बिल्ली आदि तथा अनेक पक्षियों की मृण्मूर्ती मिलती है।
- **सैंधव लिपि**—सैंधव लिपि अधिकांशतः मुहरों पर अंकित है। सैंधव लिपि के सर्वाधिक साक्ष्य मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुआ है। सैंधव लिपि में सामान्यतः 400 से 250 अक्षर प्रयुक्त होते रहे होंगे। सैंधव लिपि मुख्य रूप से चित्रात्मक एवं भाव चित्रात्मक हैं। लिपियों में सर्वाधिक अंकन अंग्रेजी अक्षर U चिह्न का है। सैंधव लिपि की दिशा दांये से बांये थी। सैंधव स्थलों से बूस्ट्रोफेदन लिपि के भी साक्ष्य मिले इसमें दांये से बांये फिर बांये से दांये एवं दांये से बांये लिखा जाता है। हाल में कुछ विद्वानों ने कम्प्यूटर द्वारा सैंधव लिपि पढ़ने का दावा किया है।

सिन्धु सभ्यता में विज्ञान एवं तकनीक

- सैंधववासी कृषि तकनीक में भी अग्रणी थे। खेतों की जुताई के लिए हल का प्रयोग करते थे। बनावली से खिलौने के रूप में मिट्टी का बना हल प्राप्त हुआ है। सैधववासी बीज बोने के यंत्र का प्रयोग करते थे। लोथल से प्राप्त मिट्टी की एक प्लेट में बीज बोने के यंत्र का चित्रण मिलता है। सैंधववासी विभिन्न फसलों एवं विभिन्न प्रजाति के अनाजों का उत्पादन करते थे। विश्व में सर्वप्रथम कपास का उत्पादन सैंधववासियों ने किया। ए. एल. बाशम के शब्दों में—''रुई उत्पादन एवं उसके उपयोग का तकनीकी

AAKAR IAS
SHAPE YOUR DREAMS

ज्ञान विश्व को हड़प्पा सभ्यता की देन है।''। सैंधववासियों का प्रमुख उद्योग वस्त्र उद्योग था। लगभग प्रत्येक घर से कताई-बुनाई के लिए दो-तीन छेद वाले तकुए प्राप्त हुए हैं।

सिन्धु सभ्यता के पतन के कारण

- सिन्धु सभ्यता बहुत ही विस्तृत क्षेत्र में फैली नगरीय सभ्यता थी। सिन्धु सभ्यता के अलग-अलग क्षेत्रों की अलग-अलग भौगोलिक स्थिति थी। अतः भिन्न-भिन्न भौगोलिक क्षेत्रों वाली इस सभ्यता का पतन किसी एक कारण से हुआ हो नितान्त असंभव है, अतः सिन्धु सभ्यता के अलग-अलग क्षेत्रों के पतन के अलग-अलग कारण रहे होंगे। विद्वानों ने सिंधु सभ्यता के पतन के लिए अलग-अलग कारणों को अलग-अलग क्षेत्रों के लिए बताया है।
- **बाढ़**—इस मत के समर्थक विद्वान मार्शल, मैके एवं एस.आर. राव हैं। मार्शल ने मोहनजोदड़ो, मैके ने चन्हूदड़ो के विनाश का कारण बाढ़ बताया है। एस. आर. राव ने लोथल नगर के पतन का कारण भोगवा नदी में आयी बाढ़ को बताया है।

महत्वपूर्ण तथ्य

- सिन्धु सभ्यता आद्यैतिहासिक काल से सम्बन्धित है।
- चार्ल्स मैस्सन ने सर्वप्रथम 1826 में हड़प्पा के टीले की जानकारी दी।
- सिन्धु सभ्यता का आकार त्रिभुजाकार है।
- सिन्धु सभ्यता का सबसे बड़ा पुरास्थल गनवेरीवाला है जो पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में हकरा नदी के तट पर स्थित है।
- सिन्धु सभ्यता के सर्वाधिक पुरास्थल सरस्वती घाटी में मिले हैं।
- हड़प्पा से प्राप्त कब्रिस्तान में कुल 37 कब्रें प्राप्त हुई हैं। इसे R-37 के नाम से जाना जाता है।
- मोहनजोदड़ो से अभी तक कोई कब्रिस्तान नहीं मिला है।
- हड़प्पा से 18 वृत्ताकार चबूतरे प्राप्त हुए हैं जिनके मध्य में गड्ढे हैं। इन गड्ढों में जले हुए गेहूँ और जौ के प्रमाण मिले हैं।
- हड़प्पा से मजदूरों के रहने के लिए बैरक मिली है। जिसमें 15 कमरे हैं।
- लोथल में मकानों के दरवाजे मुख्य सड़क पर खुलते थे।
- धौलावीरा एक ऐसा नगर था जो अन्य नगरों से भिन्न योजना में बसाया गया था।
- कालीबंगा में सड़कों एवं गलियों की चौड़ाई के मध्य एक अनुपात मिलता है। गलियां 1.8 मी. चौड़ी थी तो सड़कें इसके गुणक में। कालीबंगा से पूर्व सैंधव संस्कृति के प्रमाण मिले हैं।
- सिन्धु सभ्यता का समय 2500-1750 ई. पू. था।
- धौलावीरा से उन्नत जल प्रबन्धन का प्रमाण मिला है।
- सैंधव धर्म में सर्वाधिक पूजा मातृ देवी की होती थी। मूर्ति पूजा का सर्वप्रथम प्रमाण हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त होता है।
- सैंधववासी पुरुष देवता के रूप में पशुपति शिव की पूजा करते रहे होंगे। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा में सींगयुक्त त्रिमुखी पुरुष देवता का चित्रण है जिसे आदि शिव की संज्ञा दी गई है।
- सैंधववासी काल्पनिक एवं वास्तविक पशुओं की पूजा करते थे इनका पूजनीय पशु कूबड़वाला बैल था।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त काँसे से निर्मित नर्तकी की मूर्ति आद्य आस्ट्रेलायड मानी जाती है।

- कालीबंगा से प्राप्त बच्चे की एक खोपड़ी में छह छेद के निशान मिलते हैं। पुराविदों ने इसे शल्य चिकित्सा का प्रमाण माना है।
- सैंधव नारियाँ 16 प्रकार से केश विन्यास करती थीं। जबकि पुरुष वर्ग दाढ़ी मुड़ाता था। वर्गाकार दाढ़ी रखने का साक्ष्य मोहनजोदड़ों से प्राप्त हुआ है।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा में एक मानव ढोल जैसी आकृति बजा रहा है।
- मेसोपोटामियाई अभिलेखों में 'दिल्मुन' 'मगन' एवं 'मेलुहह' नामक तीन देशों का उल्लेख है जहाँ से मेसोपोटामियाई व्यापारी विभिन्न वस्तुओं का आयात करते थे।
- दिल्मुन व्यापार में बिचौलिये की भूमिका अदा करता था।
- हड़प्पा, आम्री, कोटिदीजि, कालीबंगा एवं बनावली से सिन्धु सभ्यता के नीचे पूर्व सैंधव संस्कृतियों के प्रमाण मिले हैं।
- सैंधववासी विश्व में कपास के प्रथम उत्पादक थे इसीलिए यूनानियों ने कपास का नाम सिन्डोन रखा अर्थात् सैंधववासियों की उपज।
- कालीबंगा से मृणपट्टिका पर उत्कीर्ण सींगयुक्त देवता की आकृति प्राप्त हुई है।

वैदिक काल 1500 ई. पू. - 600 ई. पू.

- हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद जिस सभ्यता एवं संस्कृति का विकास हुआ उसकी जानकारी वेदों से प्राप्त होती है। अतः इस काल को वैदिक काल की संज्ञा दी गई।
- वैदिक काल को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम पूर्व वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल, द्वितीय उत्तरवैदिक काल।

वैदिक साहित्य

- ब्राह्मण साहित्य में वैदिक साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अन्तर्गत वेद, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद आते हैं।

वेद

- वैदिक साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण स्थान वेदों का है। वेद संस्कृत भाषा के विद् धातु से बना है जिसका अर्थ है जानना या ज्ञान प्राप्त करना।
- वेदों को संकलित करने का श्रेय कृष्ण द्वैपायन को है। इसीलिए इन्हें वेदव्यास के नाम से भी जाना जाता है।
- प्रथम तीन वेद को वेदत्रयी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद आते हैं।
- वेदों की संख्या चार हैं—

1. ऋग्वेद-

- यह सबसे प्राचीन एवं सबसे विशाल वेद है।
- ऋचाओं से युक्त होने के कारण इसे ऋग्वेद कहा गया है।
- ऋग्वेद में कुल 10 मंडल हैं। जिनमें मंडल न. 2 से 7 सबसे प्राचीन है।
- मंडल न. 8 कण्व ऋषि एवं अंगीरस से सम्बंधित है।
- मंडल न. 9 सोमदेव से संम्बंधित है।
- मंडल न. 1 एवं 10 सबसे नवीन है।
- प्रत्येक मंडल अनेक सूक्तों में विभक्त हैं। ऋग्वेद में मूल रूप से 1017 सूक्त हैं। लेकिन बाद में इसमें 11 सूक्त परिशिष्ट रूप में जोड़े गये हैं। जिन्हें बालखिल्य सूक्त कहा जाता है। इस तरह ऋग्वेद में कुल सूक्तों की संख्या 1028 हो जाती हैं।
- ऋग्वेद में कुल मंत्रों की संख्या 10,580 है। इसमें 118 मंत्र दोहराये गये हैं। मूल मंत्रों की संख्या 10,462 है।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

2. यजुर्वेद

- यजुः (यज्ञ) अर्थात् यज्ञ से सम्बन्धित होने के कारण इसे यजुर्वेद कहा गया।
- यजुर्वेद की दो शाखायें हैं—1. कृष्ण यजुर्वेद - यह गद्य एवं पद्य दोनों में रचा गया है 2. शुक्ल यजुर्वेद - यह केवल पद्य में है। इसे ही वाजसनेयी संहिता के नाम से जाना जाता है।

3. सामवेद

- साम अर्थात् गायन से सम्बन्धित होने के कारण इसका नाम सामवेद पड़ा।
- संगीत की सर्वप्रथम जानकारी सामवेद से मिलती है।
- इसमें कुल 1810 मंत्र हैं, जिसमें 261 मंत्र दोहराये गये हैं, मूल मंत्रों की संख्या 1549 हैं।

4. अथर्ववेद

- अथर्वा ऋषि के नाम पर इस वेद का नाम अथर्ववेद पड़ा।
- इसमें भूत-प्रेत, जादू-टोना, रोग निवारक, शत्रु दमन मेल-मिलाप, विवाह, आर्शीवाद सूचक मंत्र दिये गये हैं।
- अथर्ववेद में कुल 20 अध्याय हैं। इसमें 731 सूक्त एवं 5987 मंत्र हैं।

ब्राह्मण

- वेदों के बाद ब्राह्मण ग्रंथों की रचना की गई।
- ब्राह्मण ग्रंथों में यज्ञ से सम्बन्धित बातों का वर्णन है। एक तरह से ये वेदों के व्याख्या ग्रथ के रूप में भी हैं। इसीलिए प्रत्येक वेद के अपने-अपने ब्राह्मण ग्रंथ रचे गये।
- यजुर्वेद का महत्वपूर्ण ब्राह्मण ग्रंथ शतपथ ब्राह्मण है जिसकी रचना याज्ञवाल्क्य ऋषि ने की है। 100 अध्याय होने के कारण इसका नाम शतपथ ब्राह्मण पड़ा। इसमें जल प्रलय की कथा, पुरुरवा-उर्वशी आख्यान तथा अश्विनों द्वारा च्यवन ऋषि को यौवन दान की कथा है।
- सामवेद का महत्वपूर्ण ब्राह्मण ग्रंथ पंचविश ब्राह्मण है। जिसकी रचना ताण्ड्य ऋषि ने की है, इसीलिए इसे ताण्ड्य ब्राह्मण के नाम से भी जाना जाता है, इसी में व्रात्य स्त्रोम यज्ञ का वर्णन है। इस यज्ञ के द्वारा अनार्यों को आर्य समूह में सम्मिलित किया जाता था।
- सामवेद का दूसरा ब्राह्मण षट्विश ब्राह्मण है जिसकी रचना अद्भुत ऋषि ने की है। इसीलिए इसे अद्भुत ब्राह्मण के नाम से भी जाना जाता है। इसमें अकाल भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं से मुक्ति के बारे में बताया गया है।
- अथर्ववेद का ब्राह्मण ग्रंथ गोपथ ब्राह्मण है, जिसकी रचना गोपथ ऋषि ने की है। इसमें ओउम एवं गायत्री का महत्व बताया गया है। यह शतपथ ब्राह्मण से प्रभावित है।

आरण्यक

- ब्राह्मण ग्रंथों के बाद आरण्यकों की रचना की गई।
- आरण्यकों में आध्यात्मिक एवं दार्शनिक बातों का उल्लेख किया गया है।

उपनिषद

- वैदिक साहित्य का अंतिम भाग होने के कारण उपनिषदों को वेदान्त भी कहा जाता है।
- उपनिषदों में आध्यात्मिक एवं दार्शनिक बातों का चर्मोत्कर्ष है।
- उपनिषदों की संख्या 108 बताई जाती है, यद्यपि कुछ ही उपनिषद उपलब्ध हैं।
- कठोपनिषद में यम-नचिकेता संवाद मिलता है। इसका सम्बन्ध भी कृष्ण यजुर्वेद से है।
- वृहदारण्यक उपनिषद सबसे प्राचीन उपनिषद है। इसी में राजा जनक के दरबार में याज्ञवाल्क्य एवं गार्गी के बीच हुए शास्त्रार्थ का वर्णन है। इसका सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद से है।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

- छान्दोग्य उपनिषद में देवकी पुत्र कृष्ण का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है। इसका सम्बन्ध सामवेद से है।

वेद	ऋत्विज	कार्य (पुरोहित)
ऋग्वेद	होतृ	देव स्तुति करना
यजुर्वेद	अध्वुर्य	यज्ञ कराना
सामवेद	उद्गाता	ऋचाओं का गायन करने वाला
अथर्ववेद	ब्रह्म	निरीक्षणकर्ता (यज्ञों का)

वैदिकोत्तर साहित्य

- **वेदांग**–वेदों को जानने एवं समझने के लिए वेदांगों की रचना की गई। इनकी संख्या - 6 है।

1. शिक्षा-वैदिक शब्दों के शुद्ध उच्चारण हेतु शिक्षा की रचना की गई। वामज्य ऋषि द्वारा रचित गाएलम नामक ग्रंथ प्राचीनतम ग्रंथ है।
2. कल्प-विधि-विधानों का वर्णन है इनकी संख्या 3 है।
   1. श्रौत सूत्र-यज्ञ सम्बन्धी नियम
   2. गृह्य सूत्र-लौकिक एवं पारलौकिक जीवन के विधि - विधान
   3. धर्म सूत्र - राजा -प्रजा के अधिकार एवं कर्त्तव्य
3. व्याकरण- भाषा को वैज्ञानिक रूप देने के लिए पाणिनी द्वारा रचित अष्टाध्यायी
4. निरुक्त- वैदिक शब्दों की उत्पत्ति एवं अर्थ - ऋषि कश्यप का निघंटु
5. छंद- वैदिक मंत्रों के लक्षण एवं विशेषतायें पिंगल का छंदशास्त्र
6. ज्योतिष- ब्रह्माण्ड एवं नक्षत्रों की जानकारी लगध मुनि का वेदांग ज्योतिष

स्मृतियां-

- ये हिन्दु धर्म की कानूनी ग्रंथ हैं। मनुस्मृति सबसे प्राचीन स्मृति है। अन्य स्मृतियों में याज्ञवाल्क्य स्मृति, नारद स्मृति, वृहस्पति स्मृति, कात्यायन स्मृति एवं विष्णु स्मृति महत्वपूर्ण है।

उपवेद- इनकी संख्या 4 हैं

1. धनुर्वेद- युद्ध सम्बन्धी जानकारी है सम्बन्ध-ऋग्वेद से
2. शिल्पवेद- शिल्प व्यवसाय की जानकारी है। सम्बन्ध-यजुर्वेद से।
3. गन्धर्ववेद- संगीत आदि की जानकारी है। सम्बन्ध सामवेद से
4. आयुर्वेद- चिकित्सा सम्बन्धी जानकारी है सम्बन्ध-अथर्ववेद से

ऋग्वैदिक काल (1500ई. पू.-1000 ई. पू.)

ऋग्वैदिक आर्यों का भौगोलिक ज्ञान

- ऋग्वैदिक आर्यों के भौगोलिक ज्ञान की जानकारी ऋग्वेद में वर्णित पर्वत, मरुस्थल एवं नदियों के नामों से होती है।
- ऋग्वेद में हिमवंत अर्थात् हिमालय पर्वत एवं उसकी मूजवंत नामक चोटी का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद के नदी सूक्त में कुल 25 नदियों का उल्लेख मिलता है। यद्यपि सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में 33 नदियों का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद में सिन्धु नदी का उल्लेख सर्वाधिक बार मिलता है।
- सरस्वती नदी आर्यों की सबसे पवित्र नदी थी, इसे नदीतिमा कहा गया है।
- ऋग्वेद में वर्णित अंतिम नदी गोमती है।
- ऋग्वेद में यमुना नदी का तीन बार एवं गंगा नदी का एक बार उल्लेख मिलता है।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

राजनीतिक जीवन

- ऋग्वैदिक आर्य अनेक कबीलों में विभक्त थे। कबीले को जन कहा जाता था।
- जन का मुखिया ही राजा कहलाता था। राजा का पद वंशानुगत होता था।
- राज्य का लोकप्रिय स्वरूप राजतंत्रात्मक था यद्यपि गणतंत्र की भी जानकारी मिलती है।
- राजा को जनस्य गोप्ता अर्थात् जन का रक्षक तथा पुराँभेत्ता अर्थात् दुर्गों का भेदन करने वाला कहा गया है।
- कबीले के सदस्य राजा को बलि नामक स्वैच्छिक कर (उपहार स्वरूप) देते थे।
- विदथ नामक परिषद सबसे प्राचीन परिषद थी। यह सैनिक, गैर सैनिक, धार्मिक कार्य का संपादन करती थी।

दाशराजयुद्ध

- यह युद्ध परुष्णी (रावी) नदी के तट पर लड़ा गया।
- यह युद्ध भरत जन के राजा सुदास एवं 10 अन्य राजाओं के संघ के बीच में लड़ा गया।
- दस राजाओं के संघ का नेतृत्व पुरु राजा संवरण ने किया।
- इस युद्ध में अनार्यों ने भी भाग लिया था। अनार्यों का नेता भेद था।

सामाजिक जीवन

- ऋग्वैदिक काल के प्रारम्भ में दो वर्ग थे। आर्य एवं अनार्य।
- ऋग्वैदिक काल के अंतिम चरण में वर्णव्यवस्था का जन्म हुआ।
- ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में सर्वप्रथम चारों वर्णों की उत्पत्ति बताई गई है।
- पुरुष सूक्त में एक विराट पुरुष के मुख से ब्राह्मण, बाँह से राजन्य (क्षत्रिय) जाँघ से वैश्य तथा पैर से शूद्र की उत्पत्ति बताई गई है।
- इस काल में अस्पृश्यता (छुआछूत) की परंपरा नहीं थी। शूद्रों द्वारा दिया गया दान ब्राह्मणों को स्वीकार्य था।
- परिवार का स्वरूप पितृसत्तात्मक था। परिवार का मुखिया पिता या बड़ा भाई होता था।

विवाह एवं स्त्रियों की दशा

- सामान्यतः एक विवाह की प्रथा थी, यद्यपि बहुविवाह का भी उल्लेख मिलता है।
- इस काल में बाल विवाह की प्रथा नहीं थी। युवावस्था में कन्या का विवाह होता था।
- इस काल में दहेज प्रथा भी विद्यमान थी जिसे वहतु कहा जाता था।
- विधवा विवाह की सामान्य प्रथा नहीं थी लेकिन विशेष परिस्थिति में विधवा नियोग प्रथा अपना सकती थी।
- अन्तर्जातीय विवाह होते थे। ये दो प्रकार के थे, **1. अनुलोम विवाह** - इसमें पुरुष उच्च वर्ण का एवं स्त्री निम्न वर्ण की होती थी। **2. प्रतिलोम विवाह**-इसमें पुरुष निम्नवर्ण का एवं स्त्री उच्च वर्ण की होती थी।

स्त्रियों की दशा

- इस काल में स्त्रियों की दशा अच्छी थी।
- इस काल में बहुत सी महिलायें विद्वान हुई।

लोपामुद्रा, घोषा, सिक्ता, निवावरी, रोमषा, अपाला, विश्ववारा आदि इस काल की विदुषी महिलायें थीं।

आर्थिक जीवन

- अर्थव्यवस्था का स्वरूप जनजातीय था। अर्थात् जीवन निर्वाह की अर्थव्यवस्था थी।

पशुपालन

- ऋग्वैदिक आर्यों का जीवन अस्थायी था, अतः इनका मुख्य व्यवसाय पशुपालन था।
- आर्यों का सबसे महत्वपूर्ण पशु गाय थी। गाय के नाम पर ही जीवन के गतिविधियों का नामकरण किया जाता था।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

- आर्य हाथी से भी परिचित थे। लेकिन बाघ का उल्लेख नहीं मिलता।

कृषि

- ऋग्वेद आर्यों का जीवन अस्थायी था, अतः कृषि का अधिक विकास नहीं हुआ।
- लकड़ी के बने बड़े-2 हलों से खेतों की जुताई की जाती थी। हल को लाँगल कहा जाता था। 6, 8 एवं 12 बैलों द्वारा हल को खींचे जाने का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वैदिक आर्य केवल यव (जौ) से परिचित थे जिसे धान्य भी कहते थे।

व्यापार

- पणि नामक समुदाय व्यापार कार्य में निपुण थे। आर्य पणि से घृणा करते थे। पणि अपनी कंजूसी के लिए प्रसिद्ध थे।

धार्मिक जीवन

- ऋग्वैदिक देव मंडल में देवियों की तुलना में देवता महत्वपूर्ण हैं।
- ऋग्वैदिक आर्य बहुदेववादी थे लेकिन अंतिम चरण में एकेश्वरवाद की भावना दिखाई पड़ने लगती है।
- ऋग्वेद में कुल 33 देवी-देवताओं का उल्लेख है जिन्हें आकाशवासी, अंतरिक्षवासी एवं पृथ्वीवासी तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है।
- आर्यों का सर्वश्रेष्ठ देवता इन्द्र थे। इन्द्र को पुरंदर भी कहा गया है। ऋग्वेद में इन्द्र की स्तुति में 250 सूक्त रचे गये हैं।
- वरुण सर्वाधिक आचरण वाले देवता थे। इन्हें सृष्टिकर्ता कहा गया है।
- ऋग्वेद में सूर्य की स्तुति 5 रूपों में की गई है। ये रूप हैं - सूर्य, सवितृ, मित्र, पूषन, विष्णु।
- सवितृ (सविता) की स्तुति में ही प्रसिद्ध गायत्री मंत्र की रचना की गई है। गायत्री मंत्र ऋग्वेद के तीसरे मंडल में है। इसके दृष्टा विश्वामित्र हैं।

उत्तर वैदिक काल (1000 - 600 ई.पू.)

- उत्तर वैदिक काल में आर्यों का पूरब की ओर विस्तार हुआ।
- अर्थर्ववेद में उल्लेख मिलता है कि अंग एवं मगध आर्य संस्कृति से बाहर थे।
- शतपथ ब्राह्मण में सदानीरा (गंडक) एवं रेवोत्तरा (नर्मदा) नदी का उल्लेख मिलता है।

राजनीतिक जीवन

- भरत एवं पुरु कबीले आपस में मिलकर कुरु राज्य का निर्माण किया। इसी प्रकार क्रिवि एवं तुर्वश मिलकर पांचाल राज्य का निर्माण किया।
- इस काल में राज्य का लोकप्रिय स्वरूप राजतंत्रात्मक था। यद्यपि गणतंत्र राज्यों का भी उल्लेख मिलता है।
- राजा का पद वंशानुगत होता था। लेकिन राजा का निर्वाचन भी किया जाता था।
- राजा की सहायता के लिए सभा एवं समिति नामक परिषदें होती थीं।
- अथर्ववेद में सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है।

सामाजिक जीवन

वर्ण व्यवस्था

- वर्ण व्यवस्था की वास्तविक स्थापना उत्तर वैदिक काल में हुई।
- इस काल में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र चारों वर्णों में अन्तर स्पष्ट करने के लिए भेदपरक वर्ण व्यवस्था स्थापित हुई।
- इस काल में वर्णव्यवस्था जटिल होने लगी थी। वैश्यों को 'अनस्य बलिकृत' अर्थात् कर देने वाला तथा शूद्रों को

AKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

'अनस्य प्रेष्य' कहा गया है अर्थात् दूसरों की सेवा करने वाला।

- अश्पृश्यता (छुआछूत) का उल्लेख नहीं मिलता। शूद्र यज्ञ भी कर सकता था।

स्त्रियों की दशा

- इस काल में भी बाल विवाह का प्रचलन नहीं था। सोलह-सत्रह वर्ष की आयु में कन्या का विवाह किया जाता था।
- सगोत्र विवाह वर्जित था।
- इस काल में भी स्त्रियों को शिक्षा-दीक्षा का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। स्त्रियां गुरु आश्रम में जाकर शिक्षा ग्रहण करती थीं।
- मैत्रायणी संहिता में स्त्रियों को असत्य भाषी कहा गया है। इसी ग्रंथ में स्त्रियों को मनुष्य की तीन बुराइयों में से एक बताया गया है। ये बुराइयाँ है शराब, जुआ, एवं स्त्री।

आश्रम व्यवस्था

- जीवन में क्रमबद्धता लाने के लिए तथा लौकिक एवं पारलौकिक सुख की प्राप्ति तथा मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए हिन्दू व्यवस्थाकारों ने आश्रम व्यवस्था की स्थापना की। आश्रमों की संख्या चार है।
- चारों आश्रमों का एक साथ वर्णन सर्वप्रथम जाबालोपनिषद में मिलता है।

चार आश्रम

1. **ब्रह्मचर्य आश्रम (जन्म से 25 वर्ष तक)**- शैक्षणिक उपलब्धियां एवं बौद्धिक विकास हेतु।
2. **गृहस्थ आश्रम (25 वर्ष-50 वर्ष तक)**- सामाजिक विकास हेतु धर्म, अर्थ, काम की प्राप्ति हेतु।
3. **वानप्रस्थ आश्रम (50 वर्ष-75 वर्ष तक)**- आध्यात्मिक उत्कर्ष हेतु
4. **सन्यास आश्रम (75 वर्ष -100 वर्ष तक)**- मोक्ष प्राप्त करना

- चारों आश्रमों में गृहस्थ आश्रम को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है।

संस्कार

- मनुष्य के स्वरूप को सुसंस्कृत एवं परिष्कृत करने के लिए संस्कारों की व्यवस्था की गई।
- संस्कारों का लोकप्रिय उद्देश्य अशुभ शक्तियों का निवारण करना तथा भौतिक समृद्धि प्राप्त करना था।
- हिन्दू धर्म में सोलह संस्कार सर्वाधिक लोकप्रिय हैं।

सोलह संस्कार

1. **गर्भाधान-** माँ के गर्भ में जीव की स्थापना।
2. **पुंसवन** -पुत्र प्राप्त हेतु
3. **सीमान्तोन्नयन** -गर्भिणी स्त्री के सुख सांत्वना हेतु
4. **जातकर्म-** शिशु के जन्म के समय
5. **नामकरण** - शिशु का नामकरण करना।
6. **निष्क्रमण** -घर से पहली बार बाहर निकलने पर।
7. **अन्नप्राशन**-पहली बार अन्न ग्रहण करने पर।
8. **चूड़ाकरण** - मुंडन संस्कार (पहली बार सिर मुड़ाने पर)
9. **कर्णवेधन** - जब शिशु का कान छेदा जाता है।
10. **विद्यारम्भ**-जब शिशु को अक्षर ज्ञान कराया जाता है।
11. **उपनयन** -जब बालक या कन्या गुरु आश्रम में प्रवेश करते हैं।
12. **वेदारम्भ**-जब पहली बार वेद का अध्ययन करते हैं।
13. **केशान्त**-जब बालक पहली बार दाढ़ी एवं मूंछ बनवाता है।
14. **समावर्तन-** शिक्षा पूर्ण होने पर गुरु द्वारा संपन्न।
15. **विवाह** -गृहस्थ जीवन प्रारम्भ करने के लिए।
16. **अन्त्येष्टि** - मृत्यु के बाद अंतिम संस्कार

कृषि

- उत्तरवैदिक काल में कृषि की महत्ता बढ़ गई। तैत्तिरीय उपनिषद में उल्लेख मिलता है कि अधिक अन्न पैदा करना

यही हमारा संकल्प होना चाहिए।

- शतपथ ब्राह्मण में व्यवस्थित ढंग से कृषि करने का उल्लेख मिलता है।
- काठक संहिता में उल्लेख मिलता है कि हल को खींचने के लिए 24 बैल लगाये जाते थे।

पशुपालन

- अथर्ववेद में गोवध करने वाले को मृत्युदंड का विधान किया गया है।

शिल्प-व्यवसाय

- ऋग्वैदिक व्यवसाय तो प्रचलित रहे लेकिन अनेक नये व्यवसाय भी प्रचलित हुए।
- श्याम अयस (लोहा) लोहित अयस (ताँबा) अयस् (कांसा) हिरण्य (सोना) रुप्य (चांदी) सीस (शीशा) त्रपु (रांगा) का उल्लेख मिलता है।

व्यापार

- इस काल में व्यापारियों को वणिक् कहा जाता था।
- व्यापारियों के अध्यक्ष को श्रेष्ठि कहा जाता था।
- इस काल में ब्याज पर धन देने का व्यवसाय भी प्रचलित था जिसे कुसीदी कहा जाता था।
- यजुर्वेद में सौ चम्पुओं वाली नाव का उल्लेख मिलता है।

धार्मिक जीवन

- उत्तर वैदिक काल में धार्मिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। एकेश्वरवाद की प्रवृत्ति मजबूत होने लगी।
- इस काल में पहले के कई महत्वपूर्ण देवताओं की महिमा घट गई, तथा नये देवता महत्वपूर्ण हो गये।
- प्रजापति इस काल के सर्वश्रेष्ठ देवता बन गये। इन्हें देवताओं का पिता कहा गया है।
- पूषन शूद्रों के देवता माने गये हैं।
- अग्नि की महत्ता बनी रही। इन्हें मनुष्यों एवं देवताओं के बीच मध्यस्थ के रूप में महत्व बना रहा।

वैदिक काल से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

- ऋग्वेद के दो से सात तक के मंडल सबसे प्राचीन हैं। इन्हें वंश मंडल भी कहा जाता है।
- गायत्री मंत्र की रचना ऋग्वेद के तीसरे मंडल में हुई है। इसके दृष्टा विश्वामित्र हैं।
- दाशराज युद्ध परुषणी नदी के तट पर लड़ा गया था।
- ऋग्वेद में वर्णित अनु, द्रुह्य, तुर्वश, यदु एवं पुरु कबीलों को पंचजन कहा गया है।
- ऋग्वेद में नियमित सेना का उल्लेख नहीं मिलता। इस काल में सेना को पृत/पृतना कहा गया था।
- बोगजकुई अभिलेख में हित्ती एवं मितानी नामक दो कबीलों के बीच हुई संधि का उल्लेख है।
- वैदिक साहित्य में सप्त सैंधव प्रदेश को 'देवकृतयोनि' अर्थात् देवताओं द्वारा निर्मित क्षेत्र कहा गया है।
- बाल गंगाधर तिलक ने 'द आर्कटिक होम ऑफ द आर्यन्स' नामक पुस्तक लिखी। इन्होंने आर्यों का मूल स्थान उत्तरी ध्रुव बताया।
- तैत्तिरीय उपनिषद में उल्लेख मिलता है कि सदा सत्य बोलो तथा सदा धर्म का पालन करो।
- ऋग्वैदिक काल में शिक्षा का स्वरूप मौखिक था।
- ऋग्वैदिक विधार्थियों की तुलना बरसाती मेढक से की गई है।
- ऋग्वैदिक काल में गाय के लिए युद्ध हो जाते थे, इसलिए युद्ध को गविष्ठि कहा जाता था।
- राज्याभिषेक ब्राह्मण क्षत्रीय एवं वैश्य मिलकर 17 प्रकार के जल से करते थे।
- स्त्री विद्यार्थियों की भी दो श्रेणी होती थी।

1. सद्योवधू - 16-17 वर्ष की उम्र तक गुरु आश्रम में रहकर

शिक्षा प्राप्त करने वाली कन्यायें।

2. ब्रह्मवादिनी-अधिक समय तक या जीवनपर्यंत गुरु के पास रहकर शिक्षा प्राप्त करने वाली।

- शुल्व सूत्र में यज्ञवेदी के निर्माण की तकनीक मिलती है।
- ऋग्वेद में इन्द्र को युद्ध देवता समझा जाता था।
- 'गोत्र' शब्द की उत्पत्ति 'गोष्ठ' शब्द से हुई है। 'गोष्ठ' का अर्थ उस स्थान से है जहां सामूहिक रूप में गाय रहती थीं। गोत्र शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में हुआ है।

प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन

जैन धर्म

- जैन शब्द जिन् से बना हुआ है जिसका अर्थ है इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने वाला।
- जैन धर्म के आदि प्रवर्तक ऋषभदेव थे। इनका उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। अर्थात् जैन धर्म लगभग 1500 ई.पू. का है। इसकी प्राचीनता ऋग्वैदिककालीन है।
- जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हुए, ऋषभ देव प्रथम तीर्थंकर थे।
- जैन धर्म में 23वें एवं 24वें तीर्थंकर ऐतिहासिक पुरुष माने जाते हैं।
- जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे जिन्होंने निग्रंथ सम्प्रदाय की स्थापना की थी। इनके अनुयायी भी निग्रंथ (बँधनरहित) कहलाते थे।
- पार्श्वनाथ महावीर स्वामी से 250 वर्ष पहले हुए। महावीर स्वामी के माता-पिता भी निग्रन्थ सम्प्रदाय के अनुयायी थे।

महावीर स्वामी

- जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक महावीर स्वामी थे। ये जैन धर्म के 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर थे।
- महावीर स्वामी का जन्म 540 ई.पू. अथवा 599 ई.पू. में कुंड ग्राम (बिहार) में हुआ था। इनके बचपन का नाम वर्धमान था।
- इनके पिता का नाम सिद्धार्थ था जो कुंडग्राम के ज्ञात्रिक वंश के शासक थे।
- 30 वर्ष की आयु में महावीर स्वामी अपने बड़े भाई नंदिवर्धन से आज्ञा लेकर गृह त्याग किया।
- 12 वर्षों की कठोर तपस्या के बाद बिहार में जम्भिय ग्राम के निकट ऋजुपालिका नदी के किनारे एक शाल वृक्ष के नीचे इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद महावीर स्वामी ने अपना पहला धर्मोपदेश राजगृह में बराकर नदी के तट पर विपुलचल पहाड़ी में दिया।
- महावीर स्वामी का प्रथम भिक्षु उनका दामाद जमालि बना।
- प्रथम भिक्षुणी चंदना बनीं जो चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री थीं।
- महावीर स्वामी के प्रधान शिष्यों को गणधर कहा जाता था। इनकी संख्या 11 थी।
- इन 11 गणधरों का उल्लेख आवश्यक निर्मुक्ति एवं आवश्यक चूर्णि नामक ग्रंथों में मिलता है।
- लिच्छिवि नरेश चेटक, चम्पा नरेश दधिवाहन एवं मगध सम्राट अजातशत्रु महावीर स्वामी के शिष्य बने।
- महावीर स्वामी ने प्राकृत भाषा में अपने धर्म का प्रचार किया।
- महावीर स्वामी की मृत्यु 72 वर्ष की उम्र में बिहार में पावा के शासक सास्तिपाल के महल में हुई।

निर्वाण प्राप्ति का सिद्धान्त

- जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक जीव को अपने-अपने कर्मों के अनुसार विभिन्न योनियों में पुनर्जन्म लेना पड़ता है।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

- कर्मफल से विमुक्ति ही निर्वाण (मोक्ष) है। जैन धर्म में मृत्यु के बाद निर्वाण की प्राप्ति होती है।

जैनधर्म के त्रिरत्न

1. **सम्यक् श्रृद्धा/दर्शन-** जैन तीर्थंकरों एवं उनके बताये गये मार्गों पर पूर्ण विश्वास करना ही सम्यक श्रद्धा या सम्यक दर्शन है।
2. **सम्यक् ज्ञान-** जीव एवं अजीव के वास्तविक स्वरूप को जानना अर्थात् जैन सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञान ही सम्यक् ज्ञान है।
3. **सम्यक् आचरण/चरित्र-** अच्छे कर्मों को करना तथा बुरे कर्मों का त्याग ही सम्यक् आचरण है।

पंचव्रत

- महावीर स्वामी ने अपने अनुयायियों को पाँच शिक्षाओं के पालन पर बल दिया है।

1. **सत्य-** सत्य बोलना, प्रिय बोलना, धर्मवार्ता करना ही सत्य है।
2. **अहिंसा -** प्राणी मात्र पर दया करना, किसी भी जीव की हिंसा न करना।
3. **अपरिग्रह-** धन का संचय न करना।
4. **अस्तेय-** चोरी न करना।
5. **ब्रह्मचर्य-** संयमपूर्ण जीवन जीना।

- पंचव्रतों में पहले चार शिक्षायें पार्श्वनाथ द्वारा दी गई हैं। जबकि महावीर स्वामी ने केवल ब्रह्मचर्य को जोड़ दिया।
- भिक्षुओं को ये 5 शिक्षायें 'पंचमहाव्रत' के रूप में हैं अर्थात् कठोरता से इनका पालन करना होगा।
- श्रावकों (गृहस्थों) के लिए ये 5 शिक्षायें 'पंचअणुव्रत' के रूप में है अर्थात् आंशिक रूप से पालन करना है।
- जैन धर्म के अनुसार एक भिक्षु में भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी सहते हुए तपस्या करने की क्षमता या योग्यता होनी चाहिए। इसे ही 'परिषा' कहा गया है।
- जैन धर्म में श्रावकों को निर्देश दिया गया है कि यदि वे किसी महान संकट से छुटकारा पाने में असमर्थ हैं तो उन्हें भोजन-पानी का त्याग कर प्राणों का अंत कर देना चाहिए इसे ही जैन धर्म में 'संल्लेखना' कहा गया है।
- जैन धर्म इस रूप में अनिश्वरवादी है कि वह देवताओं को स्वीकार करता है लेकिन विश्व व्यवस्था में उसका कोई योगदान स्वीकार नहीं करता।
- जैन धर्म के अनुसार विश्व शाश्वत है। यह अनेक चक्रों में विभक्त है। प्रत्येक चक्र में दो अवधियाँ हैं 1. उत्सर्पिणी (विकास की अवधि) 2. अवसर्पिणी (..ह्रास... की अवधि)। इन चक्रों में 24 तीर्थंकर सहित 63 शलाकापुरुष (महान पुरुष) निवास करते हैं।
- जैन धर्म स्यादवाद के सिद्धांत को स्वीकार किया। स्यादवाद कहने वाले के कथन की एक ऐसी शैली है जिससे कथन का गुणात्मक अभिप्राय प्रकट होता है। असत्य भाषण एवं वैचारिक मतभेदों से बचने के लिए स्यादवाद को जैन धर्म में स्थान दिया गया है।
- इन द्रव्यों को अस्तिकाय (जो स्थान घेरता है) एवं अनस्तिकाय (जो स्थान नहीं घेरता) दो भागों में विभाजित किया गया है।
- अस्तिकाय के अन्तर्गत जीव एवं अजीव आते हैं। अजीव के अन्तर्गत धर्म, अधर्म, पुद्गल एवं आकाश में चार तत्व है।
- अनस्तिकाय के अन्तर्गत काल आता है।
- इस प्रकार जैन धर्म के अनुसार जगत का निर्माण कुल छह पदार्थों से माना जाता है।

जैन संघ में प्रथम फूट

- जैन संघ से अलग होने वाला प्रथम व्यक्ति महावीर स्वामी का दामाद जमालि था।
- महावीर स्वामी के ज्ञान प्राप्ति के 12वें वर्ष में जमालि क्रियमाणकृत अर्थात् 'कार्य प्रारम्भ करते ही कार्य पूरा' सिद्धान्त के कारण जैन संघ से अलग हो गया।

जैन संघ में विभाजन

- हेमचन्द्र द्वारा रचित परिशिष्टपर्वन नामक ग्रंथ से पता चलता है कि मौर्य शासक चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में मगध में 12 वर्षों का अकाल पड़ा। अकाल के समय भद्रबाहु के नेतृत्व में जैन भिक्षुओं का एक दल मैसूर में श्रवणबेलगोला क्षेत्र में चला गया, जबकि स्थूलभद्र के नेतृत्व वाला जैन साधुओं का दल यहीं रुका रहा।
- इस प्रकार जैन धर्म दो सम्प्रदायों में विभक्त हो गया।

1. **श्वेताम्बर सम्प्रदाय**- स्थूलभद्र के नेतृत्व में उनके अनुयायी श्वेत वस्त्र धारण करने के कारण श्वेताम्बर कहलाये।
2. **दिगम्बर सम्प्रदाय**-भद्रबाहु के नेतृत्व में उनके अनुयायी निर्वस्त्र रहने के कारण दिगम्बर कहलाये।

श्वेताम्बर एवं दिगम्बर सम्प्रदाय में अन्तर

श्वेताम्बर

- इसके प्रवर्तक स्थूलभद्र थे।
- ये श्वेत वस्त्र धारण करते थे।
- इनके अनुसार महावीर स्वामी का विवाह हुआ था और उनके एक पुत्री भी थी।
- इनके अनुसार 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ स्त्री थे।
- इनके अनुसार ज्ञान प्राप्ति के बाद भी भोजन आवश्यक है।

दिगम्बर

- इसके प्रवर्तक भद्रबाहु थे।
- ये निर्वस्त्र रहते थे।
- इनके अनुसार महावीर स्वामी अविवाहित थे।
- इनके अनुसार मल्लिनाथ पुरुष थे।
- इनके अनुसार ज्ञान प्राप्ति के बाद भोजन आवश्यक नहीं है।

जैन संगीतियाँ

- किसी भी धर्म की बिखरी हुई परम्पराओं को एक जगह संकलित करने के उद्देश्य से संगीतियों (धर्माचार्यों का सम्मेलन) का आयोजन किया जाता है।
- प्रथम जैन संगीति का आयोजन चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में पाटलिपुत्र में हुआ। इसके अध्यक्ष स्थूलभद्र थे।

जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक चिन्ह

तीर्थंकर का नाम	- प्रतीक चिन्ह
1. ऋषभदेव (आदिनाथ)	- वृषभ (बैल)
2. अजितनाथ	- गज (हाँथी)
3. संभवनाथ	- अश्व (घोड़ा)
4. अभिनंदननाथ	- कपि (बंदर)
5. सुमतिनाथ	- क्रौंच (कौवा)
6. पद्मप्रभु	- पद्म (कमल)
7. सुपार्श्वनाथ	- स्वास्तिक
8. चन्द्रप्रभु	- चन्द्रमा
9. पुष्पदंत (सुविधिनाथ)	- मकर (मगरमच्छ)
10. शीतलनाथ	- श्रीवत्स (आशीर्वाद सूचक हाँथ)
11. श्रेयांसनाथ	- गैंडा
12. वासुपूज्यनाथ	- महिष (भैंसा)
13. विमलनाथ	- वाराह
14. अनंतनाथ	- श्येन (गरुड़)
15. धर्मनाथ	- वज्र
16. शांतिनाथ	- मृग
17. कुन्थुनाथ	- अज
18. अरनाथ	- मीन
19. मल्लिनाथ	- कलश
20. मुनिसुव्रत	- कूर्म
21. नेमिनाथ	- नीला कमल
22. अरिष्टनेमि	- शंख
23. पार्श्वनाथ	- सर्पफण
24. महावीर	- सिंह

जैन साहित्य

- जैन साहित्य किसी एक काल की रचना नहीं है। इसका संकलन भिन्न-भिन्न कालों में हुआ।
- जैन साहित्य में जैन आगम सर्वोपरि है। आगम का अर्थ है सिद्धांत।
- जैन आगम के अन्तर्गत 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेदसूत्र, 1 नंदिसूत्र 1 अनुयोगद्वार एवं 4 मूल सूत्र हैं।

अन्य प्रमुख ग्रंथ

- **आचारांगसूत्र**-इसमें जैन भिक्षुओं के आचरण सम्बन्धी नियम संकलित हैं।
- **भगवती सूत्र**- इसमें महावीर स्वामी के जीवन एवं क्रियाकलापों का वर्णन है।
- **नायाधम्मकथासूत्र**-इसमें महावीर स्वामी की शिक्षायें संकलित हैं।
- **अंतगणदसाओसुत्त**-इसमें प्रमुख भिक्षुओं के निर्वाण प्राप्ति का वर्णन है। उपरोक्त सभी ग्रंथ प्राकृत अर्धमागधी भाषा में लिखे गये हैं।

AAKAR IAS
SHAPE YOUR DREAMS

बौद्ध धर्म

बुद्ध का जीवन परिचय

- महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ई.पू. अथवा 567 ई.पू. में लुम्बिनी वन (नेपाल की तराई) में हुआ था।
- इनका वास्तविक नाम सिद्धार्थ था।
- इनके पिता का नाम शुद्धोधन था जो कपिलवस्तु के शाक्यगण के मुखिया (राजा) थे।
- इनकी माँ का नाम महामाया था जो कोलिय वंश की राजकुमारी थीं। बुद्ध के जन्म के कुछ समय बाद इनकी मृत्यु हो गई।
- बुद्ध का पालन-पोषण इनकी मौसी महाप्रजापति गौतमी ने किया।
- 29 वर्ष की उम्र में महात्मा बुद्ध ने गृह-त्याग किया। इसे महाभिनिष्क्रमण के नाम से जाना जाता है।
- महात्मा बुद्ध उरुवेला के जंगल में तपस्या प्रारम्भ किया। कौंडिन्य सहित पाँच ब्राह्मण इनके पड़ोसी तपस्वी थे।
- उरुवेला में महात्मा बुद्ध शुजाता द्वारा लाई गई भोज्य सामग्री को ग्रहण कर लिया।
- ज्ञान प्राप्ति की घटना को सम्बोधि कहा गया है।
- प्रथम धर्मोपदेश की घटना को 'धर्मचक्र प्रवर्तन' के नाम से जाना जाता है।
- बुद्ध ने अपना प्रथमवर्षाकाल सारनाथ में व्यतीत किया।
- राजगृह में सारिपुत्र एवं मौद्गल्यायन नामक ब्राह्मणों को अपना शिष्य बनाया। ये दोनों सबसे चिंतनशील एवं प्रबुद्ध शिष्य थे।
- बुद्ध के चचेरे भाई देवदत्त भी इनका शिष्य बना। बुद्ध का यही शिष्य इनका सबसे बड़ा विरोधी था। इसने बुद्ध की तीन बार हत्या करने का असफल प्रयास किया।
- ज्ञान प्राप्ति के 5वें वर्ष में बुद्ध वैशाली गये यहीं पर बुद्ध ने अपने प्रिय शिष्य आनंद के कहने पर बौद्ध संघ में स्त्रियों को प्रवेश दिया। बुद्ध की मौसी महाप्रजापति गौतमी प्रथम भिक्षुणी बनीं।
- ज्ञान प्राप्ति के 20वें वर्ष में श्रावस्ती में अंगुलिमाल डाकू का हृदय परिवर्तन कराया।
- पावा से बुद्ध कुशीनारा पहुँचे और मल्लों के शालवन में रुके। यहाँ पर इन्होंने अपना अंतिम उपदेश सुभद्द को दिया।
- कुशीनारा में 80 वर्ष की उम्र में बुद्ध की मृत्यु हुई, इस घटना को महापरिनिर्वाण के नाम से जाना जाता है।

बौद्ध धर्म के सिद्धान्त

- बुद्ध के धर्म में चार आर्य सत्य का मूल योग था जिन्हें सत्य चतुष्टय कहा गया है। इन्होंने अपने धर्म के मूल में दुःख को रखा है।

चार आर्य सत्य

1. **दुःख**- बुद्ध के अनुसार संसार के सभी कष्टों का मूल दुःख है। जरा-मरण दुःख का सांकेतिक नाम है।
2. **दुःख समुदय**-इसके अन्तर्गत बुद्ध ने दुःख के कारणों को बताया है। दुःख के कारणों की व्याख्या के लिए 'प्रतीत्य समुत्पाद' नामक सिद्धान्त विकसित किया अर्थात् 'यह होने से-यह होगा'। जन्म होने से मृत्यु होगी अर्थात् मृत्यु का कारण जन्म है। इसी के अर्न्तगत द्वादश निदान की व्याख्या की गई है।
3. **दुःख निरोध**-(दुःखों का अंत) लोभ, मोह, तृष्णा, आसक्ति आदि का अंत ही दुख निरोध है। दुःख निरोध से निर्वाण की प्राप्ति होती है।
4. **दुःखनिरोध गामिनी प्रतिपदा**-इसके अंतर्गत बुद्ध ने दुःखों को दूर करने के लिए 8 मार्ग बताये हैं जिन्हें अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है।

अष्टांगिक मार्ग

1. **सम्यक दृष्टि**-नीर-क्षीर विवेकी दृष्टि ही सम्यक् दृष्टि है।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

सत्य-असत्य, पाप-पुण्य आचरण-दुराचरण में अंतर करना ही सम्यक दृष्टि है।

2. **सम्यक् संकल्प**-दृढ़तापूर्वक सांसारिक बंधनों का त्याग कर निवृत्तिमार्ग का अनुसरण करना ही सम्यक् संकल्प है।

3. **सम्यक् वाणी**-सत्य एवं प्रिय बोलना ही सम्यक् वाणी है।

4. **सम्यक् कर्मांत**-अच्छे कर्म करना ही सम्यक् कर्मांत है।

5. **सम्यक् आजीव**-जीवन यापन शुद्ध एवं न्यायपूर्ण प्रणाली ही सम्यक् आजीव है।

6. **सम्यक् व्यायाम**-दूसरों की भलाई करने का प्रयत्न करना ही सम्यक् व्यायाम है।

7. **सम्यक् स्मृति**- इसमें विवेक एवं स्मरण का पालन किया जाता है।

8. **सम्यक् समाधि**-चित्त की एकाग्रता ही सम्यक् समाधि है।

- अष्टांगिक मार्गों को तीन स्कंध में विभक्त किया गया है।

1. **प्रज्ञा**-इसके अर्न्तगत सम्यक् दृष्टि एवं सम्यक् संकल्प हैं।

2. **शील**-इसके अन्तर्गत सम्यक् वाणी सम्यक् कर्मांत सम्यक् आजीव एवं सम्यक् व्यायाम आते हैं।

3. **समाधि**-इसके अर्न्तगत सम्यक् स्मृति एवं सम्यक् समाधि आते हैं।

- बौद्ध धर्म कारणवाद, क्षणिकवाद, अनिश्वरवाद, कर्म एवं पुनर्जन्म पर विश्वास करता है।
- बौद्ध धर्म अनात्मवादी है अर्थात् आत्मा में विश्वास नहीं करता।

बौद्ध संगीतियाँ

प्रथम बौद्ध संगीति	द्वितीय बौद्ध संगीति	तृतीय बौद्ध संगीति	चतुर्थ बौद्ध संगीति
स्थल - राजगृह	वैशाली	पाटलिपुत्र	कुंडलवन (कश्मीर)
अध्यक्ष महाकश्यप	सर्वकामी (सुबुकामी)	मोग्गलिपुत्र तिष्य	वसुमित्र
शासक-अजातशत्रु	कालाशोक (काकवर्ण)	अशोक	कनिष्क
कार्य- विनयपिटक एवं	बौद्ध संघ में फूट	अभिधम्म पिटक	बौद्ध धर्म में विभाजन
एवं सुत्तपिटक का संकलन	बौद्ध भिक्षु दो वर्गों में विभक्ति हो गए 1. स्थिविर वादी 2. महासांघिक	का संकलन	1. हीनयान 2. महायान

हीनयान एवं महायान में अंतर

हीनयान	महायान
✸ यह बौद्ध धर्म का प्राचीन रूप है	-यह नवीन रूप है
✸ यह कठोर मार्ग है इसके द्वारा कम लोग निर्वाण की प्राप्ति कर सकते हैं	-यह सरल मार्ग है। इसके द्वारा अधिक लोग निर्वाण की प्राप्ति कर सकते हैं।
✸ यह बुद्ध को अलौकिक गुण वाला सामान्य पुरुष मानते हैं	-यह बुद्ध को भगवान मानते हैं।

हीनयान	महायान
✸ यह बुद्ध के प्रतीकों की पूजा करते हैं।	-यह बुद्ध की मूर्ति की पूजा करते हैं।
✸ इनके ग्रंथ पाली भाषा में रचे गये हैं।	इसके ग्रंथ संस्कृत भाषा में रचे गये हैं।
✸ ये कर्म एवं धर्म में विश्वास करते हैं।	-यह परोपकार में विश्वास करते हैं। इसमें बोधिसत्व का आदर्श ग्रहण किया है जो दूसरों का कल्याण करते हैं।
✸ इसका प्रचार प्रसार लंका, बर्मा थाईलैंड, कम्बोडिया आदि देशों में हुआ।	-इसका प्रचार-प्रसार चीन, तिब्बत, जापान, कोरिया आदि देशों में हुआ।

हीनयान के उप सम्प्रदाय

1. **वैभाषिक मत**-महाविभाषा नामक ग्रंथ में श्रृद्धा रखने के कारण वैभाषिक कहलाये। इस मत के प्रवर्तक वसुमित्र थे। वसुमित्र लिखित अभिधर्मकोष इसका महत्वपूर्ण ग्रंथ है।
2. **सौत्रांतिक मत**- सुत्त पिटक में श्रद्धा रखने के कारण सौत्रांतिक कहलाये। इस मत के प्रवर्तक कुमार लाट थे।

महायान के उप सम्प्रदाय

1. **योगाचार (विज्ञानवाद)**- इस मन के आदि प्रचारक मैत्रेयनाथ थे।
2. **शून्यवाद - (माध्यमिक दर्शन)**- इस मत के प्रवर्तक नागार्जुन थे।
3. **बौद्धन्याय (न्यायशास्त्र दर्शन)**- इस मत के प्रवर्तक दिङ्नाग थे।
4. **वज्रयान**-यह बौद्ध धर्म का तांत्रिक स्वरूप है। इस मत के प्रवर्तक असंग माने जाते हैं। इसमें तारा नामक देवियों की पूजा की जाती है।
5. **कालचक्रयान**-मंजुश्री को इसका प्रवर्तक माना जाता है।

बौद्ध साहित्य

✸ **त्रिपिटक**-ये मूल रूप में पाली भाषा में रचे गये हैं। इनकी संख्या तीन है।

1. **विनय पिटक**-इसमें भिक्षु एवं भिक्षुणियों के आचरण सम्बन्धी नियम हैं।
2. **सुत्त पिटक**-इसमें बौद्ध धर्म के उपदेश संकलित हैं।
3. **अभिधम्म पिटक**- इसमें बौद्ध धर्म की दार्शनिक व्याख्यायें दी गई हैं। इसका सबसे महत्वपूर्ण भाग कथावस्तु है जिसकी रचना मोग्गलिपुत्र तिष्य ने की है।

✸ **जातक कथायें**-ये मूल रूप में पालीभाषा में रचे गये हैं। इनकी संख्या 549 हैं। इनमें बुद्ध के पूर्वजन्मों की कथायें हैं।

✸ **अट्ठ कथायें**-अट्ठ कथायें त्रिपिटकों के भाष्य के रूप में लिखे गये हैं।

✸ **मिलिन्दपन्हो**- यह ग्रंथ पाली भाषा में रचा गया है। इसमें यूनानी राजा मिनेंडर एवं बौद्ध आचार्य नागसेन के बीच वार्तालाप है।

✸ **विशुद्धिमग्ग**-इसकी रचना बुद्ध घोष ने पाली भाषा में की है। इसे त्रिपिटक की कुंजी कहा जाता है। यह हीनयानियों का ग्रंथ है।

✸ **बुद्ध चरित**- इसकी रचना संस्कृत भाषा में हुई है। अश्वघोष द्वारा रचित यह एक महाकाव्य है। इसमें बुद्ध का जीवनवृत्त एवं उनकी शिक्षाओं का वर्णन है। इसे बौद्धों की रामायण कहा जाता है।

✸ **धम्म पद**-पाली भाषा में रचा गया है। इसे बौद्धों की गीता कहा जाता है।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के कारण

1. राजाश्रय का प्राप्त होना।
2. चारों वर्णों का सहयोग एवं आम जनता द्वारा स्वीकार किया जाना।
3. महात्मा बुद्ध का चतुर्मुखी व्यक्तित्व
4. जन-भाषा (पाली) में धर्म का प्रचार-प्रसार
5. संघ द्वारा प्रचार-प्रसार।
6. बौद्ध धर्म का प्रारम्भिक क्षेत्र मगध आर्य संस्कृति से अप्रभावित होना।
7. बौद्ध धर्म का सरल होना।

बौद्ध धर्म के पतन के कारण

1. ब्राह्मण धर्म का परिवर्तित रूप।
2. बौद्ध धर्म में व्याप्त बुराइयाँ
3. संघ द्वारा प्रचार-प्रसार की समाप्ति
4. बौद्ध धर्म में फूट
5. संस्कृत भाषा का प्रयोग
6. बौद्ध धर्म संघ में व्याप्त भ्रष्टाचार
7. बौद्ध भिक्षुओं का बौद्धिक रूप से निर्बल होना
8. राजाओं का आश्रय न मिलना।
9. तुर्कों का आक्रमण

बुद्ध से सम्बन्धित महत्वपूर्ण घटनायें व प्रतीक

✸ माता के गर्भ में आना	-	हांथी
✸ बुद्ध का जन्म	-	कमल
✸ गृह त्याग	-	घोड़ा
✸ ज्ञान प्राप्ति	-	बोधिवृक्ष
✸ प्रथम उपदेश	-	धर्मचक्र
✸ महापरिनिर्वाण (मृत्यु)	-	स्तूप

भागवत (वैष्णव) धर्म

- ✸ भगवान विष्णु को ईष्ट देव मानने वाले लोग वैष्णव कहलाते हैं और इनका धर्म वैष्णव धर्म कहलाता है।
- ✸ वैष्णव धर्म का प्राचीन रूप भागवत धर्म है।
- ✸ भागवत धर्म के अन्तर्गत वासुदेव (कृष्ण) की पूजा की जाती है।
- ✸ कृष्ण का सर्वप्रथम उल्लेख छांदोग्य उपनिषद में मिलता है। कृष्ण को वृष्णि वंश में उत्पन्न बताया गया है।
- ✸ गुप्त काल में वैष्णव धर्म का सर्वाधिक उत्कर्ष हुआ। इस काल के साहित्य एवं स्थापत्य दोनों में भागवत धर्म की जानकारी मिलती है।
- ✸ सभी गुप्त सम्राट भागवत धर्म के अनुयायी थे और परम भागवत की उपाधि धारण करते थे।
- ✸ उत्तर भारत की भाँति दक्षिण भारत में भी वैष्णव धर्म का प्रचार हुआ।
- ✸ दक्षिण भारत में वैष्णव संत आलवार के नाम से जाने जाते थे।
- ✸ आलवार संतों के गीतों का संकलन नायलार प्रबंधम् अथवा तमिल प्रबंधम् में किया गया है।

विष्णु के 10 अवतार

बाराह पुराण में सर्वप्रथम विष्णु के दसावतारों का उल्लेख मिलता है। 1. मत्स्यावतार 2. कूर्मावतार 3. वाराहावतार 4. नृसिंहावतार 5. वामनावतार 6. परशुराम 7. राम 8. कृष्ण 9. बुद्ध 10. कल्कि - भावी अवतार

शैव धर्म

- ✸ भगवान शिव को ईष्ट देव मानने वाले शैव कहलाये और इनका धर्म शैव धर्म है।
- ✸ शिव की प्राचीनता प्रागैतिहासिक है। हड़प्पा सभ्यता के अन्तर्गत शिव की पूजा उपासना के प्रमाण मिलते हैं।
- ✸ ऋग्वेद में शिव का उल्लेख रुद्र के रूप में मिलता है।

- कालिदास ने 'कुमार संभव' नामक महाकाव्य में शिव महिमा का वर्णन किया है।
- दक्षिण भारत में भी शैव धर्म का विकास हुआ। संगम साहित्य में शिव का वर्णन मिलता है।
- दक्षिण भारत में शैव संतों 'नयनार' के नाम से जाना जाता है।
- शैव ग्रंथ पेरियपुराणम् 63 नयनार संतों का उल्लेख है।
- शैव धर्म में पाशुपत मत के प्रवर्तक लकुलीश थे।

धर्म से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

- अष्टांगिक मार्ग का मूल श्रोत तैत्तिरीय उपनिषद है।
- मेगस्थनीज ने हेरीक्लीज (कृष्ण) एवं डायोनिसस (शिव) की पूजा का उल्लेख किया है।
- कापालिक सम्प्रदाय के ईष्टदेव भैरव हैं जिन्हें शिव का अवतार माना जाता है।
- वीरशैव सम्प्रदाय के प्रवर्तक बसव नामक एक ब्राह्मण था जो कलचुरि वंश के शासक विजय के मंत्री थे।
- कश्मीरी शैव सम्प्रदाय के प्रवर्तक वसुगुप्त थे।
- बौद्ध संघ में प्रवेश के लिए प्रवृज्या संस्कार होता था।
- बुद्ध, धम्म एवं संघ ये बौद्ध धर्म में त्रिरत्न के समान हैं।
- जैन धर्म के दिगम्बर सम्प्रदाय से सम्बन्धित यापनीय सम्प्रदाय था।
- प्रथम शताब्दी ई.पू. में कलिंग के चेदि वंश के शासक खारवेल ने जैन धर्म को संरक्षण दिया था।
- सर एडविन एर्नाल्ड की पुस्तक 'द लाइट ऑफ द एशिया' ललित विस्तार पर आधारित है।
- बुद्ध का ज्ञान प्राप्ति स्थल बोध गया 'निरंजना' नदी के तट पर स्थित है।

AAKAR IAS
SHAPE YOUR DREAMS

- महात्मा बुद्ध को 'एशिया के ज्योति पुंज' के रूप में जाना जाता है।
- विश्व का सबसे ऊँचा कहा जाने वाला विश्व शांति स्तूप बिहार में 'राजगीर' की पहाड़ियों पर स्थित है। यह लगभग 400 मीटर ऊंचाई पर स्थित है।
- चीनी मान्यता के अनुसार नागार्जुन ने प्रथम शताब्दी ई. में चीन की यात्रा की और यहां लोगों को बौद्ध शिक्षा प्रदान की।
- भागवत धर्म के अन्तर्गत भक्ति के रूपों की संख्या 9 बताई गई है।
- भागवद्गीता मोक्ष के साधन के रूप में जन्म, कर्म तथा भक्ति को समान महत्व देता है।
- वासुदेव कृष्ण की पूजा सर्वप्रथम भागवतों ने प्रारम्भ किया।

महाजनपद काल

- बुद्धकालीन भारत की पहली विशेषता जो राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थी वह है विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति अर्थात् इस समय भारत छोटी-छोटी अनेक राजनीतिक इकाईयों में विभक्त था।
- ये राज्य आपस में संघर्ष करते रहते थे इसीलिए इस काल को 'संघर्षरत जनपदों' का युग कहा जाता है।
- विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति के बावजूद इस काल में केन्द्रीयकरण के प्रयास प्रारम्भ हो गये थे।
- इस काल में राजतंत्र के साथ-साथ अनेक गणराज्यों का भी उदय हुआ।
- इस काल के सोलह महाजनपदों में द. भारत के केवल एक अश्मक जनपद का ही उल्लेख मिलता है। यह तथ्य दर्शाता है की उत्तर भारत के दक्षिण भारत के साथ घनिष्ठ सम्पर्क नहीं था।
- बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है, जो सर्वाधिक प्रामाणिक सूची मानी जाती है।

बुद्धकालीन भारत के सोलह महाजनपद

महाजनपद	राजधानी	राजा	वर्तमान स्थिति
1. अंग	चम्पा	ब्रह्मगुप्त	पूर्वी बिहार एवं प. बंगाल
2. मगध	राजगृह	बिम्बिसार एवं अजातशत्रु	बिहार
3. काशी	वाराणसी	कोशल के अधीन	उ.प्र. में वाराणसी के आसपास
4. कोशल	श्रावस्ती	प्रसेनजित	उ.प्र. फैजाबाद श्रावस्ती आदि जिले
5. वज्जि संघ	वैशाली	8 गणराज्यों का संघ	उ.प्र. बिहार पूर्वी उ.प्र.
6. मल्ल संघ	कुशीनारा एवं पावा	—	पूर्वी उ.प्र.
7. चेदि	शक्तिमती (सोत्थवती)	—	बुन्देलखंड
8. वत्स	कौशाम्बी	उदयन	इलाहाबाद के आसपास
9. कुरु	इन्द्रप्रस्थ	—	दिल्ली, मेरठ एवं हरियाणा
10. पांचाल	अहिक्षत एवं काम्पिल्य	—	रुहेलखंड
11. मत्स्य	विराटनगर	—	राजस्थान
12. शूरसेन	मथुरा	—	प.उ.प्र.
13. अश्मक	पोतन/ पोटली	—	महाराष्ट्र/आँध्रप्रदेश
14. अवंति	उज्जयिनी एवं महिष्मती	चंड प्रद्योत	मध्य प्रदेश
15. गांधार	तक्षशिला	पुष्कर सरीन	पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान
16. काम्बोज	हाटक/ राजपुर	—	उ अफगानिस्तान

मगध का उत्कर्ष

हर्यक वंश - 544 ई.पू. - 412 ई.पू.

बिम्बिसार (544-492 ई.पू.)

- यह इस वंश का प्रथम शासक था। इसकी प्रारम्भिक राजधानी गिरिब्रज थी। बाद में इसने राजगृह को अपनी राजधानी बनाई।
- बिम्बिसार अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए वैवाहिक एवं मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों पर बल दिया।
- मद्र देश की राजकुमारी क्षेमा/खेमा से भी विवाह किया बिम्बिसार की यही पत्नी (क्षेमा/खेमा) बौद्ध भिक्षुणी बन गई थी।
- बिम्बिसार का अवंति के शासक चंड प्रद्योत के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे।
- एक बार चंड प्रद्योत पांडुरोग से ग्रस्त हो गया तब बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को इसके इलाज हेतु उज्जयिनी भेजा था। जो इसके मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध को दर्शाता है।
- बिम्बिसार बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- बिम्बिसार ने अंग पर आक्रमण कर यहां के शासक ब्रह्मगुप्त को पराजित कर उसका वध कर दिया और अंग को मगध में मिला लिया। यह मगध की प्रथम विजय थी।

अजातशत्रु (492 ई.पू.-461ई.पू.)

- अजातशत्रु अपने पिता बिम्बिसार की हत्या करके गद्दी प्राप्त की थी।
- मगध का शासक बनने से पहले यह अंग का गवर्नर था।
- अजातशत्रु का प्रथम युद्ध कोशल नरेश प्रसेनजित से हुआ जिसमें दोनों ने एक-एक युद्ध में विजय प्राप्त की। अंततः दोनों में संधि हो गई। संधि के अनुसार प्रसेनजित ने अपनी पुत्री वज्जिरा का विवाह अजातशत्रु के साथ कर दिया एवं काशी ग्राम की आय दहेज रूप में पुनः दे दिया।
- अजातशत्रु का दूसरा युद्ध वैशाली के शासक चेटक के साथ हुआ इस युद्ध में अजातशत्रु ने रथमूसल एवं महाशिलाकंटक नामक दो गुप्त युद्धास्त्रों का प्रयोग किया। अंततः चेटक पराजित हुआ और वैशाली को मगध में मिला लिया गया।
- प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन इसके शासनकाल में राजगृह में हुआ था।
- इसी के समय में महावीर स्वामी एवं महात्मा बुद्ध दोनों की मृत्यु हुई।
- इसने बुद्ध के भष्मावशेष पर राजगृह में स्तूप का निर्माण कराया।

उदायिन (461ई.पू. - 445 ई.पू.)

- इसने राजगृह के स्थान पर पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाई।

शिशुनाग वंश (412 ई. पू. - 344 ई. पू.)

शिशुनाग (412 ई.पू.-394 ई.पू.)

- इसने पाटलिपुत्र के स्थान पर वैशाली को अपनी राजधानी बनाई।

कालाशोक (काकवर्ण) (394-366 ई. पू.)

- इसने वैशाली के स्थान पर पुनः पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाई।

नंद वंश (344 ई.पू.-322ई. पू.)

महापद्मनंद (344 ई.पू. - 326 ई. पू.)

- नंद वंश का संस्थापक एवं प्रथम राजा महापद्मनंद था।
- पुराणों में उल्लेख मिलता है कि नंद वंश के शासक शूद्र थे।
- महापद्मनन्द इस वंश का सबसे महान शासक था। इसने अनेक क्षत्रिय राज्यों को जीतकर अपने राज्य में सम्मिलित किया।

AKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

- कलिंग नरेश खारवेल के हाँथी गुँफाअभिलेख से पता चलता है कि महापद्मनंद ने कलिंग विजय की और यहां से एक जिन मूर्ति अपने साथ मगध ले आया।
- इसने कलिंग में सिंचाई हेतु एक नहर का निर्माण कराया।

घनानंद (326 ई.पू. - 322 ई.पू.)

- इसके समय में 326 ई.पू. में मकदूनिया का यूनानी शासक सिकन्दर ने पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण करके यहाँ यूनानी सत्ता की नींव रखी।
- 322 ई.पू. में चन्द्रगुप्त एवं कौटिल्य ने मगध पर आक्रमण किया। जिसमें घनानंद पराजित हुआ इस प्रकार नंद वंश का अंत हो गया और मौर्य वंश की स्थापाना हुई।

महत्वपूर्ण तथ्य

- मगध का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है।
- बिम्बिसार के राजवैद्य जीवक की मां का नाम शालवती था, जो एक नर्तकी (वेश्या) थी।
- वत्स नरेश उदयन बहुत अच्छा वीणावादक था। इसे हांथी पकड़ने का भी ज्ञान था।
- महापद्मनंद ने कलिंग में एक नहर का निर्माण कराया था।

मौर्य साम्राज्य

स्रोत

1. साहित्यिक श्रोत

- **अर्थशास्त्र**-इसकी रचना कौटिल्य ने संस्कृत भाषा में किया है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण, 180 प्रकरण एवं 4000 श्लोक हैं।
- **इण्डिका**-यह मेगस्थनीज द्वारा यूनानी भाषा में लिखी गई है।
- यूनानी लेखकों स्ट्राबो, एरियन, प्लूटार्क तथा प्लिनी ने इण्डिका के महत्वपूर्ण अंशों के आधार पर ग्रंथ लिखे।
- इण्डिका के इन महत्वपूर्ण अंशों को हर जगह से एकत्रित कर शावनबेक ने नयी इण्डिका का संकलन किया था।

2. अभिलेखीय स्रोत

- अशोक के अभिलेख तथा रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख

चन्द्रगुप्त मौर्य- (322-298 ई. पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य मौर्य वंश का प्रथम शासक तथा संस्थापक था।
- चन्द्रगुप्त के पिता मोरिय वंश के क्षत्रियों का सरदार था।
- मुद्राराक्षस, कथासरितसागर जैसे ब्राह्मण ग्रंथ मौर्यों को शूद्र मानते हैं।
- पुराण नन्दों को शूद्र मानते हैं तथा चन्द्रगुप्त को नंद की पत्नी मुरा से उत्पन्न मानते हैं।
- यूनानी लेखक जस्टिन ने चन्द्रगुप्त को निम्न कुल से उत्पन्न बताया है। स्पूनर ने इसे पारसी माना है।
- रोमिला थापर ने मौर्यों को वैश्य बताया है।

चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्यारोहण

- चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यारोहण की तिथि 322 ई.पू. मानी जाती है।
- 28 फरवरी 1793 में सर विलियम जोन्स ने सर्वप्रथम उपरोक्त नामों का समीकरण चन्द्रगुप्त मौर्य से किया था।
- **साम्राज्य विस्तार**-जैन ग्रंथ परिशिष्टपर्वन के अनुसार 'कौटिल्य ने भूगर्भ से प्राप्त धन से चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए एक सेना का निर्माण किया।'
- चन्द्रगुप्त तथा कौटिल्य ने सर्वप्रथम 322 ई. पू. में पंजाब पर आक्रमण कर वहां के यूनानी गवर्नर फिलिप की हत्या कर दिया।
- पंजाब विजय चन्द्रगुप्त मौर्य की प्रथम विजय थी।
- पंजाब के बाद चन्द्रगुप्त तथा कौटिल्य ने पुनः 321 बी.सी. में मगध पर आक्रमण कर उसे जीत लिया।

SHAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

- मगध पर इस समय अंतिम नंद शासक धनानन्द का शासन था।
- 305 बी.सी. में सिकन्दर के सेनापति, सीरिया के शासक सेल्यूकस ने सिकन्दर द्वारा पूर्व में विजित भारतीय क्षेत्रों पर आक्रमण कर दिया।
- सेल्यूकस तथा चन्द्रगुप्त के मध्य सिंधुनदी के किनारे युद्ध हुआ।
- युद्ध में सेल्यूकस बुरी तरह पराजित हुआ तथा उसे चन्द्रगुप्त मौर्य से एक अपमानजनक संधि करनी पड़ी।

संधि की निम्न शर्तें थी

- सेल्यूकस अपनी पुत्री हेलना/कार्नेलिया का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य से किया।
- सेल्यूकस ने अपने 4 राज्य परोपनीषदी (काबुल), आरकोशिया (कंधार) एरिया (हेरात) तथा जेड्रोशिया (बलूचिस्तान) चन्द्रगुप्त मौर्य को देने पड़े।
- चन्द्रगुप्त तथा सेल्यूकस के मध्य राजनयिक सम्बंध स्थापित हुए तथा एक यूनानी राजदूत मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त के राज दरबार में रहने लगा।
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु मैसूर में श्रवणबेलगोला में चन्द्रगिरी पर्वत पर हुयी थी, इससे भी दक्षिण में साम्राज्य विस्तार की जानकारी होती है।
- रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में उल्लेख है कि चन्द्रगुप्त मौर्य के गवर्नर पुष्यगुप्त वैश्य ने सौराष्ट्र प्रान्त में सुदर्शन झील का निर्माण करवाया था।
- रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में ही उल्लेख है कि अशोक के गवर्नर तुसाष्प ने सुदर्शन झील का पुनः निर्माण करवाया था।
- रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख एकमात्र ऐसा अभिलेख है जिसमें चन्द्रगुप्त तथा अशोक दोनों का नाम एक साथ मिलता है।
- जैनाचार्य भद्रबाहु से प्रभावित होकर चन्द्रगुप्त मौर्य ने जीवन के अंतिम दिनों में जैन धर्म स्वीकार कर लिया था।

बिन्दुसार (298 -273 ई. पू.)

- बिन्दुसार चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र तथा सम्राट अशोक का पिता था।
- यूनानी इतिहासकारों ने बिन्दुसार को 'अमित्रोचेटस' कहा है।
- इसका संस्कृत में अर्थ 'अमित्रघात' होता है अर्थात शत्रुओं का नाश करने वाला।
- परिशिष्टपर्वन में बिन्दुसार का नाम बिन्दुसार मिलता है।
- दिव्यावदान के अनुसार उत्तरापथ की राजधानी तक्षशिला में बिन्दुसार के समय दो विद्रोह हुए।
- सीरिया के शासक एण्टियोकस प्रथम का राजदूत डाइमेकस बिन्दुसार के दरबार में रहता था।
- यूनानी लेखक एथेनियस के अनुसार बिन्दुसार ने पत्र-व्यवहार के माध्यम से एण्टियोकस प्रथम से तीन वस्तुओं— 1. अंगूरी मदिरा 2. अंजीर तथा 3 यूनानी दार्शनिक की माँग किया था।
- एण्टियोकस प्रथम ने दो वस्तुएं अंगूरी मदिरा तथा अंजीर भेजवा दिया था परन्तु यूनानी दार्शनिक की मांग को यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि यूनानी कानूनों के अनुसार दार्शनिक का क्रय-विक्रय नहीं किया जाता है।
- मिस्र नरेश टालमी फिलाडेल्फस द्वितीय ने अपना राजदूत डाईनिसियस को बिन्दुसार के दरबार में भेजा था।

अशोक (273-232 ई. पू.)

- बिन्दुसार की 16 रानियों से 101 पुत्र हुए जिनमें अशोक सर्वाधिक तेजवान था।
- अशोक का एक ही सगा भाई था जिसका नाम विगताशोक था।
- बौद्ध अनुश्रुतियों के अनुसार अशोक अपने 99 भाइयों को मारकर गद्दी प्राप्त किया था।

AADHAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

- अशोक का सिंहासनारोहण 273 बी.सी. में हो चुका था जबकि राज्याभिषेक 4 वर्ष पश्चात् 269 बी.सी. में हुआ।
- अशोकावदानमाला में अशोक की मां का नाम सुभद्रांगी बताया गया है।
- बौद्ध ग्रंथों में अशोक की कई पत्नियों के नामों का उल्लेख मिलता है।
  1. असंघिमित्रा
  2. महादेवी
  3. पद्मावती
  4. तिष्यरक्षिता
- अशोक के इलाहाबाद कौशाम्बी अभिलेख में अशोक की एक ही रानी कारुवाकी का उल्लेख मिलता है।
- अशोक के इलाहाबाद कौशाम्बी अभिलेख में एक ही पुत्र तीवर का उल्लेख है।
- 'देवनामप्रियप्रियदर्शी' अशोक की सर्वाधिक लोकप्रिय उपाधि थी।
- अशोक का नाम अशोक उसके 4 अभिलेखों में मिलता है।
  1. गुर्जरा (म.प्र.)
  2. मास्की (कर्नाटक)
  3. नेत्तूर - (कर्नाटक)
  4. उडेगोलन - कर्नाटक
- सर्वप्रथम 1915 में मास्की लघुशिलालेख में अशोक नाम पढ़ा गया।
- अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 8 वर्ष बाद 261बी.सी. में कलिंग विजय किया था।
- अशोक के कलिंग विजय की जानकारी उसके 13वें दीर्घशिलालेख से होती है।
- कलिंग विजय के पश्चात् अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया था।
- ह्वेनसांग के अनुसार उपगुप्त ने अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था।

मौर्यों का केन्द्रीय प्रशासन

- मौर्यकालीन केन्द्रीय प्रशासन कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत पर आधारित था।
- राजा का पद वंशानुगत होता था।
- राजा की सहायता के लिए मंत्रिण (उपसमिति) की नियुक्ति की गयी थी जिसमें प्रधानमंत्री, सेनापति, युवराज तथा मुख्य समाहर्ता आदि होते थे।
- यूनानी इतिहासकारों ने अध्यक्ष को मजिस्ट्रेट कहा है।

प्रमुख अध्यक्ष

- शुल्काध्यक्ष- व्यापार से प्राप्त कर/चुंगी एकत्रित करना।
- पौतवाध्यक्ष- माप तौल के मान को नियंत्रित करने वाला।
- सूत्राध्यक्ष- वस्त्रोद्योग मंत्री
- सूनाध्यक्ष- बूचड़खाने/चर्मउद्योग का अध्यक्ष।
- लक्षणाध्यक्ष- टकसाल का अध्यक्ष।
- अश्वाध्यक्ष- घोड़ों की देखभाल करने वाला।
- हस्त्याध्यक्ष- हाथियों की देखभाल करने वाला।
- अकाराध्यक्ष- खानमंत्री

मौर्यकालीन सैन्य व्यवस्था

- यूनानी इतिहासकारों के अनुसार चन्द्रगुप्त की सेना में 6 लाख पैदल, 30 हजार अश्वारोही, 9 हजार गज सेना, 8 हजार रथ सेना थी।
- मेगस्थनीज के अनुसार सेना की देखरेख के लिए अलग एक विभाग था। इस विभाग में 30 सदस्य थे।
- कौटिल्य के अनुसार राजा को सभी वर्गों के लोगों को सेना में नियुक्त करना चाहिए।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

- कौटिल्य के अनुसार राजा को परिस्थिति के अनुसार 3 प्रकार का युद्ध करना चाहिए—
- प्रकाशयुद्ध - आमने-सामने का युद्ध
- कूट युद्ध - चालाकी तथा छलबाजी से युद्ध
- तूष्णी युद्ध - अप्रत्यक्ष युद्ध/शत्रु राज्य में गृहयुद्ध छिड़वा देना।

गुप्तचर व्यवस्था

- मौर्य काल में जनतांत्रिक परिषदों के अभाव के कारण जनता के मनोभावों, विचारों, इच्छाओं, राजा के विरोधियों, विद्रोहियों अधिकारियों आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए सुदृढ़ गुप्तचर व्यवस्था की स्थापना की गयी थी।
- अर्थशास्त्र में गुप्तचरों को गूढ़ पुरुष कहा गया है।
- स्ट्राबो ने गुप्तचरों को इंसपेक्टर कहा है।
- **संस्था**-संस्था उन गुप्तचरों को कहा जाता था जो एक ही स्थान पर रहकर गुप्तचरी का कार्य करते थे।
- **संचरा**- संचरा उन गुप्तचरों को कहा जाता था जो राज्य में भ्रमण करते हुए गुप्तचरी का कार्य करते थे।
- विदेशों में नियुक्त गुप्तचरों को उभयवेतन कहा जाता था।

न्याय व्यवस्था

- मौर्य प्रशासन में सबसे बड़ा न्यायालय राजा का केन्द्रीय न्यायालय होता था।
- ग्राम न्यायालय में ग्रामिक ग्राम वृद्ध परिषद की सहायता से न्याय कार्य करता था।
- फौजदारी न्यायालय को कंटकशोधन कहा जाता था।
- दीवानी न्यायालय को धर्मस्थीय कहा जाता था।
- अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 26वें वर्ष तक 25 बार वृद्ध कैदियों को रिहा किया था।

राजस्व व्यवस्था

- मौर्य काल में वित्तीय (राजस्व) वर्ष आषाढ़ से ज्येष्ठ तक होता था।
- **भाग**-स्वतंत्र रूप से खेती करने वाले किसानों से लिया जाने वाला भूमि कर।
- अशोक ने लुम्बिनी का भाग घटाकर 1/8 कर दिया था।

बिक्री कर

- **हिरण्य कर**- नकद कर था।
- **उदक भाग**- सिंचाई कर था।

नगर प्रशासन

- मौर्य कालीन नगर प्रशासन की सर्वोत्कृष्ठ जानकारी 'इण्डिका' से मिलती है।
- मेगस्थनीज ने नगर प्रशासन के सम्बंध में पोलिब्रोथा (पाटलिपुत्र) का विवरण दिया है।
- मेगस्थनीज के अनुसार पोलिब्रोथा में नगर प्रशासन के लिए 30 सदस्यीय एक सभा थी जिसमें 5-5 सदस्यों की 6 समितियाँ थी।
- मेगस्थनीज के अनुसार नगर का प्रमुख अधिकारी एस्ट्रोनोमोई होता था।

अन्य प्रशासनिक इकाईयाँ

- मौर्य काल में साम्राज्य प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से अनेक प्रांतों में विभक्त था। प्रांतों को चक्र कहा जाता था।
- मौर्य साम्राज्य अपनी पूर्णता के समय 5 चक्रों में विभक्त था।
- प्रत्येक चक्र में सम्राट द्वारा एक प्रान्तपति की नियुक्ति की जाती थी जिसे 'कुमार' कहा जाता था।

अशोक के अभिलेख

- अशोक के अभिलेखों की खोज सर्वप्रथम टिफेन्थैलर नामक एक पादरी ने 1750 ई. में की थी।
- सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने 1837 में अशोक के अभिलेखों को पढ़ा। इन्होंने दिल्ली-टोपरा अभिलेख को पढ़ा था।

- अशोक के अभिलेखों की मूल भाषा प्राकृति है।
- अशोक के अभिलेखों में कुल 4 लिपियों का प्रयोग हुआ है—1. ब्राह्मी लिपि 2. खरोष्ठी लिपि 3. आरमाइक लिपि 4. यूनानी लिपि

अशोक के अभिलेखों का वर्गीकरण				
दीर्घ शिलालेख	**लघु शिलालेख**	**दीर्घ स्तंभलेख**	**लघु स्तंभ लेख**	**अन्य**
• दीर्घ शिलालेख प्राकृतिक चट्टानों पर लिखे गये लम्बे लेख हैं। • इसमें प्रशासन एवं धम्म से सम्बन्धित लेख है। • इनमें कुल 14 बातें (लेख) हैं। इसीलिए इन्हें चर्तुदश लेख कहा जाता है। • ये 8 स्थानों से प्राप्त हुए हैं। • दीर्घ शिलालेख में ब्राह्मी एवं खरोष्ठी लिपि का प्रयोग हुआ है।	• लघु शिलालेख भी प्राकृतिक चट्टानों पर लिखे गये छोटे लेख हैं। • इनमें अशोक के व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित लेख हैं। • में 20 से अधिक स्थानों से प्राप्त हुए हैं। • इनमें ब्राह्मी लिपि में लेख लिखे गये हैं।	• ये पत्थर के स्तंभ पर लिखे गये लम्बे लेख हैं। • इनमें अशोक के प्रशासन एवं धम्म से सम्बन्धित बातें है। • इनमें अधिकतम 7 बातें हैं। • सातवाँ लेख केवल दिल्ली-टोपरा स्तंभलेख में है। • ये कुल 6 स्थानों से प्राप्त हुए हैं। • इनमें ब्राह्मीलिपि का प्रयोग हुआ है।	• ये पत्थर के स्तभों पर लिखे गये छोटे लेख हैं। • इनमें अशोक के प्रशासनिक निर्देश हैं • ये कुल 5 स्थानों से प्राप्त हुए हैं। • ये केवल ब्राह्मी लिपि में हैं।	• गुहालेखा बराबर की पहाड़ी में अशोक ने 4 गुफायें बनवायी इसी में लेख लिखवाये। • द्विभाषिक लेख • सर-ए-क्यूना से प्राप्त हुआ है इसमें यूनानी एवं आरमाइक लिपि में लेख हैं

- धौली एवं जौगढ़ से प्राप्त दीर्घशिलालेख में लेख नं. 11, 12 एवं 13 नहीं मिलते। यहां से दो पृथक लेख मिलते हैं।
- पाकिस्तान से प्राप्त दीर्घशिलालेखों की लिपि खरोष्ठी है।
- भाब्रू लघु शिलालेख में अशोक द्वारा बौद्ध धर्म में आस्था व्यक्त किये जाने का उल्लेख है।
- भाब्रू लघु शिलालेख में अशोक ने स्वयं को मगध का राजा कहा है।
- येर्रागुडी से दीर्घ एवं लघुशिला लेख दोनों प्राप्त होते हैं।
- द्वितीय दीर्घशिलालेख में अशोक द्वारा अपने साम्राज्य एवं पड़ोसी राज्यों में मनुष्यों एवं पशुओं की चिकित्सा का प्रबंध कराये जाने का उल्लेख है।
- रुम्मिनदेई स्तंभ लेख में अशोक द्वारा बलि नामक कर समाप्त करने एवं भूमिकर घटा कर 1/8 करने का उल्लेख है।
- इलाहाबाद-कौशाम्बी लघु स्तंभ लेख को रानी का अभिलेख कहा गया है।
- प्रथम पृथक अभिलेख में अशोक कहता है कि सभी मनुष्य मेरी संतान के समान है।

- पाँचवें दीर्घ शिलालेख में अशोक द्वारा अपने अभिषेक के 13वें वर्ष में धर्ममहामात्र नामक अधिकारी की नियुक्ति किये जाने का उल्लेख है।
- तेरहवें दीर्घशिलालेख में कलिंग युद्ध का वर्णन है।

सामाजिक व्यवस्था

- कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में परम्परागत 4 वर्णों का उल्लेख किया है।
- मेगस्थनीज ने चातुर्वर्ण व्यवस्था का उल्लेख नही किया था किन्तु उसने आर्थिक आधार पर भारतीय समाज को 7 वर्णों में बांटा है—

1. **दार्शनिक**-इसके अन्तर्गत पुजारी, भिक्षु तथा विद्वान आदि आते थे।
2. **कृषक**-मेगस्थनीज ने 7 वर्गों में कृषकों की संख्या सर्वाधिक बताया है।
3. **पशुपालक**-ये पशुपालन का कार्य करते थे।
4. **व्यापारी शिल्पी**-ये अधिकांशतः नगरों में निवास करते थे।
5. **सैनिक**- समाज में किसानों के बाद सैनिक सर्वाधिक संख्या में थे।
6. **निरीक्षक**-ये समाज में व्यवस्था का निरीक्षण करते थे।
7. **मंत्री**- समाज में इसके अन्तर्गत शासक वर्ग आता था।

दास प्रथा

- मार्य कालीन समाज में दास प्रथा प्रचलित थी।

स्त्रियों की दशा

- स्त्रियों की स्थिति में पहले की अपेक्षा गिरावट आयी थी।
- समाज में 8 प्रकार के विवाह होते थे।
- विधवा तथा पुनर्विवाह होते थे।
- पुनर्विवाह करने वाली स्त्रियों को पुनर्भू कहा जाता था।

आर्थिक जीवन

कृषि

- कौटिल्य ने कृषि, पशुपालन तथा वाणिज्य को सम्मिलित रूप से 'वार्ता' कहा है। मेगस्थनीज के अनुसार मौर्यकालीन भारतीय समाज में 7 वर्गों में कृषकों की संख्या सर्वाधिक थी।
- मौर्यकाल में कृषक स्वतंत्र रूप से कृषि करते थे परन्तु राज्य द्वारा भी सीताध्यक्ष की देखरेख में कृषि करवायी जाती थी।
- चन्द्रगुप्त ने सौराष्ट्र में पुष्यगुप्त वैश्य के नेतृत्व में सुदर्शन झील का निर्माण करवाया था।
- अर्थशास्त्र के अनुसार वर्ष में 3 फसलें उगायी जाती थीं—

हैमन-रबी की फसल

ग्रैष्मिक- खरीफ की फसल

केदार- जायद की फसल

उद्योग

- मौर्यकाल में अनेक प्रकार के उद्योग थे जो कि राजनियंत्रित होते थे।
- मौर्यकाल में कर्मान्तिक साम्राज्य के उद्योग धन्धों का प्रधान नियंत्रक होता था।
- मौर्यकाल में वस्त्रोद्योग सर्वाधिक महत्वपूर्ण था।
- भारत में मौर्यकाल में सोना निकालने वाली चीटियां भी पायी जाती थीं।

व्यापार

- मौर्यकाल में व्यापार जल तथा स्थल दोनों मार्गों से होता था।
- व्यापारियों के काफिले चलते थे जिन्हें सार्थ कहा जाता था।
- व्यापारिक काफिले के नेतृत्व करने वाले को सार्थवाह कहा जाता था।
- अर्थशास्त्र के अनुसार चीन का बना रेशमी वस्त्र चीन पट्ट भारत में अत्यधिक लोकप्रिय था।

AAKAR IAS
SHAPE YOUR DREAMS

- भारत के पश्चिमी तट पर भरुकच्छ तथा सोपारा बन्दरगाह थे।
- भारत के पूर्वीतट पर बंगाल में ताम्रलिप्ति बन्दरगाह था।

मुद्रा

- मुद्रा के निर्गमन का अधिकार लक्षणाध्यक्ष नामक अधिकारी को था।
- मौर्यकाल में मुद्रा सोना, चांदी, तथा ताम्र की ढाली जाती थी।
- मौर्यकाल में सर्वाधिक लोकप्रिय मुद्रा चांदी की थी।
- असली तथा नकली सिक्कों की जाँच के लिए रूपदर्शक नामक अधिकारी की नियुक्ति की जाती थी।

मौर्य कला

- मेगस्थनीज के अनुसार 'पोलिब्रोथा' (पाटलिपुत्र) भारत का सबसे बड़ा नगर है। यह गंगा तथा सोन नदियों के संगम पर स्थित हैं।
- पोलिब्रोथा 80 स्टेडिया लम्बा तथा 15 स्टेडिया चौड़ा है। नगर के बाहर 60 फीट गहरी खांई थी।
- नगर के मध्य में उद्यानों से घिरा हुआ राजप्रसाद था जो सूसा तथा पसिपोलिश (सीरिया) के राजप्रसादों से भी सुन्दर था।
- उत्खनन में पाटलिपुत्र से कोई भी राजप्रसाद नहीं प्राप्त हुआ था।
- फाह्यान पाटलिपुत्र के राजप्रसाद वर्णन करते हुए कहता है कि 'यह राजप्रसाद पत्थरों से निर्मित था। यह मानव द्वारा नहीं देवताओं द्वारा निर्मित प्रतीत होता है।'

गुफाएँ

- बराबर पहाड़ी में अशोक ने 4 गुफाओं का निर्माण करवाया था। और उन्हें आजीवक सम्प्रदाय के साधुओं को दान में दिया था।
- नागार्जुनी पहाड़ी पर अशोक के पौत्र दशरथ ने 3 गुफाओं का निर्माण करवाया था और उन्हें आजीवक सम्प्रदाय के साधुओं को दान में दिया था।

स्तूप

- स्तूप बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है।
- मौर्यकालीन स्तूप ईंटों से बनाए गये थे।
- महावंश के अनुसार 'अशोक ने 84 हजार स्तूप का निर्माण करवाया था।'
- अशोक द्वारा बनाए गए अनेक स्तूपों में वर्तमान में दो स्तूप ही शेष बचे हैं—

  1. सांची का स्तूप 2. सारनाथ का स्तूप

स्तंभ

- अशोक ने अपने स्तम्भों में लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग किया है।
- लाल बलुआ पत्थर चुनार (Mirzapur) तथा मथुरा की पहाड़ियों से लाया गया था।
- सारनाथ स्तम्भ में 4 पशु चलते हुए दिखाये गये हैं।

  1. हांथी 2. वृषभ 3. सिंह 4. अश्व
- इन चार पशुओं के नीचे 24 तीलियों वाला चक्र है।
- सारनाथ की इसी लाट से भारत सरकार का राज चिन्ह वृषभ, अश्व तथा 24 तीलियों वाला चक्र लिया गया है।

मूर्तिकला

- पतंजलि ने महाभाष्य में लिखा है कि 'मौर्य शासक शिव तथा स्कन्द की मूर्तियां बनाकर बेचते थे।'
- सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रस्तर मूर्ति दीदारगंज (Patna) से प्राप्त चामरग्राहिणी यक्षी की मूर्ति है जो कि 6 फीट 9 इंच लम्बी है।
- परखम से यक्ष की मूर्ति प्राप्त हुई है। जिसका सिर टूटा

SHAPE YOUR DREAMS

हुआ है।

- पटना, मथुरा, अहिक्षत, गाजीपुर आदि के उत्खनन से मृण्मूर्तियां प्राप्त हुई हैं।

मृद्भाण्ड

- राजगृह से (Northen Black Palested Ware-NBPW) के साथ गाढ़े काले रंग के मृद्भाण्ड मिले हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य

- चन्द्रगुप्त मौर्य भद्रबाहु के प्रभाव में आकर जैन धर्म स्वीकार किया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य 'सल्लेखना' विधि द्वारा प्राणों का अंत किया।
- कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने धम्म विजय की नीति अपनाई।
- मौर्यकाल में सिक्का जारी करने का अधिकार लक्षणाध्यक्ष नामक अधिकारी के पास था।
- अशोक के 8वें दीर्घशिलालेख से पता चलता है कि अशोक ने धम्म यात्रा की प्रथा प्रारम्भ की। सर्वप्रथम अपने अभिषेक 10वें वर्ष में उसने बोध गया की यात्रा की।
- बुलंदीबाग पाटलिपुत्र का प्राचीन स्थान था। यहां से मौर्यकालीन मृण्मूर्तियां एवं अन्य वस्तुयें प्राप्त हुई हैं।
- अशोक के 12वें दीर्घ शिलालेख में पूर्णरूपेण धार्मिक सहिष्णुता की बात की गई है।
- चाणक्य अपने बचपन में विष्णुगुप्त के नाम से जाने जाते थे।
- विशाखदत्त के नाटक ग्रंथ 'मुद्राराक्षस' में चन्द्रगुप्त मौर्य का विशिष्ट रूप से वर्णन हुआ है।
- अशोक के दूसरे एवं तेरहवें दीर्घ शिलालेख में संगम राज्य चोल, पांड्य एवं चेर का उल्लेख मिलता है। यद्यपि इन अभिलेखों में दक्षिण के दो अन्य राज्य सातियपुत्र एवं ताम्रपर्णी (लंका) का उल्लेख है।
- गोरखपुर जिले में स्थित सोहगौरा से एक अभिलेख प्राप्त हुआ है, इसे चन्द्रगुप्त मौर्य के समय का माना जाता है। इस अभिलेख में खाद्यान्न को देश के संकट काल में उपयोग हेतु सुरक्षित रखने के बारे में प्राचीनतम शाही आदेश है।

मौर्योत्तर काल 200 ई. पू. - 300 ई.

- अनेक विद्वानों ने मौर्योत्तर काल को अंधकार का युग कहा।
- क्यों - अंधकार युग — स्रोतों की कमी एवं दो साम्राज्य के बीच अवसान का काल
- पहली बार मौर्योत्तर काल में लेखयुक्त सिक्के प्राप्त होते हैं।
- इस काल में पूर्वी भारत, मध्य भारत एवं दक्कन में स्थानीय राजवंशों का उदय हुआ जो है-
  1. शुंग वंश
  2. कंण्व वंश
  3. सातवाहन वंश
- उत्तर-पश्चिम भारत में मध्य एशिया से कुछ विदेशी राजवंश आए जो हैं :
  1. हिंद यवन (इण्डोग्रीक)
  2. शक वंश
  3. कुषाण वंश

शुंग वश

- इस वंश का संस्थापक **पुष्यमित्र शुंग** था।

- यह प्रथम ब्राह्मण राजवंश है जिसने मगध पर पहली बार प्रशासन किया।
- पुष्यमित्र शुंग राजा बनने के बाद भी **'सेनापति'** कहलाए।
- इसके शासनकाल में प्रथम यूनानी आक्रमण हुआ।
- मौर्योत्तर काल में प्रथम यूनानी आक्रमण डेमेट्रियस के नेतृत्व में हुआ लेकिन यह केवल व्यास नदी तक आया। और पूर्वी भारत की विजय इसके सेनापति मिनेण्डर ने की।
- बौद्ध ग्रंथों में पुष्यमित्र शुंग को **'बौद्ध द्रोही'** कहा जाता है।
- शुंग काल में संस्कृत भाषा का अत्यधिक विकास हुआ।
- पुष्यमित्र शुंग का दरबारी कवि **महर्षि पतंजलि** थे जो संस्कृत का प्रकाण्ड विद्वान थे जिसने **महाभाष्य** नामक व्याकरण ग्रंथ की रचना की जो पाणिनी के अष्टाध्यायी ग्रंथ की व्याख्या थी।
- शुंगकाल में ही 'मनुस्मृति' की रचना हुई।
- पुष्यमित्र शुंग ने **दो अश्वमेघ** यज्ञ किया जिसके पुरोहित पतंजलि थे।
- पुष्यमित्र शुंग ने **सांची एवं भरहुत के स्तूपों** का विस्तार एवं अलंकरण करवाया।
- **बेसनगर अभिलेख** में उल्लेख मिलता है कि तक्षशिला का यूनानी राजा एण्टियाकिल्ड्स ने हेलियोडोरस को अपना राजदूत बनाकर भागभद्र के दरबार में भेजा और **हेलियोडोरस** यहां आकर के भागवत धर्म को स्वीकार किया और भागवत वासुदेव के सम्मान में एक गरुड़ ध्वज की स्थापना किया।
- शुंग वंश का अंतिम शासक **देवभूति** था।

AAKAR IAS
SHAPE YOUR DREAMS

कण्व वंश

- कंण्व वंश का संस्थापक वसुदेव था।
- इस वंश का अंतिम शासक सुशर्मा था। इसके अमात्य सिमुक ने इसकी हत्या करके कंण्व वंश का अंत कर दिया।

सातवाहन वंश

- इस वंश का संस्थापक **सिमुक** था।
- सातवाहनों का मूल क्षेत्र **महाराष्ट्र** था और बाद में आंध्र प्रदेश में बस गए। यहां के लोगों की सेवा करने के कारण इन्हें **आंध्र भृत्य** कहा गया।
- सिमुक की मृत्यु के बाद इसका छोटा भाई कृष्ण/कान्हा शासक बना।
- इसके बाद कृष्ण का पुत्र शातकर्णि प्रथम शासक बना।

शातकर्णि प्रथम

- यह शातवाहन वंश का पहला महत्वपूर्ण शासक था।
- शातकर्णि प्रथम की पत्नी नागानिका का नानाघाट अभिलेख प्राप्त होता है जिसमें शातकर्णि प्रथम की उपलब्धियां बताई गयी हैं।
- **नानाघाट अभिलेख** में ही शातकर्णि प्रथम को महान विजेता व महान शासक बताया गया है।
- नानाघाट अभिलेख में उल्लेख मिलता है कि शातकर्णि ने इन यज्ञों के उपलक्ष्य में ब्राह्मणों को दृष्यदान (मुद्रा) के साथ-साथ भूमिदान भी दिया। यह **भूमिदान** का प्रथम अभिलेखीय प्रमाण है।
- शातकर्णि प्रथम की मृत्यु के बाद इसकी पत्नी **नागानिका** ने अपने अल्पवयस्क पुत्र शक्ति श्री व वेद श्री के नाम से शासन किया। यह **प्रथम भारतीय महिला शासिका** के रूप में कार्य किया।

हाल-

- इस अंधकार युग में 17 राजा हुए जिनमें राजा हाल थे।
- पुराणों - राजा हाल एक विद्वान राजा था जिसने प्राकृत भाषा में **'गाथासप्तसती'** नामक ग्रंथ की रचना की।

गौतमीपुत्र शातकर्णि

- इसके आगमन से सातवाहनों का अंधकार युग समाप्त हुआ।
- शकों के क्षहरात्र वंश के राजा **नहपान** से गौतमी पुत्र शातकर्णि का भीषण संग्राम हुआ। इस युद्ध में नहपान पराजित हुआ और मारा गया। गौतमीपुत्र शातकर्णि ने नहपान के राज्य को अपने राज्य में मिला लिया। इसीलिए इसे **क्षहरात्र वंश का विनाशक** कहा जाता है और सातवाहन वंश की प्रतिष्ठा भी स्थापित की।
- बालश्री गौतमी के **नासिक अभिलेख** में उल्लेख मिलता है कि इसके विजयी घोड़ों ने तीनों समुद्रों का पानी पिया और इसकी विजयी पताका अपराजेय थी।

वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी

- इसने **'दक्षिणापथेश्वर'** की उपाधि धारण की थी।
- वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी ने **'नवनगर'** नामक नगर बसाने के उपलक्ष्य में **'नवनगरस्वामी'** की उपाधि धारण की।
- इसने अमरावती के **स्तूप का आकारवर्धन** करवाया।

यज्ञश्री शातकर्णि

- यज्ञश्री शातकर्णि सातवाहनों का अंतिम महत्वपूर्ण राजा था जिसने शकों को पराजित किया और पुनः अपने पूर्वजों के राज्य को प्राप्त किया।
- इस वंश का अंतिम शासक **'पुलुमावी चतुर्थ'** था।
- सातवाहनों की राजधानी प्रतिष्ठान थी जो इस समय व्यापार का केन्द्र थी।
- सातवाहनों द्वारा **ब्राह्मणों और बौद्धों** को भूमिदान दिया गया। यहीं से भूमिदान की प्रवृत्ति शुरु हुई और इससे सामंतवाद का जन्म माना जाता है।
- सातवाहन **मातृसत्तात्मक** वंश था।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

- इस वंश की महिलाएं **पति के पद नाम को धारण** करती थी।
- **सातवाहन वंश के शासकों द्वारा जारी किए गए सिक्के—**
  1. चांदी के सिक्के,
  2. तांबा के सिक्के
  3. पोटीन - घटिया चांदी के सिक्के,
  4. सीसा-शीश के सिक्के

हिन्द यवन (इण्डोग्रीक)

- मौर्योत्तर काल में यूनानी भारत में बैक्ट्रिया (हिन्दुकुशपर्वत के पश्चिम में) से आए।

यूथीडेमस वंश

- यूथीडेमस वंश का संस्थापक **यूथीडेमस** था जो 212 ई.पू. में बैक्ट्रिया का गवर्नर बना।
- यूथीडेमस की मृत्यु के बाद डेमेट्रियस बैक्ट्रिया का शासक बना।

डेमेट्रियस

- डेमेट्रियस बैक्ट्रिया का पहला संप्रभुता सम्पन्न शासक हुआ।
- मौर्योत्तर काल में प्रथम यूनानी आक्रमण डेमेट्रियस के नेतृत्व में हुआ।

मिनेंडर

- मिनेंडर डेमेट्रियस का सेनापति और दामाद था।
- बौद्ध ग्रंथ **मिलिन्दपन्हों** से ज्ञात होता है कि मिनेंडर की राजधानी **शाकल** थी।
- मिलिन्दपन्हों ग्रंथ की रचना **नागसेन** ने की थी।
- मिनेंण्डर पहला यूनानी शासक था जो भारत में आकर बौद्ध धर्म ग्रहण किया।

स्ट्राटो प्रथम

- मिनेण्डर की मृत्यु के बाद स्ट्राटो प्रथम शासक बना। इसकी भी मुद्राएँ मथुरा से मिलती हैं।
- इस वंश का अंतिम ज्ञात शासक हिप्पोस्ट्रेटस था।

युक्रेटाइडिस वंश

- 167 ई.पू. में एन्टियोकस चतुर्थ का सेनापति **युक्रेटाइडिस** ने बैक्ट्रिया में विद्रोह किया और इसने युक्रेटाइडिस वंश की स्थापना की।
- युक्रेटाइडिस की मृत्यु के बाद इसका पुत्र हेराक्लीज शासक बना।

हेराक्लीज

- हेराक्लीज के समय बैक्ट्रिया पर शकों का आक्रमण हुआ और अन्ततः पराजित हुआ।
- हेराक्लीज भारत में युक्रेटाइडिस वंश का सबसे महान शासक हुआ।

एण्टियाकिल्ड्स

- इसने हेलियोडोरस को अपना राजदूत बनाकर भागभद्र के दरबार में भेजा, जो भागवत धर्म का अनुयायी बना।
- इंस वंश का अंतिम ज्ञात शासक हरम्यूंज था।

शक वंश

- शक मध्य एशिया के जैक्जार्टिज प्रदेश के निवासी थे। चीनी ग्रंथों में इन्हें 'संई' नाम से सम्बोधित किया गया।
- चीनी ग्रंथों से ज्ञात होता है कि मंगोलया में दो खानाबदोश जातियाँ हूँग-नू और यू-ची 176 ई.पू. में आपस में संघर्षरत थे।
- शकों के भारत आने के दो मार्ग थे -
  1. सिंधु नदी की घाटी - उत्तरी मार्ग
  2. ईरान - दक्षिणी मार्ग

AAZAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

तक्षशिला के शक

मोग/मावेज

- यह भारत में प्रथम शासक था जो भारत में प्रथम शक विजेता था।
- इसी अभिलेख (मोग अभिलेख) से ज्ञात होता है कि मोग राजा ने 'मोग संवत' का प्रचलन किया था।

क्षहरात्र वंश

- इस वंश का पहला महत्वपूर्ण शासक **भूमक** था। इसकी केवल मुद्राएँ ही प्राप्त होती हैं।
- इसकी मुद्राओं में इसे 'छत्रप' की उपाधि से सम्बोधित किया गया है।
- इसके राज्य के अंतर्गत गुजरात, मालवा, महाराष्ट्र और सिंध थे।

नहपान

- नहपान इस वंश का सबसे महान शासक था। इसकी मुद्राओं में इसे **'महाछत्रप'** की उपाधि मिलती है।
- 'पेरीप्लस ऑफ द इरीथ्रियन सी' ग्रंथ से उल्लेख मिलता है कि नहपान को यूनानी भाषा में **मेम्बेरस** नाम से सम्बोधित किया गया।
- यूनानी स्रोतों से ज्ञात होता है कि नहपान की राजधानी **मिन्नगर** (नासिक) थी।
- नहपान भारत का प्रथम राजा था जिसके सिक्कों में तीन लिपियों में लेख प्राप्त होते हैं—1. ब्राह्मी 2. खरोष्ठी 3. यूनानी

कार्द्धमक वंश

- कार्द्धमक वंश का संस्थापक यशोमतिक था।
- यशोमतिक का पुत्र चष्टन इस वंश का पहला महत्वपूर्ण शासक था इसीलिए इसे चष्टन वंश भी कहा जाता है।

रुद्रदामन

- रुद्रदामन इस वंश का सबसे महान शासक था। यह कुछ समय तक अपने दादा चष्टन के साथ मिलकर शासन किया। इसी को 'द्वै राज्य शासन प्रणाली' कहते हैं।
- रुद्रदामन की उपलब्धियों का वर्णन उसके जूनागढ़ अभिलेख में हैं जो संस्कृत भाषा में लिखा गया प्रथम अभिलेख है।
- जूनागढ़ अभिलेख से ज्ञात होता है कि इसके समय सौराष्ट्र (गुजरात) में सुदर्शन झील टूट गयी थी और अपने अमात्य सुविशाख की देखरेख में इसने जीर्णोद्धार कराया था। इसमें रुद्रदामन ने अपना निजी धन खर्च किया था।
- इस वंश का अंतिम शक राजा रुद्रसिंह तृतीय था।
- लगभग ३८८ ई. में चंद्रगुप्त द्वितीय ने रुद्रसिंह -तृतीय को पराजित कर शक राज्य को गुप्त साम्राज्य में मिला लिया। इसी युद्ध के पश्चात् चन्द्रगुप्त द्वितीय ने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की।

कुषाण वंश

- जैक्जार्टिज प्रदेश में दीर्घ यू-ची पाँच शाखाओं में विभाजित था जिसकी एक शाखा का नाम **'कुए-ई-शुआंग'** थी जिसे कुषाण कहा गया।
- भारतीय ग्रंथों में कुषाणों को **'ऋषिक'** कहा गया।
- कुषाण वंश का संस्थापक **कुजुल कैडफिसस** था जो बैक्ट्रिया को केन्द्र बनाकर शासन किया।

विम कैडफिसस

- विम कैडफिसस कुषाण वंश का पहला शासक था जिसने भारतीय क्षेत्रों गांधार, पंजाब व मथुरा की विजय की।
- विम कैडफिसस भारत में कुषाण वंश का संस्थापक था।
- इसने तांबे की मुद्रा में एक तरफ शिव, नंदी व त्रिशूल तथा दूसरी तरफ **'महेश्वरः'** शब्द अंकित करवाया।

कनिष्क

- विम कैडफिसस के बाद कनिष्क शासक बना जो इस वंश का सबसे महान शासक था। क्योंकि इसकी राजनीतिक और सांस्कृतिक उपलब्धियाँ थीं।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

- कनिष्क के राज्यारोहण की तिथि को लेकर विद्वानों में मतभेद है लेकिन अधिकांश विद्वान 78 ई. मानते हैं।
- 78 ई. में कनिष्क के राज्यारोहण से एक संवत् कनिष्क संवत् या शक संवत का प्रारम्भ हुआ। यह संवत् भारत में कैलेण्डर का आधार बनी।

कनिष्क की राजनीतिक उपलब्धियाँ

- कनिष्क साम्राज्यवादी विचार का शासक था।
- कनिष्क के समय तीन बड़े साम्राज्य चीन, पार्थिया (ईरान) व रोम थे। चीन व पार्थिया के साथ शत्रुतापूर्ण संबंध थे। जबकि रोम के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध थे।

प्रथम युद्ध

- कनिष्क **चीन** के हॉन वंश के शासक हो-ती की राजकुमारी से विवाह करना चाहता था। उसी उपलक्ष्य में कनिष्क ने चीन के शासक के पास विवाह का प्रस्ताव लेकर एक राजदूत भेजा।
- चीन के शासक ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया और कनिष्क के राजदूत को बंदी बना लिया।
- इसी घटना से कनिष्क ने चीन पर आक्रमण कर दिया। चीनी सेना के शक्तिशाली सेनापति पान-चा-ओ ने कनिष्क को पराजित कर दिया। कुछ दिनों बाद पान-चा-ओ की मृत्यु हो गयी।
- कनिष्क दुबारा पुनः चीन पर आक्रमण कर चीनी सेना को पराजित करके पाँच क्षेत्र चीनियों से छीन लिया

1. काशगर
2. यारकंद
3. खोतान
4. करा
5. कू - ची

चीनी तुर्किस्तान

'द्वितीय युद्ध'

- पार्थिया का पूर्वी क्षेत्र एरियाना प्रदेश में कनिष्क का अधिकार था। पार्थिया का राजा एरियान प्रदेश को प्राप्त करना चाहता था, परिणामस्वरूप युद्ध हुआ।
- इस युद्ध में कनिष्क ने पार्थिया के राजा को पराजित कर एरियाना पर कब्जा बनाए रखा।
- कनिष्क ने पूर्वी भारत को जीतकर अपने साम्राज्य में विलय किया।
- कनिष्क का एक अभिलेख सारनाथ से प्राप्त होता है।
- कनिष्क की मुद्राएं पूर्वी उ.प्र., बिहार और बंगाल से प्राप्त होती हैं।
- कल्हण की **राजतरंगिणी** में उल्लेख मिलता है कि कनिष्क ने कश्मीर में **'कनिष्कपुर'** नामक नगर बसाया था। इससे स्पष्ट होता है कि इसने उत्तरभारत की विजय की।
- कनिष्क के शासनकाल में **चौथी बौद्ध संगीति** का आयोजन **कुण्डलवन (कश्मीर)** में आयोजित हुई।
- कनिष्क ने एक बड़े साम्राज्य का निर्माण किया। इसकी प्रथम राजधानी **पुरुषपुर** (पेशावर) और दूसरी राजधानी **मथुरा** थी।

कनिष्क की सांस्कृतिक उपलब्धियां

धर्म

- कनिष्क का काल धार्मिक समन्वय का काल था।
- इसी के समय बौद्धधर्म की चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ। जिसमें कनिष्क ने हीनयान एवं महायान दोनों को महत्व दिया।
- कनिष्क ने मध्य एशिया चीन में बौद्ध धर्म के प्रचारक मण्डल भेजे।

साहित्य

- कनिष्क का राजकवि अश्वघोष था। जो एक महान दार्शनिक एवं महान कवि था जिसने **'बुद्धचरित'** व **सौन्दरानंद**

SHAPE YOUR DREAMS

नामक महाकाव्य, **'सारिपुत्र प्रकरण'** नामक नाटक ग्रंथ की रचना की।

- बुद्धचरित को बौद्धों की रामायण कहा जाता है।
- नागार्जुन एक बौद्ध आचार्य थे जिन्होंने **'शून्यवाद दर्शन'** का प्रतिपादन किया। इन्हें भारत का आइंस्टीन भी कहा जाता है।
- वसुमित्र भी एक बौद्ध आचार्य थे जिन्होंने 'महाविभाषाशास्त्र' नामक ग्रंथ की रचना की।
- चरक एक आयुर्वेदाचार्य थे जिन्होंने 'चरक संहिता नामक चिकित्सीय ग्रंथ की रचना की।

स्थापत्य कला

- कनिष्क ने 'पुरुषपुर' और 'कनिष्कपुर' नामक नगर बसाया।
- इसने पुरुषपुर में 13 मंजिला ऊंची (400 फिट) मीनार/टावर का निर्माण कराया।

मूर्तिकला

1. **गांधार शैली**-इस शैली का विकास गांधार प्रदेश में हुआ। इसमें शैली यूनानी है लेकिन विषय भारतीय।
   - इस शैली से बुद्ध की सर्वाधिक मूर्तियों का निर्माण किया गया।
   - इस कला की मूर्तियां स्लेटी चूना पत्थर से निर्मित होती थी।
2. **मथुरा शैली**-
   - इस शैली का विकास मथुरा के आस-पास के क्षेत्रों में हुआ।
   - यह शैली शुद्ध भारतीय कला की शैली थी।

कनिष्क के उत्तराधिकारी

- कनिष्क के पश्चात् इसका उत्तराधिकारी वशिष्क की पहचान 'जुष्क' राजा से की जाती है।

महत्वपूर्ण तथ्य

- तक्षशिला के यूनानी शासक एण्टियाकिल्ड्स ने हेलियोडोरस को अपना राजदूत बनाकर भागभद्र के दरबार में बेसनगर भेजा। यहां हेलियोडोरस भागवत धर्म का अनुयायी बन गया। इसकी जानकारी बेसनगर अभिलेख से मिलती है।
- मौर्योत्तर काल में विदेशी शासक वर्ग को भारतीय समाज में द्वितीय श्रेणी के क्षत्रिय के रूप में शामिल किया गया।
- यूनानी शासक स्ट्राटो द्वितीय ने शीशा के सिक्के जारी किये थे।
- शक शासक नहपान के सिक्कों पर तीन लिपियों में लेख मिलते हैं। यह है ब्राह्मी, खरोष्ठी एवं यूनानी लिपि।
- पहलव वंश के शासक गोण्डोफर्नीज के शासनकाल में ईसाई प्रचारक सेंट टामस भारत आया था। लेकिन यहां इसकी मद्रास के निकट हत्या कर दी गई थी।
- कुषाणों ने सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के जारी किये।
- कुषाण शासक विमकैडफिसेज ने भारत में स्वर्ण सिक्कों का प्रचलन नियमित उपयोग के लिए किया था।
- हिंद-यवन शासक स्ट्रैटो-II (25 ई.पू.–10 ई.) ने सीसे के सिक्के जारी किए थे।
- कलिंग के चेदि वंश के राजा खारवेल जैन धर्म का संरक्षक था। इसके हाथी गुंफा अभिलेख से इसके जैन होने एवं संरक्षण देने का प्रमाण मिलता है।
- कुषाण शासक कनिष्क की मुद्राओं में बुद्ध का अंकन मिलता है। इससे पता चलता है कि यह महायान सम्प्रदाय का अनुयायी था। यद्यपि यह हीनयान एवं महायान दोनों को संरक्षण प्रदान किया था।
- अफगानिस्तान में स्थित बामियान की पहाड़ियों को काटकर बड़ी संख्या में बुद्ध की प्रतिमायें बनाई गई हैं। लेकिन तालिबानियों ने इन प्रतिमाओं को नष्ट कर दिया है।
- विक्रम संवत् की शुरुआत 57 ई. पू. में हुआ था जबकि शक संवत् की शुरुआत 78 ई. में हुआ था। अतः दोनों के बीच अंतर निकालने के लिए 57 एवं 78 को जोड़ना होता है, जिसका उत्तर 135 होता है।

गुप्त काल

- **स्त्रोत**-गुप्तवंशीय इतिहास को जानने के स्त्रोत के रूप में साहित्यिक साक्ष्य अभिलेखीय साक्ष्य और विदेशी यात्रियों के विवरण का सहारा लिया जाता है।
- **साहित्यक स्त्रोत-पुराण**—मत्स्यपुराण, वायुपुराण एवं विष्णुपुराण द्वारा प्रारम्भिक शासकों के बारे में जानकारी मिलती है।
- **स्मृतियां**-स्मृतियों में नारद, वृहस्पति, पाराशर आदि स्मृतियों से गुप्तकालीन सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक इतिहास की जानकारी मिलती है।
- **बौद्ध ग्रंथ**-आर्य मंजूश्री मूलकल्प एवं वसुबंधु चरित में गुप्तवंशीय इतिहास के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।
- **जैन ग्रंथ**-हरिवंश पुराण और कुबलयमाला से गुप्तवंशीय इतिहास की जानकारी मिलती है।
- **अभिलेखीय साक्ष्य**-गुप्तों का इतिहास जानने के लिए अभिलेखीय साक्ष्य महत्वपूर्ण है।
- गुप्तों के अब तक 42 अभिलेख प्राप्त हो चुके हैं। इसमें 27 प्रस्तर 14 ताम्र पत्र तथा एक लौह स्तम्भ है।
- **विदेशी विवरण**-विदेशी विवरण में फाह्यान, ह्वेनसांग, इत्सिंग एवं अलबरूनी आदि का विवरण गुप्तकालीन इतिहास जानने में सहयोग प्रदान करते हैं।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319-335 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्त वंश का प्रथम महत्वपूर्ण राजा था जिसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।
- चन्द्रगुप्त प्रथम 319 ई. में गुप्त संवत् का प्रचलन किया।
- चन्द्रगुप्त प्रथम का विवाह लिच्छवि वंश की राजकुमारी कुमार देवी से हुआ। इस उपलक्ष्य में इसने स्मारक स्वर्ण मुद्रा जारी किया जिसमें चन्द्रगुप्त एवं कुमार देवी का चित्र अंकित है और इसी मुद्रा के दूसरी तरफ 'लिच्छिवयः' शब्द अंकित है।

समुद्रगुप्त (335 -75 ई.)

- समुद्रगुप्त वंश का प्रथम महान शासक था जिसकी उपलब्धियां हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख से प्राप्त होती है।
- हरिषेण ने प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त की क्रमिक विजयों का उल्लेख किया।

विदेशी राज्यों के साथ संबंध

- प्रयाग प्रशस्ति के अंत में विदेशी राज्यों के संबंधों का उल्लेख मिलता है। ये विदेशी राज्य थे - देवपुत्रषाहीषाहानुषाही (कुषाण),शकमुरुंड (शक), सिंहल (लंका), सार्वद्धीपवासी (जावा सुमात्रा)।
- चीनी ग्रंथों से ज्ञात होता है कि समुद्रगुप्त का समकालीन लंका का राजा मेघवर्ण था जिसने बहुत उपहारों के साथ अपने राजदूत को समुद्रगुप्त के पास भेजा था।
- समुद्रगुप्त की विजयों के आधार पर इतिहासकार स्मिथ ने इसे 'भारत का नेपोलियन' कहा।

मुद्राएं

- मुद्राओं से ज्ञात होता है कि समुद्रगुप्त ने अश्वमेघ यज्ञ किया और कुछ मुद्राओं में इसे वीणा बजाते हुए चित्रित किया गया है।
- समुद्रगुप्त स्वयं कवि/विद्वान था। प्रयाग प्रशस्ति में इसे 'कवि राज' कहा गया।

चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (375-412 ई.)

महान विजेता

- चन्द्रगुप्त द्वितीय 388 ई. में मालवा व गुजरात के शक शासक रुद्र सिंह तृतीय को पराजित कर इसके राज्य पर अधिकार कर लिया।

- चन्द्रगुप्त द्वितीय शक विजय के उपलक्ष्य में **'विक्रमादित्य'** की उपाधि धारण की।
- शकों के अहंकार को चूर करने के कारण इसे **'शकारि'** भी कहा जाता है।
- **उज्जयनी** भी गुप्तों को प्राप्त हुई जो व्यापार की दृष्टि से महत्वपूर्ण था। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने इसे अपनी द्वितीय राजधानी बनाई जिससे साम्राज्य के पश्चिमी क्षेत्र पर नियंत्रण रखा जा सके।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के मेहरौली लौह स्तम्भ से ज्ञात होता है कि इसने बंगाल की विजय की।

वैवाहिक एवं मैत्रीपूर्ण संबंध

- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने नाग वंश की राजकुमारी कुबेरनागा से विवाह किया। कुबेरनागा से उत्पन्न पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक वंश के शासक रुद्रसेन द्वितीय से किया।
- राजा भोज की रचना 'श्रृंगार प्रकाश' में उल्लेख मिलता है कि चंद्रगुप्त द्वितीय ने कालिदास को अपना राजदूत बनाकर कुंतल नरेश कुकुस्थवर्मन के दरबार में भेजा था।

सांस्कृतिक उपलब्धियां

- चन्द्रगुप्त द्वितीय के अभिलेखों में इसे 'परम भागवत' कहा गया।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय चीनी यात्री फाह्यान 399 ई. में भारत आया और 415 ई. तक रहा। यह भारत में 16 वर्षों तक रहा।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के अन्य नाम 'देवराज' व 'देवगुप्त' और उपाधि 'विक्रमांक'।

कुमारगुप्त I (415-455 ई.)

- चन्द्रगुप्त-II की मृत्यु के बाद तीन वर्ष तक शासक कौन था, इस संबंध में निश्चित रूप से कुछ कहना मुश्किल है।
- वैशाली से प्राप्त एक मुद्रा में चन्द्रगुप्त द्वितीय के पुत्र गोविन्दगुप्त को युवराज कहा गया है। संभवतः यह तीन वर्ष तक शासक रहा होगा।
- गुप्त शासन के क्रम में इसकी प्रारम्भिक तिथि गुप्त संवत् 96 (415 ई.) है। इसके रजत सिक्के से इसकी अंतिम तिथि गुप्त संवत 136 (455 ई.) मिलती है।
- कुमारगुप्त को जो पैतृक सम्पत्ति के रूप में जो साम्राज्य मिला उसे उसने सुरक्षित रखा।
- कुमारगुप्त के समय नर्मदा नदी के तट में निवास करने वाली जनजाति पुष्यमित्रों का विद्रोह हुआ। युवराज स्कन्दगुप्त ने इन्हें पराजित कर इनका अंत कर दिया।
- इसकी एक मुद्रा में अश्वमेघ महेन्द्रः शब्द अंकित मिलता है इससे स्पष्ट है कि इसने अश्वमेघ यज्ञ किया था।
- कुमार गुप्त ने नालंदा में एक बौद्ध विहार का निर्माण करवाया जो आगे चलकर नालंदा विश्वविद्यालय के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

स्कन्दगुप्त (455-467 ई.)

- स्कन्दगुप्त गुप्त वंश का अंतिम महान सम्राट था।
- स्कन्दगुप्त हूणों को पराजित करने के उपलक्ष्य में 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की।
- स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख में उल्लेख मिलता है कि सौराष्ट्र (गुजरात) में स्थित सुदर्शन झील टूट गयी थी तब इसने जूनागढ़ के नगर प्रशासक चक्रपालित की देखरेख में इसका जीर्णोद्धार कराया।
- स्कन्दगुप्त के कहौम अभिलेख में उल्लेख मिलता है कि मद्र नामक एक व्यक्ति ने जैन तीर्थंकरों की पांच मूर्तियों की स्थापना कराई।

स्कन्दगुप्त के उत्तराधिकारी (467-550 ई.)

- स्कन्दगुप्त की मृत्यु के बाद इसके आठ उत्तराधिकारियों का उल्लेख मिलता है।
- विष्णुगुप्त गुप्त वंश का अंतिम शासक था।

AKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

गुप्तकालीन प्रशासन

- शासन की दृष्टि से गुप्त साम्राज्य का स्वरूप ऐसा था कि गुप्तवंशीय समाज को आधिपत्य स्वीकार करते हुए अनेक राजा अपने-अपने क्षेत्र में स्वतंत्रतापूर्वक शासन करते थे।
- गुप्त साम्राज्य का शासन सम्राट में केन्द्रित था। सैद्धांतिक रूप से यह सभी शक्तियों का स्रोत था। गुप्त शासक अपने को महाराजाधिराज, परमेश्वर, परमभट्टारक, परमभागवत, परमदेवता, पृथ्वीपति, सम्राट एवं चक्रवर्ती आदि से विभूषित करते थे। राजा के देवत्व की कल्पना इस युग में अधिकाधिक लोकप्रिय हुई। इसका प्रमाण याज्ञवल्क्य स्मृति और नारद स्मृति में मिलती है।
- गुप्तकाल में मंत्रियों का पद वंशानुगत था। करमदण्ड अभिलेख में उल्लेख मिलता है कि कुमारगुप्त प्रथम के मंत्री पृथ्वीसेन का पिता शिखर स्वामीन चन्द्रगुप्त द्वितीय का मंत्री रह चुका था।
- साम्राज्य के मुख्य पदों पर काम करने वाले अधिकारियों को कुमारामात्य कहते थे।

प्रशासनिक इकाईयां

- देश के शासक को गोप्ता एवं भुक्ति के शासक को उपरिक महाराज कहा जाता था। इन्हें भोगिक राजपुत्र एवं देवभट्टारक के नाम से जाना जाता था।
- स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख में उल्लेख मिलता है कि जूनागढ़ का नगर प्रशासक चक्रपालित था।
- ग्राम के मुखिया को ग्रामपति, महत्तर या ग्रामभोजक कहा जाता था।

भूराजस्व व्यवस्था

- गुप्त काल में राजकीय आय का मुख्य स्रोत भूमिकर था। भूमिकर को 'भाग' कहा जाता था। भाग की दर 1/6 होती थी।
- गुप्तकाल में नकद कर को **'हिरण्य कर'** कहा जाता था।

गुप्तकालीन संस्कृति

साहित्य

- इस युग में संस्कृत भाषा का अत्यधिक विकास हुआ।
- हरिषेण गुप्तकाल का प्रकाण्ड विद्वान था जिसकी एक अभिलेखीय रचना 'प्रयाग प्रशस्ति' है जो 'चम्पू शैली' में रचा गया।
- कालिदास संस्कृत का विद्वान था जिसकी सात रचनाएं मिलती हैं—

रचना	प्रकार
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	नाटक
2. मालविकाग्निमित्रम्	नाटक
3. विक्रमोवर्षीयम्	नाटक
4. रघुवंश	महाकाव्य
5. कुमार संभव	महाकाव्य
6. ऋतुसंहार	लघुकाव्य
7. मेघदूत	लघुकाव्य

- विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस व देवीचन्द्रगुप्तम् इस युग के विशिष्ट रूप से राजनीतिक नाटक हैं।

विज्ञान एवं तकनीकि

- इस समय के प्रसिद्ध वैज्ञानिक आर्यभट्ट थे, इन्होंने अपनी पुस्तक 'आर्यभट्टियम् ' में वृत्त, त्रिभुज आदि के सिद्धांतों, दशमलव प्रणाली, बीजगणित तथा त्रिकोणमिति का विवेचन किया।
- आर्यभट्ट ने पाई (π) का मान 3.1416 बताया जो आधुनिक सिद्धांत के सर्वनिकट है।
- इन्होंने सौरवर्ष की लम्बाई को 365.358605 दिन के बराबर बताया जो आधुनिक सिद्धांत के सर्वनिकट है।
- इन्होंने चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण की वैज्ञानिक व्याख्या की और साथ ही यह बताया कि पृथ्वी गोल है।
- वाराहमिहिर ने पंचरस सिद्धांतिका में ज्योतिष के पाँच सिद्धान्तों का उल्लेख किया है।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

- गुप्तकाल में प्रसिद्ध चिकित्सक एवं आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि हुए।
- पूर्वी तुर्किस्तान ने नवनीतिकम् नामक एक आयुर्वेद का ग्रंथ मिला है जिसकी रचना गुप्तकाल में हुई।

स्थापत्य कला

- प्रथम चरण में बौद्ध चैत्यों का अनुकरण करके मंदिर का निर्माण किया गया। उदाहरण के रूप में कृष्णाजिले (महाराष्ट्र) का कपोतेश्वर मंदिर।
- द्वितीय चरण में स्तूपों का अनुकरण करके गोल मन्दिर बनाए गए।
- तृतीय चरण में मंदिर की छत चौकोर एवं समतल बनाई गयी। इसमें एक कमरा बनाया गया जिसमें देवमूर्ति स्थापित की गयी जिसे गर्भ गृह कहते हैं। कमरे के सामने एक हाल बनाया गया जिसे मण्डप कहा गया।
- चौथे चरण में प्रदक्षिणापथ का निर्माण किया गया।

मूर्तिकला

- बिहार के सुल्तानगंज से बुद्ध की एक मूर्ति प्राप्त होती है। यह सब से सुंदर मूर्ति है जिसे ब्रिटेन के बर्मिंघम संग्रहालय में रखा गया।

चित्रकला

- गुप्त काल में अजंता एवं बाघ की गुफाओं से चित्र प्राप्त होते हैं।
- अजंता की गुफाओं में दो प्रकार की चित्र तकनीकि प्राप्त होती है—

1. **फ्रेस्को तकनीकि-** इस तकनीकि से गीला लेप में चित्र निर्मित किए जाते थे।
2. **टेम्पेरा तकनीकि-** इस तकनीकि से सूखे लेप द्वारा चित्र निर्मित किए जाते थे।

गुप्तकालीन रचनायें एवं उनके लेखक

1. अभिज्ञान शाकुंतलम्		
2. विक्रमोवर्षीयम्		
3. मालविकाग्निमित्रम्		
4. रघुवंश	—	कालिदास
5. कुमार संभव		
6. मेघदूतम्		
7. ऋतु संहार		
8. मुद्राराक्षस		
9. देवी चन्द्रगुप्तम्		विशाखदत्त
10. मृच्छकटिकम्	-	शूद्रक
11. अमरकोष	-	अमरसिंह
12. नाट्यशास्त्र	-	भरतमुनि
13. कामसूत्र	-	वात्स्यायन
14. पंचतंत्र	-	विष्णुशर्मा
15. नीतिसार	-	कामंदक

महत्वपूर्ण तथ्य

- चन्द्रगुप्त द्वितीय का दूसरा नाम देवगुप्त एवं देवराज भी मिलता है।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने गुप्त सम्राटों में सर्वप्रथम चांदी के सिक्के जारी किये।
- गुप्तकालीन स्वर्ण मुद्रा को दीनार कहा जाता था।
- फाहियान के अनुसार सामान्य लेन देन में कौड़ियों का प्रयोग होता था।
- गुप्तकालीन स्वर्ण मुद्राओं का सबसे बड़ा ढेर (समूह) बयाना से प्राप्त हुआ है।
- गुप्तकाल में किसानों से उद्रंग एवं उपरिकर नामक अतिरिक्त कर लिया जाता था।

- गुप्त काल में ही सती प्रथा का प्रथम अभिलेखीय प्रमाण एरण से प्राप्त हुआ है।
- गुप्त काल में 'कायस्थ' का उल्लेख लेखक वर्ग के रूप में मिलता है। कायस्थ का सर्वप्रथम कुषाणकालीन मथुरा अभिलेख एवं याज्ञवाल्क्य स्मृति में मिलता है।
- फाहियान उल्लेख करता है कि जब चांडाल बस्ती में प्रवेश करता था तो लकड़ियां बजाते हुए चलता था।
- कहौम अभिलेख में जैन मूर्तियों की स्थापना का उल्लेख मिलता है।
- मंदसौर अभिलेख में ही रेशम के बुनकरों की श्रेणी द्वारा दशपुर (मंदसौर) में एक सूर्य मंदिर बनवाये जाने का उल्लेख है।
- नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रेय गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम को है।
- गुप्तकाल में सुश्रुत नामक शल्य चिकित्सक हुए। इन्होंने सुश्रुत संहिता नामक ग्रंथ की रचना की। इसमें इन्होंने छुआछूत से होने वाली बिमारियों का उल्लेख किया है।
- दशमलव प्रणाली का विकास गुप्त काल में हुआ।
- प्राचीन ग्रंथों में रेशम के लिए 'कौशेय' शब्द का प्रयोग किया जाता था।
- गुप्तकाल में शतरंज का खेल भारत में उद्भूत हुआ। इस समय इसे 'चतुरंग' के नाम से जाना जाता था। मध्यकाल में विजयनगर साम्राज्य के अन्तर्गत यह राजकीय खेल था। भारत से ही यह ईरान और फिर यूरोप पहुँचा।

गुप्तोत्तर काल (वर्धन वंश/ पुष्यभूति वंश)

- वर्धन वंश की जानकारी निम्न ऐतिहासिक स्रोतों से प्राप्त होती है— बाणभट्ट के हर्षचरित नामक ग्रंथ से, ह्वेनसांग के सि-यू-कि नामक चीनी ग्रंथ से

  हर्षवर्धन के दो अभिलेखों, बाँस खेड़ा अभिलेख (शाहजहां पुर) तथा मधुबन अभिलेख (मऊ) से

  चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख से तथा हर्षकालीन मुद्राओं से।
- बाणभट्ट हर्षचरित में हर्ष के आदि पूर्वज का नाम पुष्यभूति बताया है।
- हर्ष के पूर्वज श्रीकंठ राज्य के शासक थे जिनकी राजधानी स्थाणुवीश्वर अर्थात् थानेश्वर थी।
- प्रभाकरवर्धन इन वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक बना। इसने महाराजाधिराज परमेश्वर, परमभट्टारक आदि उपाधियां धारण की।
- इसकी मुद्राओं में प्रतापशील अंकित है इससे स्पष्ट होता है कि यह प्रतापशील उपाधि धारण किया था।
- 605 ई. में प्रभाकरवर्धन की मृत्यु हो गयी तथा इसकी पत्नी यशोमती सती हो गयी।
- राज्यवर्धन शासक बना इसी समय मालवा के शासक देवगुप्त ने कन्नौज पर आक्रमण कर दिया तथा यहां के शासक गृहवर्मा की हत्या कर दी और राज्यश्री को कारागार में डाल दिया।
- 606 ई. में हर्षवर्धन कन्नौज का शासक बना तथा इसे अपनी राजधानी बनायी।
- इस उपलक्ष्य में 606 ई. में हर्ष संवत् शुरु किया।
- मगध (बिहार) राज्य की विजय की इस उपलक्ष्य में इसने 'मगध राज' की उपाधि धारण की।
- कामरूप (असम) के शासक भास्करवर्मन ने हर्ष के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किए।
- पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख से ज्ञात होता है कि हर्ष, पुलकेशिन द्वितीय से पराजित हुआ। यह युद्ध नर्मदा नदी के तट पर हुआ।

MAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

- हर्षवर्धन का शासन काल धर्म, साहित्य तथा कला की उन्नति का काल रहा।
- इसने सभी धर्मों को संरक्षण दिया। इसके समय दो धार्मिक सभाओं का आयोजन हुआ। प्रथम-कन्नौज सभा (पांचवी बौद्ध संगीति) इसकी अध्यक्षता ह्वेनसांग ने किया। इसमें महायान का प्रचार-प्रसार किया गया। तथा महामोक्षपरिषद का आयोजन, इस आयोजन में हर्ष अपनी समस्त आय का दान कर देता था, यह आयोजन प्रत्येक पांच वर्ष बाद प्रयाग में आयोजित की जाती थी।
- इसके काल में शिक्षा तथा साहित्य में भी उन्नति हुई। इस काल में नालन्दा विश्वविद्यालय शिक्षा का बहुत बड़ा केन्द्र था, हर्ष ने इसके खर्च हेतु 100 गाँवों का अनुदान दिया था।
- इस काल में संस्कृत भाषा महत्वपूर्ण थी।
- इसके दरबार में बाणभट्ट नामक विद्वान रहते थे जिन्होंने हर्षचरित, कादम्बरी, पूर्वपीठिका, चंण्डीशतक नामक ग्रंथों की रचना की।
- हर्ष स्वयं संस्कृत का प्रकाण्ड विद्वान था इसने रत्नावली, नागानन्द तथा प्रियदर्शिका नामक नाटक ग्रंथों की रचना की।

महत्वपूर्ण तथ्य

- ह्वेनसांग को यात्रियों का राजकुमार कहा गया है।
- हर्ष की कुछ स्वर्ण मुद्राओं में बैल पर आरुढ़ शिव एवं पार्वती का चित्र अंकित मिलता है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन किया था। 637 ई. में यह नालंदा विश्वविद्यालय गया, इस समय यहां के कुलपति आचार्य शीलभद्र थे।
- पुलकेशिन-II के दरबारी विद्वान रविकीर्ति द्वारा रचित ऐहोल अभिलेख में शक संवत् का वर्ष 556 दिया हुआ है। चूंकि शक संवत् का प्रारम्भ 78 ई. में हुआ है, अतः 556 में 78 जोड़ देने पर जो तिथि आती है वह है 634 ई.।
- कवि बाण भट्ट जो हर्ष के दरबार में रहते थे, इनका जन्म बिहार के औरंगाबाद जिले में सोन नदी के तट पर स्थित 'प्रीथिकूटा' नामक गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम चित्रभानु एवं माता का नाम राजदेवी था।

राजपूत काल - (पूर्व मध्यकाल)

(750 ई. - 1200 ई.)

त्रिपक्षीय संघर्ष

- 600 ई.पू. से 600 ई. तक लगभग 1000 वर्षों तक भारतीय राजनीति का केन्द्र मगध तथा उसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी।
- 600 ई. के बाद पाटलिपुत्र का स्थान कन्नौज ने ले लिया।
- कन्नौज की महत्ता हर्ष ने बढ़ाई, कन्नौज को अब महोदय श्री कहा जाने लगा।
- हर्ष की मृत्यु के बाद लगभग 150 वर्षों तक कन्नौज में कोई महत्पूर्ण शासक नहीं हुआ।
- बंगाल, बिहार में पाल वंश, मालवा, राजस्थान तथा गुजरात में गुर्जर प्रतिहार और दक्षिण भारत में राष्ट्रकूट वंश का आधिपत्य था।
- इन तीनों राजवंशों की नज़र इस पर थी, फलस्वरूप त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ।
- त्रिपक्षीय संघर्ष का मूल कारण कन्नौज की राजनीतिक महत्ता, उपजाऊ क्षेत्र तथा व्यापारिक मार्गों पर स्थित होना था।

पाल वंश

- पाल वंश का उदय बंगाल में हुआ।

- पाल वंश का संस्थापक 'गोपाल' था।
- गोपाल के बाद इसका पुत्र धर्मपाल शासक हुआ, यह इस वंश का पहला महत्वपूर्ण शासक था।
- इसने महाराजाधिराज, परमेश्वर, परमभट्टारक की उपाधियां धारण की, इससे पता चलता है कि यह महान शासक था।
- धर्मपाल के समय से ही त्रिपक्षीय संघर्ष शुरू हुआ।
- धर्मपाल बौद्ध धर्म का अनुयायी था, इसने विक्रमशिला बौद्ध विहार और सोमपुर बौद्ध विहार की स्थापना की।
- इसने गुर्जर प्रतिहार शासक मिहिर भोज को पराजित किया।
- इसके समय जावा के शैलेन्द्र वंशीय शासक बलपुत्र देव ने अपना एक दूतमंडल इसके दरबार में भेजा।
- दूतमण्डल भेजने का उद्देश्य, नालन्दा में जावा के विद्यार्थियों के लिए विशेष विद्यालय की स्थापना एवं खर्च हेतु मगध के पाँच गांवों का अनुदान देना था।
- नारायण पाल बौद्ध धर्म का अनुयायी था लेकिन अनेक शिव मंदिरों का निर्माण कराया।
- संध्याकर नन्दी रामपाल के दरबार में रहते थे। इन्होंने रामचरित नामक ग्रंथ की रचना संस्कृत भाषा में की।
- जिमूतवाहन नामक विद्वान हुए इन्होंने 'दायभाग' नामक कानूनी ग्रंथ की रचना की।
- इस काल में शिक्षा की उन्नति हुई, विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना धर्मपाल ने की। इसमें अतिश दीपांकर श्री ज्ञान जैसे महान विद्वान थे।
- सभी पाल शासक बौद्ध धर्म के अनुयायी थे, अन्तिम रूप से बौद्ध धर्म ने यहीं संरक्षण प्राप्त किया।

AAKAR IAS
SHAPE YOUR DREAMS

गुर्जर-प्रतिहार वंश

- गुर्जर-प्रतिहारों की अनेक शाखाओं में उज्जैनी के गुर्जर प्रतिहार प्रसिद्ध हुए।
- उज्जैनी के गुर्जर-प्रतिहार वंश की स्थापना 730 ई. में नागभट्ट प्रथम ने की।
- नागभट्ट प्रथम का राष्ट्रकूट शासक दन्तिदुर्ग से युद्ध हुआ जिसमें नागभट्ट प्रथम पराजित हुआ।
- वत्सराज ने कन्नौज पर आक्रमण किया तथा इन्द्रायुध को पराजित किया।
- वत्सराज के बाद इसका पुत्र नागभट्ट द्वितीय शासक हुआ इसने भी कन्नौज पर आक्रमण किया तथा चक्रायुध को पराजित किया तथा आगे बढ़कर धर्मपाल को पराजित किया।
- नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज पर गुर्जर-प्रतिहार वंश की स्थापना की।
- नागभट्ट द्वितीय ने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।
- इसका पौत्र मिहिर भोज महत्वपूर्ण शासक हुआ। यह कन्नौज के गुर्जर-प्रतिहार वंश का सबसे महान शासक हुआ।
- मिहिर भोज के ग्वालियर प्रशस्ति में उल्लेख मिलता है कि इसमें वाराह की उपाधि धारण की और स्वयं को विष्णु का अवतार घोषित किया।
- मिहिर भोज का राष्ट्रकूट शासक कृष्ण द्वितीय से नर्मदा नदी के तट पर युद्ध हुआ, जिसमें मिहिर भोज पराजित हुआ तथा वापस कन्नौज आ गया।
- इसके समय में अरबी यात्री सुलेमान भारत आया, सुलेमान के अनुसार भारतीय शासकों में मिहिर भोज के पास सबसे बड़ी सेना थी। सुलेमान इसे इस्लाम का शत्रु बताया है।
- इसके दरबार में राजशेखर रहते थे जो राजकवि तथा गुरु दोनों थे।
- राजशेखर ने कर्पूर मंजरी नामक नाटक ग्रंथ की रचना प्राकृत भाषा में तथा काव्यमीमांसा नामक काव्य साहित्य की रचना संस्कृत में की।
- महीपाल के समय बगदाद निवासी अलमसूदी 916 ई. में भारत आया।
- गुर्जर प्रतिहारों के समय 1019 ई. में महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण किया, इस समय यहां का शासक राज्यपाल था। यह बिना युद्ध किए कन्नौज छोड़कर भाग गया।

राष्ट्रकूट वंश

- राष्ट्रकूट उस भौगोलिक इकाई के शासक थे जिसे राष्ट्र कहा जाता था अतः यह राष्ट्रकूट कहलाए।
- राष्ट्रकूट वंश का संस्थापक दन्तिदुर्ग को माना जाता है इनकी राजधानी मान्यखेट थी।
- इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।
- कृष्ण प्रथम ने एलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माण कराया।
- कृष्ण प्रथम के बाद ध्रुव शासक हुआ। यह पहला राष्ट्रकूट शासक था जिसने त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया।
- गोविन्द तृतीय ने दक्षिण के अनेक शासकों को पराजित कर इसने 'कीर्तिनारायण' की उपाधि धारण की।
- गोविन्द तृतीय के बाद अमोघवर्ष प्रथम शासक हुआ। यह अपने पिता की भांति महान शासक हुआ।
- अमोघवर्ष प्रथम ने 'नृपतुंग की उपाधि धारण की।
- इसने पाल शासक नारायण पाल को पराजित किया।
- यह पहले देवी का पूजक था तथा बाद में जैन धर्म का अनुयायी बना तथा अन्तिम समय में जैन संन्यासी हो गया। इसके गुरु आचार्य जिनसेन थे।

साम्राज्य के लिए संघर्ष का युग
(1000-1200 ई.)

- गुर्जर प्रतिहार वंश का पतन के बाद देश का अत्यधिक विशृंखलन हो गया।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

- इसी समय पूरा उत्तर भारत महमूद गजनवी के आक्रमण से आक्रान्त हो रहा था।
- गुर्जर प्रतिहार वंश के साम्राज्य के खण्डहर पर अनेक राजवंशों का उदय हुआ।

मालवा	-	परमार वंश
बुन्देलखण्ड	-	चंदेल वंश
अजमेर	-	चौहान वंश
काशी एवं कन्नौज	-	गाहड़वाल वंश
त्रिपुरी	-	कलचुरि वंश
गुजरात	-	चालुक्य वंश (सोलंकी वंश)

ये सभी अपने-अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए संघर्ष किया। इसीलिए इसे साम्राज्य के लिए संघर्ष का युग कहा जाता है।

मालवा के परमार वंश

- प्रारम्भ में ये गुर्जर प्रतिहारों के सामन्त थे।
- परमारों का आदि पूर्वज परमार था।
- इनकी प्रारम्भिक राजधानी उज्जैनी थी।
- मालवा के परमार वंश का पहला महत्वपूर्ण शासक मुंजराज था। इसने अनेक विजय की।
- मुंजराज स्वयं विद्वान और विद्वानों का संरक्षक था इसे 'कविमित्र कहा गया।
- मुंजराज के दरबारी राजकवि पद्मगुप्त (परिमलगुप्त) थे इन्होंने 'नवसाहसांकचरित' नामक ग्रंथ की रचना की।
- भोजराज इस वंश का सबसे महान शासक हुआ।
- इसने उज्जैनी के स्थान पर धारानगरी को अपनी राजधानी बनाया।
- भोजराज ने ही धारानगरी को बसाया था।
- राजा भोज स्वयं विद्वान और विद्वानों का बहुत बड़ा संरक्षक था इसने कविराज की उपाधि धारण की।
- धनपाल भोजराज के समय तक जीवित रहा और भोजराज के कहने पर 'तिलक मंजरी' नामक ग्रंथ की रचना की।

गुजरात के चालुक्य/सोलंकी वंश

- चालुक्यों के आदिपूर्वज चुलुक था इसलिए इन्हें चालुक्य कहा गया।
- चालुक्य वंश का संस्थापक मूलराज सोलंकी था इसलिए इसे सोलंकी वंश कहा जाता है।
- मूलराज सोलंकी ने अन्हिलवाड़ा को अपनी राजधानी बनायी यही इनकी अन्तिम राजधानी थी।
- भीम प्रथम गुजरात के सोलंकी शासन का महत्वपूर्ण शासक बना।
- जिस समय गुजरात का शासक भीम प्रथम था उसी समय महमूद गजनवी ने सोमनाथ के मंदिर पर आक्रमण किया, यह महमूद गजनवी के आक्रमण को रोक नहीं सका।
- भीम प्रथम के मंत्री तेजपाल एवं विमलपाल ने आबूपर्वत पर दिलवाड़ा के जैनमंदिर का निर्माण कराया।
- भीम प्रथम के बाद इसका पुत्र कर्णदेव शासक बना।
- इसके बाद इसका पुत्र जयसिंह सिद्धराज शासक बना, यह शक्तिशाली शासक था।
- इसने यशोवर्मा को पराजित कर 'अवन्ति नाथ' की उपाधि धारण की।
- इसने खम्भात में एक मस्जिद का निर्माण कराया।
- कुमारपाल इस वंश का सबसे महान शासक था तथा बड़े राज्य का निर्माण किया।
- इसने सोमनाथ के मंदिर का पुनर्निर्माण कराया था।
- इसके बाद अजयपाल शासक बना। इसके समय जैनियों पर अत्यधिक अत्याचार किया गया।
- इसके बाद मूलराज द्वितीय तथा भीम द्वितीय शासक हुए। इन्हीं के समय 1178 ई. में मुहम्मद गोरी ने गुजरात पर आक्रमण किया लेकिन भीम द्वितीय के नेतृत्व में चालुक्य सेना ने गोरी को पराजित किया।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

चंदेल वंश

- इस वंश का उदय बुन्देलखण्ड क्षेत्र में हुआ। शुरुआत में ये गुर्जर प्रतिहारों के सामन्त थे।
- इस वंश का प्रथम शासक नन्नुक था। यह सामन्त शासक था।
- इसके बाद क्रमशः वाक्पति और जेजा/जय शक्ति शासक हुए।
- जेजा के नाम पर ही चन्देल क्षेत्र का नाम जेजाक भुक्ति पड़ा।
- इस वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक यशोवर्मन था।
- धंग इस वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक हुआ। इसने अनेक विजय कर साम्राज्य विस्तार किया।
- इसने कालिंजर में एक सुदृढ़ किले का निर्माण कराया।
- इसने खजुराहो के स्थान पर कालिंजर को अपनी राजधानी बनायी और 'कालिंजराधिपति' की उपाधि धारण की।
- राजा धंग अपनी 100 पत्नियों के साथ प्रयाग आया और पत्नियों सहित जलसमाधि ले लिया।
- इसके बाद इसका पुत्र गंड शासक हुआ। इसने अपने पिता के राज्य को सुरक्षित रखा।
- इसके बाद विद्याधर शासक हुआ। यह इस वंश का सबसे महान शासक था।
- 1020-21 में महमूद गजनवी ने कालिंजर पर आक्रमण किया विद्याधर ने इससे युद्ध प्रारम्भ किया युद्ध भूमि में इसने सर्वक्षार की नीति अपनायी।

कलचुरि वंश

- कलचुरियों की अनेक शाखाओं में त्रिपुरी के कलचुरि प्रसिद्ध हुए।
- इस वंश का प्रथम शासक कोकल्ल देव था।
- इस वंश का पहला महान शासक गांगेयदेव था। इसने अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- इसने अपनी विजयों के उपलक्ष्य में विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- इसके शत्रु भी इसे 'जितविश्व' अर्थात् विश्व विजेता कहते थे।
- इसने लक्ष्मी प्रकार के सोने एवं चाँदी के सिक्के प्रचलित किए।

चौहान वंश

- चौहानों की अनेक शाखाओं में शाकम्भरी (राजस्थान) के चौहान महत्वपूर्ण हुए।
- इस वंश का प्रथम शासक तथा संस्थापक वसुदेव था।
- सिंहराज इस वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक था इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।
- अजय राज अपने नाम पर अजमेर नामक नगर बसाया और इसे अपनी राजधानी बनायी।
- विग्रहराज बीसलदेव चतुर्थ इस वंश का पहला महत्वपूर्ण शासक हुआ।
- इसका पंजाब के गजनवी शासकों से युद्ध हुआ और गजनवी शासक पराजित हुए।
- इसी उपलक्ष्य में इसने 'तुरुष्कजित' की उपाधि धारण की।
- इसने स्वयं संस्कृत भाषा में 'हरिकेलि नाटिका' नामक ग्रंथ लिखा।
- इसके दरबार में संस्कृत का प्रकाण्ड विद्वान सोमदेव रहता था। इसने संस्कृत भाषा में 'ललित विग्रह राज' की रचना की।
- इसने अजमेर में सरस्वती विद्यामंदिर नामक संस्कृत विद्यालय की स्थापना की।
- इसके बाद सोमेश्वर द्वितीय शासक बना इसने अपने पिता के साम्राज्य को सुरक्षित रखा।
- इसके बाद पृथ्वीराज चौहान (पृथ्वीराज तृतीय) शासक बना।
- इस वंश का यह सबसे महान शासक था।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

- दिल्ली के शासक अनंगपाल के पुत्र के अभाव में पृथ्वीराज चौहान को अपना उत्तराधिकारी चुना। इसी के समय दिल्ली चौहानों की राजधानी बनी।
- पृथ्वीराज चौहान का सबसे प्रबल शत्रु जयचन्द था।
- 1191 में तराईन के प्रथम युद्ध में इसने मुहम्द गोरी को पराजित किया लेकिन 1192 में तराईन के द्वितीय युद्ध में मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज चौहान को पराजित किया।
- पृथ्वीराज के दरबार में जयनायक भट्ट जैसे विद्वान रहते थे। जिसने 'पृथ्वी राज विजय' की रचना की।
- पृथ्वी राज का दराबारी कवि चन्द्रबरदायी था जिसने 'पृथ्वीराज रासों' की रचना की।

गाहड़वाल वंश

- गाहड़वाल प्रतिष्ठान (झूँसी)/कौशाम्बी के चन्द्रवंशियों की सन्तान थे।
- सर्वप्रथम 1085 ई. में चन्द्रदेव ने चन्देल शासक कीर्तवर्मनके सेनापति गोपाल को पराजित कर अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की।
- इसने वाराणसी को अपनी राजधानी बनायी।
- इसने कन्नौज को भी जीतकर अपने राज्य में शामिल किया।
- गोविन्द चन्द्र इस वंश का पहला महान शासक हुआ। इसने युवराज काल में ही तुर्कों के आक्रमण से वाराणसी रक्षा की।
- इसका महासान्धिविग्रहिक (विदेश मंत्री) लक्ष्मीधर प्रकाण्ड विद्वान था जिसने 'कृत्यकल्पतरु' नामक ग्रंथ की रचना की।
- इसके बाद विजय चन्द्र शासक बना इसने वाराणसी के स्थान पर कन्नौज को अपनी राजधानी बनायी।
- इसके बाद जयचन्द शासक बना यह इस वंश का सबसे महान शासक था।
- 1194 ई. में मुहम्मद गोरी ने इसके राज्य पर आक्रमण किया परिणामस्वरूप चन्दावर का युद्ध हुआ जिसमें जयचन्द पराजित हुआ और मारा गया।
- जयचन्द के दरबार में संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान श्री हर्ष रहता था जिसने 'नैषधचरित' तथा 'खंडन खंड खाद्य' की रचना की।

दक्षिण भारत

संगम युग

- सुदूर दक्षिण में कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदियों के दक्षिण के भू-भाग को प्राचीनकाल में त्रामिरदेश या तमिलकम् प्रदेश के नाम से जाना जाता था।
- इस क्षेत्र में प्राचीनकाल से ही चोल, पांड्य एवं चेर नामक तीन शक्तियाँ शासन करती थीं।
- **संगम**-संगम तमिल कवियों के मंडल या सम्मेलन को कहा जाता था। 8वीं शताब्दी के एक तमिल ग्रंथ इड़ैयनार अगप्पोरुल पर लिखित भाष्य के अनुसार कुल तीन संगम हुए।

संगम	स्थल	अध्यक्ष
प्रथम संगम	मदुरा	ऋषि अगात्तियार
द्वितीय संगम	कपाटपुरम् /अलैवे	तोलकाप्पियार
तृतीय संगम	मदुरा	नक्कीरार

संगम साहित्य

- संगम साहित्य अंतिम रूप से द्वितीय शताब्दी ई. से लेकर छठी शताब्दी ई. के बीच में रचे गये।
- संगम साहित्य तमिल भाषा में लिखे गये हैं तमिल भाषा दक्षिण भारत की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध भाषा है।

- प्रथम संगम का कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। द्वितीय संगम का एक मात्र ग्रंथ तोलकाप्पियम् उपलब्ध है। शेष सभी तृतीय संगम से सम्बन्धित हैं।

चोल वंश

- दक्षिण पूरब में चोलों का उदय हुआ।
- इनकी राजधानी उरैयूर थी।
- इस वंश का सबसे महान शासक करिकाल था। करिकाल का शाब्दिक अर्थ है जले हुए पैर वाला।
- रुद्रकन्नार जैसे विद्वान इसके दरबार में रहते थे।
- करिकाल ने सिंचाई हेतु अनेक तालाबों का निर्माण कराया।

पांड्य वंश

- दक्षिण में पांड्यों का उदय हुआ। इनकी राजधानी मदुरा थी।
- इस वंश का प्रथम ज्ञात शासक नेडियोन था जिसका अर्थ है लम्बे कद वाला। इसी ने सागर पूजा की परम्परा प्रारम्भ की थी।
- इस वंश का सबसे महान शासक नेडुज्जेलियान तलैयालंगानम् था।

चेर वंश

- चेरों का उदय दक्षिण-पश्चिम भारत में हुआ।
- इनकी दो राजधानियां थीं, वांजि एवं तोंडी।
- चेरों का प्रथम ऐतिहासिक शासक उदियंजीरल था।
- चेरों का राजचिन्ह धनुष था।

महत्वपूर्ण तथ्य

- संगम ग्रंथ मणिमेखलै में मदुरा नगर का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया गया है।
- तमिल विद्वान पेरुन्देवनार ने महाभारत का तमिल में अनुवाद किया।
- तीनों संगमों का आयोजन पांड्य राज्य में हुआ था। इसके संरक्षक भी पांड्य शासक थे।
- तगडूर के शासक आदिगैमन ने दक्षिण भारत में गन्ने की खेती प्रारम्भ कराई थी।

AAKAR IAS
SHAPE YOUR DREAM

चालुक्य वंश

- संगम युगीन चोल, पांड्य एवं चेर वंश के पतन के बाद दक्षिण भारत में नई शक्तियों का उदय हुआ, इनमें चालुक्य प्रमुख थे।
- इनके पूर्वज चलुक या चुल्क के नाम पर इस वंश का नाम चालुक्य वंश पड़ा।
- चालुक्यों की शक्ति का केन्द्र बादामी या वातापी था। बाद में इनकी शाखायें बनी।

बादामी का चालुक्य वंश

- इस वंश का संस्थापक जयसिंह था। इसने राष्ट्रकूटों एवं कदम्बों से संघर्ष कर सत्ता स्थापित किया।
- इसी ने बादामी पर अधिकार करके यहां एक दुर्ग का निर्माण कराया।

पुलकेशिन द्वितीय

- यह इस वंश का सबसे महान शासक हुआ।
- इसने अपने चाचा मंगलेश की हत्या करके गद्दी प्राप्त की।
- इसने उत्तर भारत के सबसे शक्तिशाली राजा हर्षवर्धन को नर्मदा नदी के तट पर पराजित कर परमेश्वर की उपाधि धारण की।
- रविकीर्ति द्वारा रचित ऐहोल अभिलेख से पुलकेशिन द्वितीय की हर्षवर्धन पर विजय की जानकारी मिलती है।
- इसी के शासन काल में 636 ई. में अरबों का भारत पर पहला आक्रमण थाना बंदरगाह पर हुआ था। इसने अरबों को पराजित कर भगा दिया।
- फारस के शासक खुशरो द्वितीय का दूतमंडल इसके दरबार में आया था।
- इसके शासनकाल में चीनी यात्री ह्वेनसांग बादामी आया था।

पल्लव वंश

- दक्षिण में सातवाहन साम्राज्य के पतन के बाद पल्लव वंश का उदय हुआ।
- पल्लव मूलतः दक्षिण भारत के ही निवासी थे। ये भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण थे।
- प्रारम्भ में ये सातवाहनों के सामंत थे बाद में अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर लिया।

शिव स्कंद वर्मा

- यह पल्लव वंश का प्रथम शासक था। इसने कांची को अपनी राजधानी बनाकर शासन किया।

विष्णुगोप

यह गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त का समकालीन था। प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख से पता चलता है कि समुद्रगुप्त ने इसे पराजित किया था।

सिंह विष्णु

- इसके समय से पल्लव वंश की महानता एवं गौरव के युग की शुरुआत हुई।
- इसने अवनिसिंह की उपाधि धारण की।
- इसी के दरबार में महाकवि भारवि रहते थे।

महेन्द्रवर्मन प्रथम

- इसका शासनकाल राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था।
- चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय से यह पराजित हुआ।
- इसने 'मत्तविलास प्रहसन' नामक ग्रंथ की रचना की।

नरसिंह वर्मन प्रथम 'मामल्ल'

- यह इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली एवं महान शासक था।
- इसके शासनकाल में चीनी यात्री ह्वेनसांग कांची आया था।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

शंकराचार्य 788 - 820 ई.

जीवन परिचय

- जन्म- 788 ई. में केरल में पूर्णा नदी के तट पर बसे कालड़ी ग्राम में।
- पिता - शिवगुरु, माता- सुभद्रा
- गुरु - गोविन्दपाद
- बद्रिकाश्रम में ही बादरायण के ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखा।
- महिष्मती (म. प्र.) में मंडन मिश्र एवं उनकी पत्नी भारती को शास्त्रार्थ में पराजित किया।
- तुंगभद्रा नदी के तट पर शृंगेरी मठ की स्थापना की।
- पुरी (उड़ीसा) में गोवर्धन मठ की स्थापना की।
- द्वारिका (गुजरात) में शारदा मठ की स्थापना की।
- बद्रिकाश्रम में इन्होंने ज्योतिर्मठ की स्थापना की।
- 32 वर्ष की आयु में केदारनाथ क्षेत्र में इनकी मृत्यु हुई।

शंकराचार्य द्वारा स्थापित मठ

1. शृंगेरी	-	शृंगेरी मठ
2. पुरी	-	गोवर्धन मठ
3. द्वारिका	-	शारदा मठ
4. बद्रिकाश्रम	-	ज्योतिर्मठ

AAKAR IAS
SHAPE YOUR DREAMS

चोल साम्राज्य

- नौवीं शताब्दी के मध्य में पुनः चोलों का उदय हुआ।

विजयालय 850 - 871 ई.

- विजयालय चोल साम्राज्य का संस्थापक था।
- पल्लवों की अधीनता में उरैयूर को केन्द्र बनाकर अपनी शक्ति का विस्तार प्रारम्भ किया।
- मुत्तरैयरों को पराजित कर उनसे तंजौर छीन लिया एवं तंजौर को अपनी राजधानी बनाई। इस उपलक्ष्य में इसने नरकेसरी की उपाधि धारण की।

आदित्य प्रथम 871-907 ई.

- यह पल्लव शासक अपराजितवर्मन के अधीन था।
- साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा के कारण अपराजितवर्मन के विरुद्ध इसने विद्रोह कर दिया। इसी विद्रोह में इसने अपराजितवर्मन की हत्या कर दी एवं पल्लव राज्य पर अधिकार कर लिया। इस उपलक्ष्य में इसने कोदंडराम की उपाधि धारण की।
- राष्ट्रकूट शासक कृष्ण द्वितीय ने अपनी पुत्री का विवाह आदित्य प्रथम के साथ किया।

परान्तक प्रथम 907-955 ई.

- गद्दी पर बैठते ही राष्ट्रकूट शासक कृष्ण द्वितीय के साथ युद्ध हुआ।
- इसके जीवन के अंतिम वर्षों में राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय ने इसके राज्य पर आक्रमण किया। परिणामस्वरूप तट्टोलम का युद्ध हुआ जिसमें परान्तक प्रथम पराजित हुआ।

राजराज प्रथम 985-1014 ई.

- यह इस वंश का पहला महान शासक हुआ।
- राजराज प्रथम ने लंका अभियान किया एवं यहां के शासक महेन्द्र पंचम को पराजित कर उत्तरी लंका पर अधिकार कर लिया।
- इसने उत्तरी लंका की राजधानी पोलोन्नरुवा को बनाई और इसका नया नाम जननाथ मंगलम् रखा।
- राजराज प्रथम के काल से ही चोल चालुक्य संघर्ष की शुरुआत हुई।
- इसने चालुक्य शासक सत्याश्रय को पराजित कर वेंगी पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया।
- राजराज प्रथम द्वारा मालद्वीव एवं कलिंग विजय का भी उल्लेख मिलता है।

राजेन्द्र प्रथम 1014-44 ई.

- यह इस वंश का सबसे महान शासक हुआ।
- इसने लंका अभियान किया और यहां के शासक महेन्द्र पंचम को पूर्णतः पराजित कर सम्पूर्ण लंका जीतकर चोल राज्य में मिला लिया और महेन्द्र पंचम को बन्दी बनाकर अपने कारागार में रखा।
- इसने दक्षिण-पूर्व एशिया स्थित कटाह राज्य (श्रीविजय) पर आक्रमण किया और यहां के शासक संग्राम विजय तुंगवर्मन को पराजित कर बन्दी बना लिया।
- दक्षिण-पूर्व एशिया विजय के उपलक्ष्य में इसने कडारकोंड की उपाधि धारण की।
- राजेन्द्र प्रथम अपने पुत्र विक्रम के नेतृत्व में बंगाल अभियान किया और यहां के शासक महीपाल को पराजित किया।
- बंगाल की खाड़ी को चोलों की झील कहा जाने लगा।
- राजेन्द्र प्रथम इस विजय को स्मारक विजय बनाने हेतु 'गंगैकोंडचोल' की उपाधि धारण की और गंगैकोंडचोलपुरम नामक नगर बसाया और इसे अपनी राजधानी बनाई।

राजाधिराज प्रथम-1044-1052 ई.

- चालुक्य शासक सोमेश्वर प्रथम को पराजित कर उसकी राजधानी कल्याणी में राज्याभिषेक कराया और इस उपलक्ष्य में विजय राजेन्द्र की उपाधि धारण की।
- चोल शासको में इसी ने अश्वमेघ यज्ञ किया था।

AAKAR IAS SHAPE YOUR DREAMS

कुलोतुंग प्रथम 1070-1122 ई.

- इसका लंका नरेश विजयबाहु के साथ लम्बा संघर्ष चला। अंततः दोनों में संधि हो गई और इसने लंका को चोल प्रभुत्व से मुक्त कर दिया।
- इसने अपने राज्य की समस्त भूमि की पैमाइश कराई एवं कर निर्धारण की लाभकारी प्रणाली प्रारम्भ की। इसने छोटे-छोटे अनेक करों को समाप्त कर 'शुगंदवर्त्त' (करों को हटाने वाला) की उपाधि धारण की।
- कैंटन (चीन) के बौद्ध विहार को इसने 6 लाख मुद्रा दान स्वरूप दिया।

कुलोतुंग द्वितीय 1135-1150 ई.

- यह कट्टर शैव था। इसने चिदंबरम् स्थित नटराज मंदिर के प्रांगण में स्थित भगवान विष्णु की मूर्ति को समुद्र में फेंकवा दिया था।

कुलोतुंग तृतीय 1179-1216 ई.

- यह इस वंश का अंतिम महान शासक हुआ। इसके शासनकाल में भीषण अकाल पड़ा।
- अकाल के समय में व्यापक राहत कार्यवाही की प्रजा में धन एवं अनाज के वितरण के साथ इसने बांधों एवं तालाबों का निर्माण कराया। अतः यह अपने लोक कल्याणकारी कार्यों के लिए जाना जाता है।

चोलकालीन साहित्य

- चोल काल में तमिल भाषा का अत्यधिक विकास हुआ। इस काल में तमिल भाषा में अनेक ग्रंथ रचे गये।

लेखक	-	रचनायें
जयगोंदार	-	कलिंगत्तुपर्णि
शैक्किलार	-	पेरियपुराणम्
ओतुकुत्तन	-	कुलोतुंग शोलनउला
कम्बन	-	रामावतारम् (तमिल रामायण)

चोलकालीन मंदिर

मंदिर	निर्माता	स्थान
1. विजयालय चोलीश्वर मंदिर	विजयालय	नर्तमालै
2. सुन्दरेश्वर मंदिर	आदित्य प्रथम	तिरुक्ट्टलै
3. नागेश्वर मंदिर	आदित्य प्रथम	कुम्बकोनम्
4. बाल सुब्रमण्यम् मंदिर	आदित्य प्रथम	पुदुककोटै
5. कोरंगनाथ मंदिर श्रीनिवासनल्लूर	परान्तक प्रथम	
6. बृहदीश्वर (राजराजेश्वर) मंदिर	राजराज प्रथम	तंजौर
7. बृहदीश्वर मंदिर	राजेन्द्र प्रथम	गंगैकोंडचोलपुरम
8. ऐरावतेश्वर मंदिर	राजराज द्वितीय	दारासुरम्
9. कम्पहरेश्वर मंदिर	कुलोतुंग तृतीय	त्रिभुवनम्